ग्रहशान्ति-पद्धति

'शिवदत्ती'-हिन्दीटीका-सहित

आचार्य पण्डित श्री शिवदत्त मिश्र शास्त्री

प्रकाशक

श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार

कचौड़ीगली, वाराणसी–१

'शिव' ग्रन्थमाला : ग्रन्थांक-९६

ग्रह शान्ति-पद्धतिः

'शिवदत्ती'-हिन्दीटीका-सहिता

लेखक-सम्पादक तथा टीकाकार
व्याकरणाचार्य-साहित्यवारिधि-तन्त्ररत्नाकर
आचार्य पण्डित श्रीशिवदत्तमिश्र शास्त्री

प्रकाशक
श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार
कचौड़ीगली, वाराणसी-२२१००१

प्रकाशक

श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार

कचौड़ी गली, वाराणसी-१

फोन नं० : २३९२४७१

: २३९२५४३

द्वितीय संस्करण : २००३

संवत् : २०५७

मूल्य ८०) रुपये

सजिल्द ९०) रुपये

मुद्रक

भारत प्रेस

कचौड़ी गली, वाराणसी-१

शुभ-कामना

आचार्य-प्रवर पण्डित श्रीशिवदत्त मिश्र जी के द्वारा प्रणीत एवं हिन्दी व्याख्या विभूषित ग्रहशान्ति पद्धति पुस्तक का आद्योपान्त हमने अवलोकन किया। इस पुस्तक में यज्ञ-यागादि के अंगभूत समस्त पूजन विधिका उपस्थापन सरल सुगम पद्धति से उपलब्ध होता है। इसके द्वारा भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार में अभिवृद्धि होना सुनिश्चित है।

इसमें मूल के साथ सरल हिन्दी भाषा में तत्तत्कर्मों के क्रम का सुन्दर ढंग से उल्लेख किया गया है, जो अन्य पुस्तकों में अनुपलब्ध है। इस पुस्तक की सहायता से साधारण कर्मकाण्डी भी उत्तम ढंग से अपने कृत्य में समर्थ होगा। यह बात भी सुनिश्चित है। **आचार्य-पण्डित शिवदत्त मिश्र जी** शताधिक ग्रन्थों के लेखक-सम्पादक तथा अनुवादक एवं विभिन्न उपासना-पद्धति के मर्मज्ञ और कर्मठ विद्वान् हैं। आपका यह श्रम सर्वथा प्रशंसनीय है।

हम इनके अथक प्रयत्न की सफलता के लिए भगवान् विश्वनाथ एवं माता अन्नपूर्णा से कामना करते हैं। और आस्तिकजनों से इस पुस्तक को अपनाने के लिए अनुरोध करते हैं।

धर्मसंघ, दुर्गाकुण्ड
श्रावण शु० नागपञ्चमी, बुधवार
संवत् : २०४१ विक्रम
(१ अगस्त १९८४)

शङ्करानन्द सरस्वती

(श्रीकाशी-सुमेरु-पीठाधीश्वर
जगद्गुरु शङ्कराचार्य)



लेखक

आचार्य पण्डित श्रीशिवदत्त मिश्र शास्त्री

प्राक्कथन

कर्मकाण्डियों के लिए ग्रहशान्ति-पद्धति का प्रमुख स्थान है। सभी शान्तिकर्मों एवं यज्ञ-यागादि में ग्रहों की शान्ति अनिवार्य रूप से शास्त्रों में विहित है और आवश्यक भी है। कहा भी गया है—

ग्रहा राज्यं प्रयच्छन्ति ग्रहा राज्यं हरन्ति च।
ग्रहे व्याप्तमिदं सर्वं त्रैलोक्यं सचराऽचरम् ॥

अर्थात् सुन्दर ग्रह राजाओं के लिए राज्य प्रदान करने में सहायक होते हैं। और दुष्ट ग्रह राजाओं के राज्य को नष्ट भी कर देते हैं। इन ग्रहों में ही जड़-चेतनात्मक समस्त जगत् व्याप्त है। और भी,

ग्रहा गावो नरेन्द्राश्च ब्राह्मणाश्च विशेषतः।
पूजिताः पूजयन्त्येते निर्दहन्त्यपमानिताः ॥

अर्थात् ग्रह, गौ, राजा तथा विशेष कर ब्राह्मणगण त्रिलोक में सम्मानित होने पर उन्नति प्रदान करते हैं। और अपमानित होने पर ये नष्ट भी कर देते हैं।

कहने का तात्पर्य यह है कि, मनुष्यों को, ग्रहों को अनुकूलता के लिये उनको स-विधि शान्ति परम आवश्यक है। इसके लिए प्रस्तुत ग्रहशान्ति-पद्धति सर्वथा उपयोगी एवं महत्त्वपूर्ण है।

यद्यपि ग्रहशान्ति के और भी संस्करण प्रकाशित हुए हैं, फिर भी प्रस्तुत पद्धति अपनी शैली में सर्वथा अभिनव, सरल, सुबोध एवं सर्वसाधारण विद्वानों के लिए भी बोधगम्य है।

इसमें—हिन्दी टीका के साथ ग्रहशान्ति अनुक्रम, स्वस्तिवाचन, गणेशाम्बिका पूजन, कलश स्थापन-पूजन, पुण्याहवाचन, अविघ्न पूजन, मण्डप स्थापन-प्रतिष्ठा, षोडश मातृका-पूजन, वसोर्धारा पूजन, आयुष्य मन्त्राजप एवं नान्दी-श्राद्धादि अनेक विषय दिये गये हैं। और सर्वतोभद्र एवं लिङ्गतो भद्र के सभी देवताओं का यथावत् स्थापन एवं पूजन भी निहित है।

हिन्दी टीका के साथ सरल एवं सुगम शैली में पद्धति का निर्माण तथा मन्त्रानुक्रमणिका और श्लोकानुक्रमणिका आदि का उल्लेख प्रस्तुत पुस्तक की प्रमुख विशेषता है, जो अब तक की प्रकाशित पद्धतियों में प्रायः अनुपलब्ध हैं। प्रस्तुत पद्धति के द्वारा सर्वसाधारण विद्वान् भी समस्त वैदिक संस्कार, शान्तिकर्म एवं यज्ञ-यागादि सभी कार्य भली भाँति करा सकते हैं। और इसको पूर्णरूप से कण्ठस्थ कर लेने पर प्रत्येक ब्राह्मण सभी यज्ञ-यागादि में निःसंकोच होकर वैदिक मन्त्रों को निर्भीकता पूर्वक बोल सकते हैं, इसमें संशय नहीं।

काशी पीठाधीश्वर अनन्त-श्रीविभूषित पूज्यपाद जगद्गुरु शङ्कराचार्य— **स्वामी श्रीशङ्करानन्द सरस्वती जी महाराज** का मैं विशेष आभार मानता हूँ, जिन्होंने अपने अत्यन्त व्यस्त कार्य-क्रम में भी मेरे ऊपर असीम अनुकम्पा कर, प्रस्तुत पुस्तक में अपनी शुभ-कामना प्रदान कर ग्रन्थ को गौरवान्वित किया है। चि० **श्रीपुनीत कुमार शर्मा** को मैं हार्दिक शुभाशीर्वाद प्रदान करता हूँ, जिन्होंने मन्त्र एवं श्लोकों की अनुक्रमणिका बनाने एवं प्रूफ-संशोधन आदि कार्य में विशेष परिश्रम किया है।

—**शिवदत्तमिश्र शास्त्री**
सी. के. ५/२६ ए.
भिखारी दास लेन, वाराणसी-१

श्रावणी पूर्णिमा
११ अगस्त १९८४

विषयानुक्रमणिका

* * *

ग्रहशान्ति-पूजन-हवन-सामग्री

रोरी, अबीर, बुक्का, नारा
केशर, कपूर, रूई, सिन्दूर
हल्दी की बुकनी, छुट्टा फूल
माला, तुलसी, दूर्वा, विल्व पत्र
पंच पल्लव, धूप, दीप, पंचरत्न
यज्ञोपवीत ५ जोड़ी
इत्र, पंचमेवा, गंगा जल
पीली सरसों, पेड़ा ऽ।।, बतासा ऽ।।

ऋतुफल, पान, सोपारी ३०
चावल ऽ२।।, पत्तल ५, पुरवा ५
कसोरा १०, दीया २०
काठ की चौकी १, पीढ़ा २
चौकी पर बिछाने का सफेद कपड़ा
कलश २, वेदी के लिए मिट्टी या आलू
प्रधान पर चढ़ाने का वस्त्र

सर्वौषधि, सप्तमृत्तिका, आचार्य वरण—
धोती, दुपट्टा, गमछा
उड़द की दाल ऽ।।, तिल ऽ।, यव ऽ।
दूध ऽ।, दही ऽ।, घी ऽ।।
शहद, चीनी ऽ।
नवग्रह की लकड़ी, पोहरी
आम की लकड़ी, नारियल २
कुशा, लाल रंग, पीला रंग
हरा रंग, काला रंग, गोबर, गोमूत्र

* * *

ग्र० प० १

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

आचार्य-पण्डित-श्रीशिवदत्तमिश्र शास्त्रि-विरचिता

ग्रहशान्ति-पद्धतिः

'शिवदत्ती'-हिन्दीटीका-सहिता

मङ्गलाचरणम्—

पितरं सन्तशरणं जयन्तीं मातरं तथा । सर्वमङ्गलदं नित्यं श्रीगणेशं नमाम्यहम् ॥१॥
ग्रन्थसारं समुद्धृत्य विदुषां बहुशो मुदे । श्रीशिवदत्तमिश्रेण ग्रहशान्तिर्वितन्यते ॥२॥

मैं अपने पिता सन्तशरण, माता जयन्ती तथा नित्य सभी मंगल प्रदायक श्रीगणेशजी को प्रणाम करता हूँ ॥१॥ मैं (शिवदत्त मिश्र) सभी कर्मकाण्ड ग्रन्थों के सार (तत्त्व) को लेकर पौरोहित्य विद्वानों के हितार्थ 'ग्रहशान्ति-पद्धति' नामक ग्रन्थ की रचना करता हूँ ॥ २ ॥

अ० ऋ० १

अथाऽनुक्रमः

सुस्नातः प्राङ्मुखो भूत्वा यजमानः कृताह्निकः ।
आहूय ब्राह्मणान् कुर्यात् प्रतिज्ञां विधिवत्तदा ॥१॥
गणेशपूजनं कृत्वा वरुणं च ततो यजेत् ।
पुण्याहवाचनं कृत्वाऽभिषेकं कारयेत्ततः ॥२॥

ग्रहशान्ति का क्रम—यजमान भली भाँति स्नान एवं नित्य क्रिया से निवृत्त हो, ब्राह्मणों को बुलाकर 'मैं अमुक कार्य निमित्त ग्रहशान्ति करना चाहता हूँ।' इस प्रकार ब्राह्मणों से आज्ञा प्राप्त करे ॥१॥ सर्व-प्रथम गणेश एवं अम्बिका का पूजन कर, कलश-स्थापन और पुण्याहवाचन कर ब्राह्मणों-द्वारा अभिषेक कराये ॥ २ ॥

गौर्यादि-पूजनं चैव घृतमातृक-पूजनम् ।
आयुष्यमन्त्रपाठं तु नान्दीश्राद्धमतः परम् ॥३॥
सर्वेषां वरणं कृत्वा सर्वतोभद्र-पूजनम् ।
ततः प्रधानदेवस्य पूजनं च समारभेत् ॥४॥
स्थाप्याऽग्निं सुग्रहाणां च स्थापनं कुशकण्डिकाम् ।
कृत्वा ततो यजेदाज्याऽऽहुतिं भक्तिपुरस्सरः ॥५॥

पुनः गौरी-आदि षोडश मातृका तथा श्री आदि सप्तघृत मातृका, आयुष्य मन्त्र पाठ के बाद नान्दी श्राद्ध सम्पन्न करे ॥ ३ ॥ आचार्य, ब्रह्मा, ऋत्विक् आदि ब्राह्मणों का वरण कर सर्वतोभद्र मण्डलस्थ देवताओं का पूजन एवं प्रधान देव का पूजन करे ॥ ४ ॥ पञ्चभू-संस्कार पूर्वक वेदी अथवा कुण्ड में अग्नि स्थापित कर ग्रहों का स्थापन

सूर्य्यादीनां ग्रहाणां च होमः कार्यस्तिलादिभिः ।
ततः प्रधानदेवस्य होमः कार्यो यथाविधि ॥६॥
सर्वतोभद्रदेवानां हवनं वै समाचरेत् ।
पूजनं स्विष्टकृच्चैव घृतेनैव नवाहुतिः ॥७॥
दिक्पालेभ्यो बलिं दीपं सूर्यादीनामतः परम् ।
प्रधानस्य बलिं दद्याद् दद्यात् क्षेत्राधिपाय च ॥८॥

तथा विधि-विधान पूर्वक कुशकण्डिका सम्पन्न कर श्रद्धा-भक्ति पूर्वक घी की आहुति दे ॥ ५ ॥

सूर्यादि नवग्रह, अधिदेवता, प्रत्यधिदेवता, दशदिगपाल, पंचलोक पाल आदि का घृत-मिश्रित शाकल (तिल, जव, चावल, चीनी) द्वारा हवन करे। तथा प्रधान देवता का होम करे ॥६॥ तदनन्तर सर्वतो भद्रमण्डल स्थित स्थापित सभी

पूर्णाहुतिमथो हुत्वा वसोर्द्धारां समाचरेत्।
भस्मना त्र्यायुषं कृत्वा संस्रव-प्राशनादिकम् ॥९॥
श्रेयो दानं ब्राह्मणेभ्यो दद्यात् स्वर्णसुदक्षिणाम्।
कारयेदभिषेकादीन् विसर्जनमतः परम् ॥१०॥

देवताओं का हवन करे। एवं अग्नि का पूजन, और बचे हुए शाकल का एक साथ ही स्विष्टकृत् हवन कर केवल घृत की नवाहुति प्रदान करे॥ ७॥ उसके बाद दिगपालों के निमित्त दीप सहित बलिदान तथा सूर्यादिग्रहों के लिए बलिदान देकर प्रधान देवता के निमित्त बलि प्रदान के पश्चात् क्षेत्रपाल के लिए बलि देवे॥ ८॥ तत्पश्चात् पूर्णाहुति हवन कर वसोर्द्धारा हवन करे। स्रुवा द्वारा वेदी से भस्म लेकर त्र्यायुष करने के अनन्तर संस्रव प्राशनादि करे॥ ९॥ पुनः ब्राह्मणों से आशीर्वाद ग्रहण कर, उन्हें सुवर्ण दक्षिणा देने के बाद अभिषेकादि करावे। और स्थापित देवों का अक्षत छिड़क कर विसर्जन करे। इतने कार्य ग्रहशान्ति में होते हैं॥ १०॥

प्रयोगः

शुभग्रहानुकूलसमये शुभे दिने शुभे लग्ने च कृतनित्यक्रियो यजमानः शुभासने प्राङ्मुख उपविश्य, स्वदक्षिणतः[1] पत्नीं चोपवेश्य । ॐ केशवाय नमः, ॐ नारायणाय नमः, ॐ माधवाय नमः । इति त्रिराचम्य ।

ॐ पवित्रे स्त्थो व्वैष्णव्यौ सवितुर्व्वः प्प्रसव ऽउत्पुनाम्म्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्य्यस्य रश्मिभिः । तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ॥

यजमान को चाहिए कि वह शुभ ग्रह एवं शुभ दिन तथा शुभ लग्न में सन्ध्या-वन्दनादि कार्य करने के बाद पूर्व मुख कुश के आसन पर बैठकर 'ॐ केशवाय नमः, ॐ नारायणाय नमः, ॐ माधवाय नमः' कहकर तीन बार आचमन करे ।

१. संस्कार्यः पुरुषो वाऽपि स्त्री वा दक्षिणगतः सदा । संस्कारकर्ता सर्वत्र तिष्ठेदुत्तरतः सदा ॥–इति प्रयोगपारिजाते ।

इति मन्त्रेण कुशादिनिर्मित–पवित्रधारणं कृत्वा, ततः प्राणायामत्रयं कुर्यात् ।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।

यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु ३ । इत्यात्मानं पूजन-सामग्रीं च सम्प्रोक्षयेत् ।

ततः तण्डुल-पूरित-ताम्रपात्रे मृण्मये वा कुङ्कुमेनाऽष्टदलं पद्मं कृत्वा, तदुपरि गोमयमयीं गौरीं, फलमयं गणेशं च संस्थापयेत् ।

पुनः 'ॐ पवित्रे स्थो' से 'तच्छकेयम्' पर्यन्त मन्त्र-द्वारा कुशनिर्मित पवित्री धारण कर तीन बार प्राणायाम करे। और 'ॐ अपवित्रः पवित्रो वा' से 'ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु' पर्यन्त पढ़कर अपने ऊपर एवं पूजन-सामग्री पर जल छिड़के।

उसके बाद चावल से भरे हुए, मिट्टी अथवा ताँबे के पात्र में, रोरी से अष्टदल कमल बनाकर, उसके ऊपर गोबर की गौरी तथा सोपारी पर गणेश की स्थापना करे ।

स्वस्तिवाचनम्

यजमानो दक्षिणहस्ते अक्षत-पुष्पाणि गृहीत्वा, 'आ नो भद्रा०' इत्यादि-स्वस्तिवाचन-मन्त्रान् पठेत् । तद्यथा–

ॐ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो ऽअपरीतास ऽउद्भिदः । देवा नो यथा सदमिद्वृधे ऽअसन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे ॥१॥ देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानाᳬं रातिरभि नो निवर्त्तताम् । देवानाᳬं सख्य-

---

स्वस्तिवाचन—यजमान दाहिने हाथमें अक्षत और फूल लेकर 'ॐ आ नो भद्राः' से 'सुशान्तिर्भवतु' पर्यन्त मन्त्र तथा 'श्रीमन्महागणाधिपतये नमः' से 'ब्रह्मेशान-जनार्दनाः' तक उच्चारण कर गणेश तथा गौरी पर अक्षत, पुष्प छोड़ दे ।

मुपसेदिमा व्वयं देवा न ऽआयुः प्रतिरन्न्तु जीवसे ॥ २॥
तान्न्पूर्व्वया निविदा हूमहे व्वयं भगम्मित्रमदितिन्न्दक्षमु-
स्त्रिधम् । अर्य्यमणं वरुणꣳ सोममश्विना सरस्वती नः
सुभगा मयस्करत् ॥३॥ तन्नो व्वातो मयोभु व्वातु भेषजं
तन्न्माता पृथिवी तत्त्पिता द्यौः । तद्ग्रावाणः सोमसुतो
मयोभुवस्तदश्विना शृणुतं धिष्ण्या युवम् ॥४॥ तमीशानं
जगतस्तस्त्थुषस्प्पतिं धियं जिन्न्वमवसे हूमहे व्वयम् । पूषा

ग्रह० प० १०

नो यथा व्वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥५॥
स्वस्ति न ऽइन्द्रो व्वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा व्विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो ऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पति-
र्दधातु ॥६॥ पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभंय्यावानो
व्विदथेषु जग्मयः। अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो व्विश्वे नो
देवा ऽअवसा गमन्निह ॥७॥ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा
भद्रं पश्येमाक्षभिर्य्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳ सस्तनू-

स्व० वा० १०

भिर्व्यशेमहि देवहितं ऽयदायुः ॥ ८ ॥ शतमिन्नु शरदो
ऽअन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम् । पुत्रासो यत्र
पितरो भवन्ति मा नो मद्ध्या रीरिषतायुर्गन्तोः ॥९॥ अदिति-
द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्म्माता स पिता स पुत्रः । व्विश्वे देवा
ऽअदितिः पञ्चजना ऽअदितिर्ज्जातमदितिर्ज्जनित्त्वम् ॥१०॥
द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः
शान्तिरोषधयः शान्तिः । व्वनस्प्पतयः शान्तिर्व्विश्वे देवाः

शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥११॥ यतो यतः समीहसे ततो नो ऽभयं कुरु । शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ॥१२॥ सुशान्तिर्भवतु ।

श्रीमन्महागणाधिपतये नमः । लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः । उमामहेश्वराभ्यां नमः । वाणी-हिरण्यगर्भाभ्यां नमः । शचीपुरन्दराभ्यां नमः । मातापितृभ्यां नमः । इष्टदेवताभ्यो नमः । कुलदेवताभ्यो नमः । ग्रामदेवताभ्यो नमः । वास्तुदेवताभ्यो नमः । स्थानदेवताभ्यो नमः । सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः । सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः ।

विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम् ।
वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम् ॥१॥
वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ ! ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव ! सर्वकार्येषु सर्वदा ॥२॥
सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः ।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥३॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः ।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥४॥

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ।
सङ्ग्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥५॥
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥६॥
अभीप्सितार्थ-सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुराऽसुरैः ।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ॥७॥
सर्वमङ्गल-माङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि! नमोऽस्तु ते ॥८॥

सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम् ।
येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनं हरिः ॥ ९ ॥
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव ।
विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि ॥ १० ॥
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः ।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ॥ ११ ॥
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥ १२ ॥

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते ।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥१३॥
स्मृतेः सकल-कल्याणं भाजनं यत्र जायते ।
पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम् ॥१४॥
सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः ।
देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशान-जनार्दनाः ॥१५॥

इति स्वस्तिवाचनम् ।

सङ्कल्पः—यजमानः जला-ऽक्षत-द्रव्यं चादाय सङ्कल्पं कुर्यात् ।

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त-
मानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीये परार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराहकल्पे
वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके
जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे (अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे
आनन्दवने महाश्मशाने गौरीमुखे त्रिकण्टकविराजिते भागीरथ्याः पश्चिमे
भागे) विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनामसंवत्सरे श्रीसूर्ये अमुकायने
अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रद-मासोत्तमे मासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुक-
तिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते
चन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु

संकल्प—यजमान दाहिने हाथ में जल, अक्षत तथा द्रव्य लेकर 'ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः' से 'ग्रहशान्तिमहं करिष्ये'

यथायथा-राशिस्थान-स्थितेषु सत्सु एवं ग्रह-गुणगण-विशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकशर्मा (वर्मा, गुप्तः, दासः) ऽहं मम आत्मनः श्रुति-स्मृति-पुराणोक्त-फलप्राप्त्यर्थं कायिक-वाचिक-मानसिक-सांसर्गिक-चतुर्विधपातक-दुरितक्षयार्थं,धर्मा-ऽर्थ-काम-मोक्ष-चतुर्विधपुरुषार्थ-प्राप्त्यर्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं च ग्रहशान्तिमहं (अमुकशान्तिं वा) करिष्ये।

पुनर्जलं गृहीत्वा, तदङ्गत्वेन स्वस्ति-पुण्याहवाचनं मातृकापूजनं वसोर्द्धारापूजनम् आयुष्यमन्त्रजपं साङ्कल्पिकेन विधिना नान्दीश्राद्धमा-चार्यादिवरणानि च करिष्ये। पुनर्जलं गृहीत्वा, तत्राऽऽदौ निर्विघ्नता-सिद्ध्यर्थं गणेशाऽम्बिकयोः पूजनं करिष्ये। इति सङ्कल्पं पठित्वा भूमौ जलं त्यजेत्।

पर्यन्त संकल्प-वाक्य पढ़कर भूमि पर जल छोड़ दे। पुनः हाथमें जल लेकर 'तदङ्गत्वेन' से 'आचार्यादि-वरणानि च करिष्ये' तक संकल्प पढ़कर भूमि पर जल छोड़ दे। फिर हाथ में जल लेकर 'तत्रादौ०' से 'पूजनं करिष्ये' पर्यन्त संकल्प-वाक्य पढ़ कर पृथ्वी पर जल छोड़े।

गणेशाऽम्बिकापूजनम्

हस्तेऽक्षतान् गृहीत्वा, गणपतिमावाहयेत् [1]षोडशोपचारैः पूजयेच्च। तद्यथा–

एकदन्तं शूर्पकर्णं गजवक्त्रं चतुर्भुजम् ।
पाशाङ्कुशधरं देवं ध्यायेत् सिद्धिविनायकम् ॥१॥
ध्यायेद् गजाननं देवं तप्तकाञ्चनसन्निभम् ।
चतुर्भुजं महाकायं सर्वाभरणभूषितम् ॥२॥

गणेशाम्बिका-पूजन-आवाहन—दाहिने हाथ में अक्षत लेकर 'एकदन्तं शूर्पकर्णं' से 'पूजां यागं च रक्ष मे' पर्यन्त श्लोक तथा 'ॐ गणानां त्वा०' से 'स्थापयामि' पर्यन्त पढ़कर गणेशजी पर अक्षत और पुष्प छोड़े ।

---

१. षोडशोपचारास्तु कर्मप्रदीपे – 'आवाहना-ऽऽसने पाद्यमर्घ्यमाचमनीयकम् । स्नानं वस्त्रोपवीतं च गन्धमाल्यान्यनुक्रमात् ॥१॥
धूपं दीपं च नैवेद्यं ताम्बूलं च प्रदक्षिणा । पुष्पाञ्जलिरिति प्रोक्ता उपचारास्तु षोडश ॥२॥
"फलेन सफलावाप्तिः साङ्गता दक्षिणार्पणात् ।" इति ।

दन्ताक्षमालापरशुं पूर्णमोदकधारिणम् ।
मोदकासक्तशुण्डाग्रमेकदन्तं विनायकम् ॥३॥
(वा) हे हेरम्ब त्वमेह्ये हि ह्याम्बिकात्र्यम्बकात्मज ! ।
सिद्धिबुद्धिपते त्र्यक्ष लक्षलाभपितुः पितः ॥१॥
नागास्यं नागहारं त्वां गणराजं चतुर्भुजम् ।
भूषितं स्वायुधैर्दिव्यैः पाशाङ्कुशपरश्वधैः ॥२॥
आवाहयामि पूजार्थं रक्षार्थं च मम क्रतोः ।
इहाऽऽगत्य गृहाण त्वं पूजां यागं च रक्ष मे ॥३॥

ॐ गणानां त्वा गणपतिᳪं हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिᳪं हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिᳪं हवामहे वसो मम । आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धि-बुद्धि-सहिताय गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि स्थापयामि ।

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम् ।
लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ अम्बे ऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन ।

ससंस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः, गौरीमावाहयामि स्थापयामि ।

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञᳯ समिमं दधातु । विश्वेदेवास ऽइह मादयन्तामो३ प्रतिष्ठ ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च ।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन ॥

उसी प्रकार 'हेमाद्रितनयां' से 'वरदे भवेनाम' तक उच्चारण कर गणेश-गौरी पर अक्षत, पुष्प छोड़ दे ।

गणेशाऽम्बिके सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेताम्

विचित्ररत्नखचितं दिव्यास्तरणसंयुतम् ।
स्वर्णसिंहासनं चारु गृहीष्व सुरपूजित ॥१॥
ॐ पुरुष ऽएवेदꣳ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम् ।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आसनं समर्पयामि ।

ॐ सर्वतीर्थसमुद्भूतं पाद्यं गन्धादिभिर्युतम् ।

आसन—'विचित्र-रत्न-खचितं' से 'आसनं समर्पयामि' पर्यन्त पढ़कर आसन प्रदान करे या अक्षत छोड़े।

विघ्नराज गृहाणेदं भगवन् भक्तवत्सल ! ॥२॥

ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः । पादोऽस्य

विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पाद्यं समर्पयामि ।

ॐ गणाध्यक्ष नमस्तेऽस्तु गृहाण करुणाकर ।

अर्घ्यं च फलसंयुक्तं गन्धमाल्याक्षतैर्युतम् ॥३॥

ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः ।

पाद्य—'सर्वतीर्थ-समुद्भूतं' से 'पाद्यं समर्पयामि' तक का पाठ कर गणेशाम्बिका पर एक आचमनी जल छोड़ पाद्य (जल) प्रदान करे ।

ततो विष्ष्वङ् व्यक्क्रामत्साशनानशुने ऽअभि ॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अर्घ्यं समर्पयामि ।

विनायक नमस्तुभ्यं त्रिदशैरभिवन्दित ।

गङ्गोदकेन देवेश कुरुष्वाचमनं प्रभो ॥

ॐ ततो विराडजायत विराजो ऽअधि पूरुषः । स जातो ऽअत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आचमनं समर्पयामि ।

अर्घ्य—'गणाध्यक्ष नमस्तेऽस्तु' से 'अर्घ्यं समर्पयामि' तक पढ़कर गणेश-गौरी को अर्घ्य दे ।

आचमन—'विनायक नमस्तुभ्यं' से 'आचमनं समर्पयामि' तक कहकर एक आचमनी जल छोड़ दे ।

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम् ।
तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम् । पशूँ-स्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये ॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, स्नानं समर्पयामि (अथवा) एकतन्त्रेण ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, एतानि पाद्या-ऽर्घ्या-ऽऽचमनीय-स्नानीय-पुनरा-चमनीयानि समर्पयामि ।

स्नान 'मन्दाकिन्यास्तु' से लेकर 'स्नानं समर्पयामि' पर्यन्त कहकर गणेशाम्बिका को शुद्ध जल से स्नान करावे । अथवा 'गणेशाम्बिकाभ्यां नमः' से 'आचमनीयानि समर्पयामि' तक कहकर एकतन्त्र से पाँच आचमनी जल छोड़ दे ।

ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा सो देशोऽभवत्सरित् ॥

पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु ।
शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मिलित-पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि ।

(अथवा) पय-आदि पृथक्-पृथक् स्नानम्—

कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम् ।

मिलित पंचामृत स्नान—'ॐ पञ्च नद्यः' से 'मिलित- श्चामृत-स्नानं समर्पयामि' तक पढ़कर गौरी-गणपति को पंचामृत से स्नान करावे । अथवा अलग-अलग दूध आदि से स्नान करावे । वह इस प्रकार है—

पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम् ॥

ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः । पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पयः स्नानं समर्पयामि ।

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम् ।
दध्यानीतं मया देव ! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

पयस्नान—'कामधेनुसमुद्भूतं' से 'पयःस्नानं समर्पयामि' पर्यन्त मन्त्र-श्लोक पढ़कर गौरी-गणेश को दूध से स्नान करावे ।

ॐ दधिक्राव्णो ऽअकारिषं जिष्णोरश्वस्य व्वाजिनः ।
सुरभि नो मुखा करत्प्र ण ऽआयूᳬषि तारिषत् ॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दधिस्नानं समर्पयामि ।

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम् ।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्म्वस्य धाम ।
अनुष्ष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम् ॥

दधिस्नान— पयसस्तु समुद्भूतं से 'दधिस्नानं समर्पयामि' तक कहकर दही से स्नान करावे ।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, घृतस्नानं समर्पयामि ।

पुष्परेणुसमद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु ।
तेजःपुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ मधु व्वाता ऽऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः । माद्ध्वीर्न्नः सन्त्वोषधीः ॥१॥ मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्त्पार्त्थिवᳬरजः । मधु द्यौरस्तु नः पिता ॥२॥ मधुमान्नो व्वनस्प्पतिर्म्मधुमाँ ऽअस्तु सूर्य्यः । माद्ध्वीर्ग्गावो भवन्तु नः ॥३॥

घृत-स्नान—'नवनीत-समुत्पन्नं' से 'घृतस्नानं समर्पयामि' पर्यन्त उच्चारण कर गौरी-गणपति को घी से स्नान कराये ।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मधुस्नानं समर्पयामि ।

इक्षुरससमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम् ।
मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ अपाᳬं रसमुद्वयसᳬं सूर्ये सन्तᳬं समाहितम् । अपाᳬं रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्म्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, शर्करास्नानं समर्पयामि ।

मधुस्नान—'पुष्परेणुसमुद्भूतं' से 'मधुस्नानं समर्पयामि' पर्यन्त पढ़कर गौरी-गणेश को मधु से स्नान करावे ।
शर्करा (चीनी) स्नान—'इक्षुरससमुद्भूतं' से 'शर्करास्नानं समर्पयामि' तक कहकर गौरी-गणेश को चीनी से नहलावे ।

अ॰ ३०
प॰
३२

ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऽऊर्जे दधातन । महे रणाय चक्षसे ॥ (अथवा) शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त ऽआश्विनाः श्येतः श्येताक्षोरुणास्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा ऽअवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः ॥

गङ्गा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती ।
नर्मदा सिन्धु कावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

प॰
३२

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि । ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, स्नानान्ते आचमनं समर्पयामि ॥

ऋ० ५० ३२ — पू० — ॐ युवा सुवासाः परिवीत ऽआगात्स ऽउ श्रेयान्भवति जायमानः । तं धीरासः कवय ऽउन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः ॥

शीत-वातोष्ण-सन्त्राणं लज्जाया रक्षणं परम् ।
देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥ ३३

शुद्धोदक (जल) स्नान—'ॐ आपो हिष्ठा' से 'शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि' तक उच्चारण कर गौरी-गणेश को शुद्ध जल से स्नान कराकर 'गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, स्नानान्ते आचमनं समर्पयामि' तक कहकर एक आचमनी जल चढ़ावे ।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, वस्त्रं समर्पयामि । ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आचमनं समर्पयामि ।

**ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म्म वरूथमासदत्स्वः ।
वासो अग्ने विश्वरूपꣳ संव्ययस्व विभावसो ॥**

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि । ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आचमनं समर्पयामि (अथवा) ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, वस्त्रोपवस्त्रार्थे रक्तसूत्रं समर्पयामि । अलङ्करणार्थे अक्षतान् समर्पयामि ।

वस्त्र—'ॐ युवा सुवासाः' से लेकर 'वस्त्रं समर्पयामि' पर्यन्त पढ़कर गौरी-गणपतिको वस्त्र चढ़ावे । और 'आचमनं समर्पयामि' तक कहकर एक आचमनी जल चढ़ावे । अथवा वस्त्रोपवस्त्र के स्थान में 'रक्तसूत्रं समर्पयामि' कहकर नारा चढ़ावे । एवं 'अलङ्करणार्थेऽक्षतान् समर्पयामि' पर्यन्त पढ़कर अक्षत छोड़ दे ।

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥
नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम् ।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ! ॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि । ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आचमनं समर्पयामि ।

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् ।

यज्ञोपवीत (जनेऊ)—'ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं' से 'यज्ञोपवीतं समर्पयामि' पर्यन्त कहकर गणेशजी को यज्ञोपवीत चढ़ावे । और 'आचमनं समर्पयामि' पढ़कर एक आचमनी जल समर्पित करे ।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ त्वां गन्धर्वा ऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः ।

त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत ॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, गन्धं सर्पयामि ।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः ।

मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ! ॥

गन्ध (चन्दन)—'श्रीखण्डं चन्दनं' से 'गन्धं समर्पयामि' तक उच्चारण कर गौरी-गणेश को गन्ध (चन्दन) लगावे।

अक्षत—'अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ' से 'अक्षतान् समर्पयामि' तक पढ़कर अक्षत चढ़ावे।

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया ऽअधूषत । अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजा न्विन्द्र ते हरी ॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अक्षतान् समर्पयामि ।

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो ! ।
मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ ओषधीः प्रतिमोदद्ध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः । अश्वा ऽइव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्ण्वः ॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पुष्पमालां समर्पयामि ।

दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान् ।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक ! ॥

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि ।
एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि ।

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम् ।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम् ॥

पुष्प-माला—'माल्यादीनि' से 'पुष्पमालां समर्पयामि' पर्यन्त पढ़कर गौरी-गणपति को सुगन्धित फूल की माला चढ़ावे ।
दूब—'दूर्वाङ्कुरान्' से 'दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि' तक कहकर गणेशजी को दूब चढ़ावे ।

ॐ सिन्धोरिव प्राद्ध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः । घृतस्य धारा ऽअरुषो न वाजी काष्ठा भिन्द-न्नूर्म्मिभिः पिन्वमानः ॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, सिन्दूरं समर्पयामि ।

नानापरिमलैर्द्रव्यैर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम् ।
अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृह्यताम् ॥

ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाध-

सिन्दूर—'सिन्दूरं शोभनं' से 'सिन्दूरं समर्पयामि' पर्यन्त श्लोक तथा मन्त्र पढ़कर गौरी को सिन्दूर चढ़ावे ।

मानद॑ । हस्तग्घ्नो व्विश्वा व्वयुनानि व्विद्वान्पुमान्पुमाँ॑ऽसं
प्परिपातु व्विश्वत॑÷ ॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि ।

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः ।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्व तं य्योऽस्मान् धूर्व्वति तं

नानापरिमलद्रव्य (अबीर-बुक्का)—'नानापरिमलैर्द्रव्यैः' से 'नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि' तक कहकर गौरी-गणपति को अबीर-बुका चढ़ावे ।

धूर्व्वंयं व्वयं धूर्व्वामः । देवानामसि वह्नितमः सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम् ॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, धूपं समर्पयामि ।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया ।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम् ॥
भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने ।
त्राहि मां निरयाद् घोराद् दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते ॥

धूप—'वनस्पतिरसोद्भूतो' से 'धूपं समर्पयामि' पर्यन्त उच्चारण कर धूप जलावे ।

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्य्यो ज्योति-
र्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा । अग्निर्व्वर्च्चो ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा
सूर्य्यो व्वर्च्चो ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा ॥ ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्यो
ज्योतिः स्वाहा ॥ १ ॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दीपं समर्पयामि । हस्तप्रक्षालनम् ।

नैवेद्यं गृह्यतां देव भक्तिं मे ह्यचलां कुरु ।
इप्सितं मे वरं देहि परत्र च परां गतिम् ॥

दीप—'साज्यं च' से 'दीपं समर्पयामि' तक पढ़कर गौरी-गणेश के आगे दीपक जलावे । और हाथ धो ले ।

शर्करा-खण्ड-खाद्यानि दधि-क्षीर-घृतानि च ।
आहारं भक्ष्य-भोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ नाभ्या ऽआसीदन्तरिक्षᳬ शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत ।
पद्भ्यां भूमिर्दिशᳬ श्रोत्रात्तथा लोकाँ २ ऽअकल्पयन् ॥
(अथवा) अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः ।
प्रप्र दातारं तारिष ऽऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे ॥
ॐ प्राणाय स्वाहा । ॐ अपानाय स्वाहा । ॐ समानाय स्वाहा ।
ॐ उदानाय स्वाहा । ॐ व्यानाय स्वाहा । ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः,

नैवेद्यं समर्पयामि । आचमनीयं, मध्ये पानीयम्, उत्तरापोशनं समर्पयामि।

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम् ।
करोद्वर्तनकं देव गृहाण परमेश्वर ! ॥

ॐ अंहुना ते अंहुः पृच्यतां परुषा परुः । गन्धस्ते
सोममवतु मदाय रसो ऽअच्युतः ॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, चन्दनेन करोद्वर्तनं समर्पयामि ।

नैवेद्य—'नैवेद्यं गृह्यतां देव' से 'नैवेद्यं समर्पयामि' पर्यन्त मन्त्र-श्लोक पढ़कर गौरी-गणेश को लड्डू या मिष्ठान्न का भोग लगावे । और 'आचमनीयं, मध्ये०' पढ़कर चार आचमनी जल चढ़ावे ।

करोद्वर्तन—'चन्दनं मलयोद्भूतं' से 'करोद्वर्तनं समर्पयामि' तक उच्चारण कर दोनों हाथों की तर्जनी अँगुलि से अँगूठे द्वारा गौरी-गणेश पर चन्दन छिड़के ।

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम् ।
एलादिचूर्ण-संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तोऽस्यासी-
दाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ॥
ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मुखशुद्ध्यर्थं पूगीफल-ताम्बूलं समर्पयामि ।
इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव ।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि ॥

पान-सोपारी—'पूगीफलं' से 'पूगीफल-ताम्बूलं समर्पयामि' पर्यन्त उच्चारण कर गौरी-गणेश के आगे पान-सोपारी रखे ।

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वꣳ हसः ॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नारिकेलफलं, ऋतुकालोद्भवफलानि च समर्पयामि।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक

ऋतुफल एवं नारियल—'इदं फलं मया देव' से आरम्भ कर 'नारिकेलफलं, ऋतुकालोद्भवफलानि च समर्पयामि' पर्यन्त पढ़कर गौरी-गणेश को फल और नारियल समर्पित करे।

ऽआसीत् । स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, कृतायाः पूजायाः षाड्गुण्यार्थे द्रव्य-दक्षिणां समर्पयामि ।

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम् ।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव ॥

ॐ इदꣳ हविः प्रजननं मे ऽअस्तु दशवीरꣳ सर्वगणꣳ

दक्षिणा — 'ॐ हिरण्यगर्भः' से 'द्रव्य-दक्षिणां समर्पयामि' तक उच्चारण कर गौरी-गणेश को यथाशक्ति दक्षिणा चढ़ावे।

स्वस्तये । आत्मसनि प्प्रजासनि पशुसनि लोकसन्य-भयसनिं । अग्निः प्प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो ऽअस्मासु धत्त ॥१॥

(अथवा) आ रात्रि पार्थिवꣳ रजः पितुरप्प्रायि धामभिः । दिवः सदाꣳसि बृहती व्वितिष्ठस ऽआ त्त्वेषं वर्त्तते तमः ॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, कर्पूरनीराजनं समर्पयामि । हस्ते पुष्पाणि गृहीत्वा ।

कपूर की आरती—'कदलीगर्भसम्भूतं' से 'कर्पूरनीराजनं समर्पयामि' तक कहकर कर्पूर की आरती करें।

नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च ।

पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तो गृहाण परमेश्वर ! ॥

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन् । ते ह नाकम्महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥ १ ॥ ॐ गणानां त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिꣳ हवामहे वसो मम । आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ॥ २ ॥

ग्रह० प० ५०

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन ।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥ ३ ॥

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे । स मे कामान् कामकामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु ॥ कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः । ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायै स्यात् सार्वभौमः सार्वायुषां तादापरार्धात् । पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे । आवीक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति ॥ ४ ॥

स्व० वा० ५०

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात् । सम्बाहुभ्यान्धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव ऽएकः ॥ ५ ॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च ।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणपदे पदे ॥

मन्त्र-पुष्पांजलि—यजमान अंजलि में सुगन्धित पुष्प लेकर 'नानासुगन्धि-पुष्पाणि' से लेकर 'मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि' तक पढ़कर गौरी-गणेश को पुष्पांजलि समर्पित करे ।

(अथवा)

पदे पदे या परिपूजकेभ्यः सद्योऽश्वमेधादिफलं ददाति।
तां सर्वपापक्षयहेतुभूतां प्रदक्षिणां ते परितः करोमि॥
ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः।
तेषाᳬ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥
ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि।

विशेषार्घः—जल-गन्धाऽक्षत-फल-पुष्प-दूर्वा-दक्षिणाः एकस्मिन् पात्रे प्रक्षिप्य, अवनिकृत-जानुमण्डलं कृत्वा, अर्घपात्रमञ्जलिना गृहीत्वा।

प्रदक्षिणा—'यानि कानि च' से 'प्रदक्षिणां समर्पयामि' तक उच्चारण कर गणेशाम्बिका की दोनों हाथों से प्रदक्षिणा करे।

रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्यरक्षक ! ।
भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात् ॥१॥
द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो ! ।
वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद ॥२॥
अनेन सफलार्घ्येण सफलोऽस्तु सदा मम ।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, विशेषार्घ्यं समर्पयामि । प्रार्थना–

विशेषार्घ्य ताम्र पात्र या मिट्टी के कसोरे में जल, गन्ध, अक्षत, फल, पुष्प, दूब और दक्षिणा रखकर दोनों हाथों की अंजलि में वह अर्घ्य पात्र रख 'रक्ष-रक्ष' से लेकर 'विशेषार्घ्यं समर्पयामि' तक उच्चारण कर गौरी-गणपति पर उस पात्र के अर्घ्य-जल को छोड़ दे ।

विघ्नेश्वराय वरदाय सुराप्रियाय
लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय ।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय
गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते ॥१॥
भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय
सर्वेश्वराय शुभंदाय सुरेश्वराय ।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय

भक्तप्रसन्नवरदाय नमो नमस्ते ॥२॥
नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः ।
नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः ॥३॥
विश्वरूपस्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे ।
भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक ! ॥४॥
लम्बोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय ! ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥५॥

त्वां विघ्नशत्रुदलनेति च सुन्दरेति,
भक्तप्रियेति सुखदेति फलप्रदेति ।
विद्याप्रदेत्यघहरेति च ये स्तुवन्ति,
तेभ्यो गणेश वरदो भव नित्यमेव ॥६॥
गणेशपूजने कर्म यन्न्यूनमधिकं कृतम् ।
तेन सर्वेण सर्वात्मा प्रसन्नोऽस्तु सदा मम ॥७॥

हस्ते जलं गृहीत्वा, 'अनया पूजया गणेशाम्बिके प्रीयेतां न मम' इत्युच्चार्य, भूमौ जलं क्षिपेत् । इति गणेशपूजनं सम्पूर्णम् ।

[1]कलशस्थापनं पूजनं च

ततः कुङ्कुमादिना भूमौ अष्टदलं पद्मं कृत्वा। यजमानः-

ॐ मही द्यौः पृथिवी च न ऽइमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतान्नो भरीमभिः ॥ इति भूमिं स्पृशेत्।

ॐ ओषधयः समवदन्त सोमेन सह राज्ञा। यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्तं राजन्पारयामसि ॥

प्रार्थना 'विघ्नेश्वराय वरदाय से 'प्रसन्नोऽस्तु सदा मम' पर्यन्त सात श्लोक पढ़कर गणेशाम्बिका की प्रार्थना करे।
पुनः यजमान हाथ में जल लेकर 'अनया पूजया०' यह वाक्य कहकर भूमि पर जल छोड़ दे।

इस प्रकार गणेशाम्बिका पूजन समाप्त।

१. कलशलक्षण यथा—स्वर्णं वा राजतं वाऽपि ताम्रं मृण्मयजं तु वा। अकालमव्रणं चैव सर्वलक्षणसंयुतम् ॥
पञ्चाशाङ्गुल-वैपुल्यमुत्सेधे षोडशाङ्गुलम्। द्वादशाङ्गुलकं मूलं मुखमष्टाङ्गुलं तथा ॥

इति [1]सप्तधान्यं विकिरेत् ।

ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः । पुनरूर्जा निवर्तस्व सा नः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्माविशताद्रयिः ॥ इति सप्तधान्योपरि कलशं स्थापयेत् ।

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनी

कलशस्थापन-पूजन— पत्तलपर चावल की ढेरी रख, उसपर रोरी से अष्टदल कमल बनाकर यजमान 'ॐ मही द्यौः' से 'भरीमभिः' तक मन्त्र पढ़ भूमिपर स्थित उस पत्तल का स्पर्श करे ।

पुनः 'ॐ ओषधयः समवदन्त' से 'पारयामसि' तक मन्त्र पढ़कर पत्तल पर सप्तधान्य स्थापित करे । 'ॐ आजिघ्र कलशं०' इस मन्त्र से सप्तधान्य पर कलश स्थापित करे ।

१. सप्तधान्यानि—यव-गोधूम-धान्यानि तिलाः कङ्गुस्तथैव च । श्यामकाश्चणकाश्चैव सप्त धान्यानि संविदुः ॥
अथवा—यव-धान्य-तिलाः कङ्गुः मुद्ग-चणक-श्यामकाः । एतानि सप्त धान्यानि सर्वकार्येषु योजयेत् ॥

स्त्थो वरुणस्य ऽऋतसदन्यसि वरुणस्य ऽऋतसदनमसि
वरुणस्य ऽऋतसदनमासीद ॥ इति कलशे जलं पूरयेत् ।

ॐ त्वां गन्धर्व्वा ऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः ।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत ॥ इति गन्धं क्षिपेत् ।

ॐ या ओषधीः पूर्व्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा ।
मनैनु बभ्रूणामहꣳ शतं धामानि सप्त च ॥

'ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि०' मन्त्र से कलश में जल भरे । और 'त्वां गन्धर्वा०' इस मन्त्र से कलश में गन्ध (चन्दन) छोड़े । 'ॐ या ओषधीः०' इस मन्त्र से कलश में सर्वौषधि छोड़े ।

इति मन्त्रेण कलशे [1]सर्वौषधीः प्रक्षिपेत् ।

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि ।

एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ॥

इति कलशे दूर्वाङ्कुरान् प्रक्षिपेत् ।

ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता । गोभाज

ऽइत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम् ॥

इति कलशे [2]पञ्चपल्लवान् प्रक्षिपेत् ।

पुनः 'ॐ काण्डात् काण्डात्०' मन्त्र से कलश में दूब छोड़े । और 'ॐ अश्वत्थे वो निषदनं०' इससे कलश में पञ्चपल्लव स्थापित करे ।

---

१. सर्वौषधयः—मुरा मांसी वचा कुष्ठं शैलेयं रजनीद्वयम् । सठो चम्पक-मुस्ता च सर्वौषधिगणः स्मृतः ॥

२. पञ्चपल्लवाः—न्यग्रोधोदुम्बरोऽश्वत्थश्चूतः प्लक्षस्तथैव च ॥

ततः—ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव ऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्य्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ॥

इति मन्त्रेण कलशे [1]कुशपवित्रं क्षिपेत्।

ॐ स्योना पृथिवि नो भवान्नृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म्म सप्रथाः ॥ इति कलशे [2]सप्तमृदः क्षिपेत्।

'ॐ पवित्रे स्थो०' इस मन्त्र से उसमें कुशा की पवित्री छोड़े।

'ॐ स्योना पृथिवि०' इस मन्त्रसे कलशमें सप्तमृत्तिका तथा 'ॐ याः फलिनीर्या०' इस मन्त्रसे कलशमें सोपारी छोड़े।

१. पवित्रलक्षणम्—नाऽन्तर्गर्भिणं साग्रं कौशं द्विदलमेव च। प्रादेशमात्रं विज्ञेयं पवित्रं यत्र कुत्रचित् ॥

२. सप्तमृदः—अश्वस्थानाद् गज स्थानाद् वल्मीकात् सङ्गमाद् ह्रदात्। राजद्वाराच्च गोष्ठाच्च मृदमानीय निःक्षिपेत् ॥

ॐ याः फलिनीर्या ऽअफला ऽअपुष्पा ऽयाश्च पुष्पिणीः । बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वꣳ हसः ॥

इति कलशे पूगीफलं प्रक्षिपेत् ।

ॐ परि वाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत् । दधद्रत्नानि दाशुषे ॥ इति [1]पञ्चरत्नानि क्षिपेत् ।

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक

पुनः—'ॐ परि वाजपतिः०' इस मन्त्र से पंचरत्न तथा 'ॐ हिरण्यगर्भः०' इस मन्त्र से कलश में यथा शक्ति द्रव्यदक्षिणा छोड़े ।

१. पञ्चरत्नानि—कनकं कुलिशं मुक्ता पद्मरागं च नीलकम् । एतानि पञ्चरत्नानि सर्वकार्येषु योजयेत् ॥ प्रकारान्तरम्—वज्र-मौक्तिक-वैडूर्य्य-प्रवालं चन्द्रनीलकम् । अलाभे सर्वरत्नानां हेमं सर्वत्र योजयेत् ॥

ऽआसीत् । स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ इति हिरण्यं (अथवा द्रव्यदक्षिणां) क्षिपेत् ।

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म्म वरूथमासदत्स्वः । वासो ऽअग्ने विश्वरूपꣳ संव्ययस्व विभावसो ॥

इति युग्मवस्त्रेण कलशं वेष्टयेत् ।

ॐ पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत । वस्नेव विक्रीणावहा ऽइषमूर्जꣳ शतक्रतो ॥

'ॐसुजातो ज्योतिषा०' मन्त्र से कलशको युग्म (दो) वस्त्रों से वेष्टित करे (लपेटे) ।

अ० पृ० ६२ | क० पृ० ६३

इति कलशोपरि पूर्णपात्रं न्यसेत् ।

ॐ याऽ फलिनीर्य्या ऽअफला ऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वꣳ हसः ॥

इति मन्त्रेण कलशोपरि नारिकेलफलं संस्थाप्य ।

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा व्वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो व्वरुणेह बोध्युरुशꣳ स मा न ऽआयुः प्रमोषीः ॥

पुनः 'ॐ पूर्णा दर्वि०' इससे कलशपर पूर्णपात्र स्थापित करे। और 'ॐ याः फलिनी०' इस मन्त्र से पूर्णपात्र पर नारियल स्थापित कर 'ॐ तत्त्वा यामि०' यह मन्त्र कहकर 'अस्मिन् कलशे०' से 'वरुणं सम्पूजयेत्' पर्यन्त उच्चारण कर वरुणदेव का पञ्चोपचार से पूजन करे।

इति मन्त्रमुच्चार्य, 'अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमावाहयामि'–इति वदेत् । ततः–'ॐ अपांपतये वरुणाय नमः' इत्युक्त्वा, [1]'पञ्चोपचारैर्वरुणं सम्पूजयेत् । ततो गङ्गाद्यावाहनम् ।

कलाकला हि देवानां दानवानां कलाकलाः ।
सङ्गृह्य निर्मितो यस्मात् कलशस्तेन कथ्यते ॥१॥
कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः ।
मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ॥२॥

गङ्गा आदि तीर्थों का आवाहन—**'कला कला हि देवानां' से 'दुरितक्षयकारकाः' पर्यन्त आठ श्लोकों को पढ़ कर कलश में गंगा आदि तीर्थों के आगमन की प्रार्थना करे ।**

---

१. पञ्चोपचारास्तु—गन्ध-पुष्पौ धूप-दीपौ नैवेद्येति पञ्चकः । पञ्चोपचारमाख्यातं अर्पयेत्तत्त्वविद् बुधः ॥

कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा च मेदिनी ।
अर्जुनी गोमती चैव चन्द्रभागा सरस्वती ॥३॥
कावेरी कृष्णवेणा च गङ्गा चैव महानदी ।
तापी गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा ॥४॥
नदाश्च विविधा जाता नद्यः सर्वास्तथापराः ।
पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलशस्थानि तानि वै ॥५॥
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः ।

आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः ॥६॥
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः ।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः ॥७॥
अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पष्टिकरी तथा ।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः ॥८॥

इमान् श्लोकान् पठेत् । ततो यजमानः स्वहस्ते अक्षतान् गृहीत्वा—

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं

पुनः यजमान हाथ में अक्षत लेकर,

तंनोत्वरिष्टं ठ्ठ्यज्ञ्ठ समिमं दधातु । विश्वेदेवास ऽइह मादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ ॥

कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु । ॐ वरुणाद्यावाहित-देवताभ्यो नमः । विष्ण्वाद्यावाहित-देवताभ्यो नमः, इति वा । आसनार्थेऽक्षतान् समर्पयामि । इति वदेत् । पादयोः पाद्यं समर्पयामि । हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि । आचमनं समर्पयामि । पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि । शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि । स्नानाङ्गाचमनं समर्पयामि । वस्त्रं समर्पयामि । आचमनं समर्पयामि । यज्ञोपवीतं समर्पयामि । आच-

'ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य' से आरम्भकर 'वरदा भवन्तु' पर्यन्त पढ़कर कलशपर अक्षत छिड़क वरुण का आवाहन करे ।

मनं समर्पयामि। उपवस्त्रं समर्पयामि। आचमनं समर्पयामि। गन्धं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि। पुष्पमालां समर्पयामि। नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि। धूपम् आघ्रापयामि। दीपं दर्शयामि। हस्तप्रक्षालनम्। नैवेद्यं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। मध्ये पानीयम् उत्तरापोशनं च समर्पयामि। ताम्बूलं समर्पयामि। पूगीफलं समर्पयामि। कृतायाः पूजायाः षाड्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि। आर्तिक्यं समर्पयामि। मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। प्रदक्षिणां समर्पयामि। नमस्कारं समर्पयामि। हस्ते जलं गृहीत्वा, 'अनया पूजया वरुणाद्यावाहितदेवताः प्रीयन्तां न मम।' इत्युच्चार्य, भूमौ जलं क्षिपेत्।

पुनः—'ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः' या 'विष्णवाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः' से 'नमस्कारं समर्पयामि' पर्यन्त वाक्य पढ़कर षोडशोपचार से वरुणका पूजन करे। और हाथ में जल लेकर 'अनया पूजया०' यह वाक्य

कलश-प्रार्थना

यजमानः-- देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ ।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम् ॥१॥
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः ।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः ॥२॥
शिवः स्वयं त्वमेवाऽसि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः ।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः स-पैतृकाः ॥३॥

उच्चारण कर भूमि पर जल छोड़ दे ।

त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः ।
त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव ।
सान्निध्यं कुरु मे देव ! प्रसन्नो भव सर्वदा ॥४॥

नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय
सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय ।
सुपाशहस्ताय झषासनाय
जलाधिनाथाय नमो नमस्ते ॥५॥

पाशपाणे ! नमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक ! ।
पुण्याहवाचनं यावत्तावत्त्वं सन्निधो भव ॥६॥

इमान् श्लोकान् पठित्वा, कलशं प्रार्थयेत् । इति कलशपूजनं समाप्तम् ।

पुण्याहवाचनम्

यजमानः—अवनिकृत-जानुमण्डलः कमलमुकुलसदृशमञ्जलिं शिरस्याधायाऽनन्तरं दक्षिणेन पाणिना स्वर्ण (मृत्तिका वा ताम्र)-पूर्णकलशं धारयित्वा, आशिषः प्रार्थयेत् ।

प्रार्थना—पुनः यजमान 'देव-दानव-संवादे' से 'त्वं सन्निधो भव' पर्यन्त छह श्लोक पढ़ हाथ जोड़कर कलश की प्रार्थना करे । इस प्रकार कलश स्थापन एवं पूजन समाप्त ।

पुण्याहवाचन—यजमान भूमि पर घुटना मोड़ कमल पुष्प के समान अंजलि मस्तक पर लगाकर दाहिने हाथ में स्वर्ण (मिट्टी अथवा ताँबे) का कलश रखकर ब्राह्मणों से आशीर्वाद की प्रार्थना करे ।

दीर्घा नागा नद्यो गिरयस्त्रीणि विष्णुपदानि च ।
तेनाऽऽयुःप्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु ॥

इति यजमानो वदेत् । विप्राः–'अस्तु दीर्घमायुः ।'

ॐ त्रीणि पदा व्विचक्रमे व्विष्णुर्ग्गोपा ऽअदाब्भ्यः ।
अतो धर्म्माणि धारयन् ॥ इति वदेयुः ।

'तेनायुःप्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु' इति यजमानः कथयेत् । 'पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु' इति द्विजाः । एवं द्विरपरं शिरसि

पुनः यजमान 'दीर्घा नागा नद्यो' से 'दीर्घमायुरस्तु' तक पढ़े ।
ब्राह्मण लोग भी 'अस्तु दीर्घमायुः' इस प्रकार कहें । फिर यजमान 'ॐ त्रीणि पदा०' से 'दीर्घमायुरस्तु' तक कहे ।

भूमौ निधाय । यजमानः—ब्राह्मणानां हस्ते 'ॐ शिवा आप[१]ः सन्तु' इति जलं दद्यात् । 'सन्तु शिवा आपः' इति ब्राह्मणाः । एवं सर्वत्र वचनोत्तरं दद्युः । यजमानः—'सौमनस्यमस्तु' इति [२]पुष्पं दद्यात् । विप्राः—'अस्तु सौमनस्यम् ।' यजमानः—[३]'अक्षतं चाऽरिष्टं चाऽस्तु' इत्यक्षतान् प्रदद्यात् । विप्राः—'अस्त्वक्षतमरिष्टं च ।' यजमानः—'गन्धाः पान्तु' इति गन्धं दद्यात् ।

ब्राह्मण लोग भी 'पुण्यं पुण्याह दीर्घमायुरस्तु' ऐसा कहें । इसी तरह यजमान दो बार कलश को अपने सिर, कन्धा और घुटने से स्पर्श कराकर सप्त धान्य पर रख दे ।

पुनः यजमान ब्राह्मणों के हाथ में 'शिवा आपः सन्तु' कह कर जल छोड़े । ब्राह्मण गण भी, 'सन्तु शिवा आपः' इस प्रकार कहें ।

१ अपां मध्ये स्थिता देवाः सर्वमप्सु प्रतिष्ठितम् । ब्राह्मणानां करे न्यस्ताः शिवा आपो भवन्तु ते ।।

२. लक्ष्मीर्वसति पुष्पेषु लक्ष्मीर्वसति पुष्करे । सा मे वसतु वै नित्यं सौमनस्यं तथाऽस्तु नः ।।

३. अक्षतं चाऽस्तु मे पुण्यं दीर्घमायुर्यशोबलम् । यद्यच्छ्रेयस्करं लोके तत्तदस्तु सदा मम ।।

विप्राः-'सुमङ्गल्यं चास्तु ।' यजमानः-'अक्षताः पान्तु ।' विप्राः-'आयुष्यमस्तु।' यजमानः-'पुष्पाणि पान्तु ।' विप्राः-'सौश्रियमस्तु ।' यजमानः-'सफल-ताम्बूलानि पान्तु ।' 'विप्राः-ऐश्वर्यमस्तु।' यजमानः-'दक्षिणाः पान्तु ।' विप्राः-'बहु देयं चाऽस्तु ।'

ब्राह्मणों के हाथ में यजमान 'सौमनस्यमस्तु' कह कर पुष्प प्रदान करे। ब्राह्मण लोग भी 'अस्तु सौमनस्यम्' ऐसा कहें। पुनः ब्राह्मणों के हाथ में 'अक्षतं चारिष्टं चाऽस्तु' कहकर यजमान अक्षत देवे। ब्राह्मण लोग भी, 'अस्त्वक्षतमरिष्टं च' इस प्रकार कहें। 'गन्धाः पान्तु' कहकर यजमान ब्राह्मणों के हाथ में गन्ध (चन्दन) लगावे। ब्राह्मण लोग भी 'सुमङ्गल्यं चाऽस्तु' इस प्रकार कहें। और यजमान 'अक्षताः पान्तु' उच्चारण कर ब्राह्मणों के हाथ पर अक्षत छिड़के। ब्राह्मण वर्ग भी 'आयुष्यमस्तु' इस प्रकार कहें।

यजमान द्वारा ब्राह्मणों के हाथ में 'पुष्पाणि पान्तु' कहकर पुष्प रखने के बाद ब्राह्मण गण 'सौश्रियमस्तु' इस प्रकार कहें। पुनः यजमान ब्राह्मणों के हाथ में 'सफलताम्बूलानि पान्तु' कहकर पान रखे। ब्राह्मण गण भी 'ऐश्वर्यमस्तु' इस प्रकार कहें। यजमान द्वारा ब्राह्मणों के हाथ में दक्षिणा प्रदान करने के बाद ब्राह्मण वर्ग 'बहु देयं चाऽस्तु' इस प्रकार कह दें।

यजमानः—'पुनरत्राऽऽपः पान्तु ।' विप्राः—'स्वर्चितमस्तु ।' यजमानः—'दीर्घमायुः शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिः श्रीर्यशो विद्या विनयो वित्तं बहुपुत्रं बहुधनं चाऽऽयुष्यं चाऽस्तु' इति पठेत् । विप्राः—'तथाऽस्तु ।'

यजमानः—'यं कृत्वा सर्ववेद-यज्ञ-क्रियाकरण-कर्मारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते तमहमोङ्कारमादिं कृत्वा, ऋग्-यजुः-सामा-ऽथर्वाशीर्वचनं बहुऋषिमतं समनुज्ञातं भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये ।' विप्राः—'वाच्यन्ताम् ।'

करोतु स्वस्ति ते ब्रह्मा स्वस्ति चाऽपि द्विजातयः ।

सरीसृपाश्च ये श्रेष्ठास्तेभ्यस्ते स्वस्ति सर्वदा ॥१॥

पुनः ब्राह्मणों के हाथ में 'अत्रापः पान्तु' कहकर यजमान जल छोड़े । और सभी ब्राह्मण 'स्वर्चितमस्तु' ऐसा

ययातिर्नहुषश्चैव धुन्धुमारो भगीरथः ।
तुभ्यं राजर्षयः सर्वे स्वस्ति कुर्वन्तु नित्यशः ॥२॥
स्वस्ति तेऽस्तु द्विपादेभ्यश्चतुष्पादेभ्य एव च ।
स्वस्त्यस्त्वापादकेभ्यश्च सर्वेभ्यः स्वस्ति ते सदा ॥३॥
स्वाहा स्वधा शची चैव स्वस्ति कुर्वन्तु ते सदा ।
करोतु स्वस्ति वेदादिर्नित्यं तव महामखे ॥४॥

कहें। उसके बाद यजमान 'दीर्घमायुः' से 'पुण्याहं वाचयिष्ये' पर्यन्त वाक्य ब्राह्मणों से कहे। ब्राह्मण लोग भी 'वाच्यन्ताम्' इस प्रकार कहें।

लक्ष्मीररुन्धती चैव कुरुतां स्वस्ति तेऽनघ ।
असितो देवलश्चैव विश्वामित्रस्तथाङ्गिराः ॥५॥
वशिष्ठः कश्यपश्चैव स्वस्ति कुर्वन्तु ते सदा ।
धाता विधाता लोकेशो दिशश्च सदिगीश्वराः ॥६॥
स्वस्ति तेऽद्य प्रयच्छन्तु कार्त्तिकेयश्च षरामुखः ।
विवस्वान् भगवान् स्वस्ति करोतु तव सर्वदा ॥७॥
दिग्गजाश्चैव चत्वारः क्षितिश्च गगनं ग्रहाः ।

अधस्ताद् धरणीं चाऽसौ नागो धारयते हि यः ॥८॥
शेषश्च पन्नगश्रेष्ठः स्वस्ति तुभ्यं प्रयच्छतु ।

ॐ द्रविणोदाः पिपीषति जुहोत प्र च तिष्ठत । नेष्ट्रादृतुभिरिष्यत ॥१॥ सविता त्वा सवानाᳬं सुवतामग्निर्गृहपतीनाᳬं सोमो वनस्पतीनाम् । बृहस्पतिर्वाच ऽइन्द्रो ज्यैष्ठ्याय रुद्रः पशुभ्यो मित्रः सत्यो वरुणो धर्मपतीनाम् ॥२॥

फिर ब्राह्मणगण 'करोतु स्वस्ति' से 'स्वस्ति तुभ्यं प्रयच्छतु' पर्यन्त आठ श्लोक एवं 'ॐ द्रविणोदाः' से 'इयक्षते' पर्यन्त पाँच मन्त्र पुण्याहवाचन में कहें ।

ग्रह० प० ८०

न तद्रक्षाꣳसि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमजꣳ-
ह्येतत् । यो बिभर्त्ति दाक्षायणꣳ हिरण्यꣳ स देवेषु
कृणुते दीर्घमायुः स मनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः ॥३॥
उच्चा ते जातमन्धसो दिविसद्भूम्म्याददे । उग्रꣳ शर्म्म
महिश्रवः ॥४॥ उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे ।
अभि देवाँ २॥ ऽइयक्षते ॥५॥ इत्येता ऋचः पुण्याहे ब्रूयात् ।
'व्रत-जप-नियम-तपः-स्वाध्याय-क्रतु-शम-दम-दया-दानविशिष्टानां

पु० ह० ८०

पुनः यजमान 'व्रत-जप०' से 'मनः समाधीयताम्' पर्यन्त वाक्य ब्राह्मणों से कहे । ब्राह्मण लोग भी 'समाहित-

सर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम्।' इति यजमानो वदेत्। 'समाहित-मनसः स्मः' इति ब्राह्मणाः वदेयुः। 'प्रसीदन्तु भवन्तः' इति यजमानो वदेत्। 'प्रसन्नाः स्मः' इति ब्राह्मणाः वदेयुः।

ततो यजमानो वामहस्तेऽक्षतान् गृहीत्वा, कलशोपरि 'शान्तिरस्तु' इत्याद्युच्चार्य प्रक्षिपेत्। तद्यथा--'ॐ शान्तिरस्तु। ॐ पुष्टिरस्तु। ॐ तुष्टिरस्तु। ॐ वृद्धिरस्तु। ॐ अविघ्नमस्तु। ॐ आयुष्यमस्तु। ॐ आरोग्यमस्तु। ॐ शिवमस्तु। ॐ शिवं कर्माऽस्तु। ॐ कर्मसमृद्धिरस्तु। ॐ धर्मसमृद्धिरस्तु। ॐ वेदसमृद्धिरस्तु। ॐ शास्त्रसमृद्धिरस्तु। ॐ धन-धान्य-समृद्धिरस्तु। ॐ पुत्र-पौत्र-समृद्धिरस्तु। ॐ इष्टसम्पदस्तु।'

मनसः स्मः' इस प्रकार कहें। यजमान द्वारा 'प्रसीदन्तु भवन्तः' कहने पर ब्राह्मण लोग 'प्रसन्नाः स्मः' इस प्रकार कहें।

यजमान पुनः बायें हाथ में अक्षत लेकर दाहिने हाथ से 'ॐ शान्तिरस्तु' से 'इष्टसम्पदस्तु' पर्यन्त वाक्य पढ़कर कलश पर छिड़के।

द्वितीयपात्रे—'ॐ अरिष्टनिरसनमस्तु। ॐ यत्पापं रोगमशुभमकल्याणं तद्दूरे प्रतिहतमस्तु।' अन्तः—'ॐ यच्छ्रेयस्तदस्तु। ॐ उत्तरे कर्मणि निर्विघ्न-मस्तु। ॐ उत्तरोत्तरमहरहरभिवृद्धिरस्तु।' ॐ उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः सम्पद्यन्ताम्। ॐ तिथि-करण-मुहूर्त-नक्षत्र-ग्रह-लग्न-सम्पदस्तु। ॐ तिथि-करण-मुहूर्त-नक्षत्र-ग्रह-लग्नाधिदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ तिथि-करणे स-मुहूर्ते स-नक्षत्रे स-ग्रहे स-लग्ने साधिदैवते प्रीयेताम्। ॐ दुर्गा-पाञ्चाल्यौ प्रीयेताम्। ॐ अग्निपुरोगाः विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्। ॐ इन्द्रपुरोगाः मरुद्गणाः प्रीयन्ताम्। ॐ वसिष्ठपुरोगा ऋषिगणाः प्रीयन्ताम्। ॐ माहेश्वरीपुरोगा उमामातरः प्रीयन्ताम्। ॐ अरुन्धतीपुरोगा एकपत्न्यः प्रीयन्ताम्। ॐ

और दूसरे पात्र में 'अरिष्टनिरसनमस्तु' से 'प्रतिहतमस्तु' पर्यन्त पढ़कर अक्षत छोड़े।
पुनः कलश पर 'ॐ यच्छ्रेयस्तदस्तु' से 'इष्टदेवताः प्रीयन्ताम्' कहकर अक्षत छिड़के।

विष्णुपुरोगाः सर्वे देवाः प्रीयन्ताम् । ॐ ब्रह्मपुरोगाः सर्वे वेदाः प्रीयन्ताम् । ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम् । ॐ श्रीसरस्वत्यौ प्रीयेताम् । ॐ श्रद्धा-मेधे प्रीयेताम् । ॐ भगवती कात्यायनी प्रीयताम् । ॐ भगवती माहेश्वरी प्रीयताम् । ॐ भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम् । ॐ भगवती वृद्धिकरी प्रीयताम् । ॐ भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम् । ॐ भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम् । ॐ भगवन्तौ विघ्न-विनायकौ प्रीयेताम् । ॐ सर्वाः कुलदेवताः प्रीयन्ताम् । ॐ सर्वाः ग्रामदेवताः प्रीयन्ताम् । ॐ सर्वा इष्टदेवताः प्रीयन्ताम् ।'

पुनर्द्वितीयपात्रे—ॐ हताश्च ब्रह्मद्विषः। हताश्च परिपन्थिनः। ॐ हताश्च विघ्नकर्त्तारः। ॐ शत्रवः पराभवं यान्तु । ॐ शाम्यन्तु घोराणि । ॐ शाम्यन्तु पापानि । ॐ शाम्यन्त्वीतयः । ॐ शाम्यन्तूपद्रवाः ।'

पुनः दूसरे पात्र में 'ॐ हताश्च ब्रह्मद्विषः' से 'ॐ शाम्यन्तपद्रवाः' पर्यन्त कहकर अक्षत छोड़े ।

कलशोपरि—ॐ 'शुभानि वर्धन्ताम्। ॐ शिवा आपः सन्तु। ॐ शिवा ऋतवः सन्तु। ॐ शिवा ओषधयः सन्तु। ॐ शिवा वनस्पतयः सन्तु। ॐ शिवा अतिथयः सन्तु। ॐ शिवा अग्नयः सन्तु। ॐ शिवा आहुतयः सन्तु। ॐ अहोरात्रे शिवे स्याताम्।

ॐ निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नु ऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्॥

ॐ शुक्रा-ऽङ्गारक-बुध-बृहस्पति-शनैश्चर-राहु-केतु-सोम-सहितादित्य-पुरोगाः सर्वे ग्रहाः प्रीयन्ताम्। ॐ भगवान् नारायणः प्रीयताम्। ॐ भगवान् पर्जन्यः प्रीयताम्। ॐ भगवान् स्वामी महासेनः प्रीयताम्।

फिर यजमान कलश पर 'ॐ शुभानि वर्धन्ताम्' से 'प्रातः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु' पर्यन्त कहकर अक्षत छिड़के।

पुरोऽनुवाक्यया यत्पुण्यं तदस्तु । याज्यया यत्पुण्यं तदस्तु । वषट्कारेण यत्पुण्यं तदस्तु । प्रातः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु । 'एतत्कल्याणयुक्तं पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये ।' इति यजमानो वदेत् । 'ॐ वाच्यताम्' इति ब्राह्मणाः कथयन्तु ।

ब्राह्मं पुण्यमहर्यच्च सृष्ट्युत्पादनकारकम् ।
वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः ॥

'भो ब्राह्मणाः ! मया क्रियमाणस्य अमुकाख्यस्य कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु' इति यजमानो वदेत् । 'ॐ पुण्याहं पुण्याहं पुण्याहम्'

और 'एतत्कल्याणयुक्तं०' यह वाक्य ब्राह्मणों से कहे । ब्राह्मण गण भी, 'वाच्यताम्' इस प्रकार कहें । तदनन्तर यजमान 'ब्राह्मं पुण्यं' से 'पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु' कहे । ब्राह्मण भी तीन बार 'पुण्याहं०' का उच्चारण करें । तथा 'ॐ पुनन्तु मा' से 'पुनीहि मा' पर्यन्त मन्त्र पढ़ें ।

इति ब्राह्मणा वदेयुः। 'ॐ अस्य कर्मणः पुण्याऽहं भवन्तो ब्रुवन्तु' इति यजमानः। 'पुण्याहम्' इति ब्राह्मणाः। एवं वचनं प्रतिवचनं च त्रिवारं पठेयुः।

ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः। पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा।

पृथिव्यामुद्धृतायां तु यत्कल्याणं पुरा कृतम्॥
ऋषिभिः सिद्धगन्धर्वैस्तत्कल्याणं ब्रुवन्तु नः॥

भो ब्राह्मणाः मया क्रियमाणस्य अमुकाख्यस्य कर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु ३। इति यजमानस्त्रिवारं पठेत्। ॐ कल्याणम् ३।

फिर यजमान 'पृथिव्यामुद्धृतायां तु' से 'कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु' पर्यन्त ब्राह्मणों से तीन बार कहे। ब्राह्मण गण भी 'कल्याणम्' इस वाक्य को तीन बार कहें। और 'ॐ यथेमां वाचं०' इस मन्त्र का पाठ करें।

ॐ यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः । ब्रह्म-राजन्याभ्याᳬं शूद्राय चार्य्याय च स्वाय चारणाय च । प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृद्ध्यतामुप मादो नमतु ॥ इति ब्राह्मणाः पठेयुः ।

सागरस्य तु या ऋद्धिर्महालक्ष्म्यादिभिः कृता ।
सम्पूर्णा सुप्रभावा च तामृद्धिं प्रब्रुवन्तु नः ॥

इति ब्राह्मणाः पठेयुः ।

'भो ब्राह्मणाः, मया क्रियमाणस्य अमुकाख्यस्य कर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु' इति यजमानः। 'ॐ कर्म ऋध्यताम् ३।' इति ब्राह्मणाः।

ॐ सत्रस्य ऋद्धिरस्यगन्म ज्योतिरमृता ऽअभूम। दिवं पृथिव्या ऽअध्यारुहामाविदाम देवान्त्स्वर्ज्योतिः ॥ ३ ॥

स्वस्तिस्तु या विनाशाख्या पुण्यकल्याणवृद्धिदा।
विनायकप्रिया नित्यं तां च स्वस्तिं ब्रुवन्तु नः ॥

'भो ब्राह्मणाः, मया क्रियमाणस्य अमुकाख्यस्य कर्मणः स्वस्ति

पुनः यजमान 'सागरस्य तु' से 'ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु' इस प्रकार ब्राह्मणों से तीन बार कहे। ब्राह्मण वर्ग भी 'कर्म ऋद्ध्यताम्' इस वाक्य को तीन बार कह कर 'ॐ सत्रस्य०' इस मन्त्र को पढ़ें।

भवन्तो ब्रुवन्तु ३' इति यजमानस्त्रिवारं पठेत् । 'ॐ आयुष्मन्ते स्वस्ति ३ । अस्मै कर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु' इति यजमानः । ॐ 'आयुष्मते स्वस्ति ३ ।'

ॐ स्वस्ति न ऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः । स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो ऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥

समुद्रमथनाज्जाता जगदानन्दकारिका ।

तत्पश्चात् यजमान 'स्वस्तिस्तु या विनाशाख्या' से 'स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु' ऐसा ब्राह्मणों से तीन बार कहे । ब्राह्मण लोग भी प्रत्युत्तर में 'आयुष्मते स्वस्ति' इसे तीन बार उच्चारण करें । तथा 'ॐ स्वस्ति न इन्द्रो०' इस मन्त्र का पाठ करें ।

हरिप्रिया च माङ्गल्या तां श्रियं च ब्रुवन्तु नः ॥

'भो ब्राह्मणाः, मया क्रियमाणस्य अमुकाख्यस्य कर्मणः श्रीरास्त्वति भवन्तो ब्रुवन्तु ३' इति यजमानो वदेत्। 'ॐ अस्तु श्रीः ३।'

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण ॥ इति ब्राह्मणाः।

मृकण्डसूनोरायुर्यद्-ध्रुवलोमशयोस्तथा।

पुनः यजमान 'समुद्रमथनाज्जाता' से 'श्रीरस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु' पर्यन्त तीन बार कहे। ब्राह्मण भी 'अस्तु श्रीः' इस प्रकार तीन बार प्रत्युत्तर दें और 'ॐ श्रीश्च ते०' इस मन्त्र को पढ़ें।

आयुषा तेन संयुक्ता जीवेम शरदः शतम् ॥

इति यजमानो वदेत् । 'शतं जीवन्तु भवन्तः' इति ब्राह्मणाः ।

ॐ शतमिन्नुशरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम् । पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः ॥

शिवगौरीविवाहे या या श्रीरामे नृपात्मजे ।
धनदस्य गृहे या श्रीरस्माकं साऽस्तु सद्मनि ॥

पश्चात् यजमान 'मृकण्डसूनो' से 'शरदः शतम्' इस श्लोक का पाठ करे। ब्राह्मण गण भी 'शतं जीवन्तु भवन्तः' इस प्रकार कह दें। और 'ॐ शतमिन्नुशरदः०' इस मन्त्र को पढ़ें।

इति यजमानो वदेत्। 'ॐ अस्तु श्रीः' इति ब्राह्मणाः।

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीय। पशूनाᳪं रूपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा॥

प्रजापतिर्लोकपालो धाता ब्रह्मा च देवराट्।
भगवाञ्छाश्वतो नित्यं नो वै रक्षन्तु सर्वतः॥

ॐ भगवान् प्रजापतिः प्रीयताम्।

ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परि ता

उसके बाद यज्ञ कर्ता 'शिव-गौरी-विवाहे या०' इस श्लोक को पढ़े। ब्राह्मण भी 'अस्तु श्रीः' ऐसा कह दें। और 'ॐ मनसः काममाकूतिं०' इस मन्त्र का उच्चारण करें।

बभूव । यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो ऽअस्त्वयममुष्य पिता-
सावस्य पिता वयᳪ स्याम पतयो रयीणाᳪ स्वाहा ॥

आयुष्मते स्वस्तिमते यजमानाय दाशुषे ।
श्रिये दत्ताशिषः सन्तु ऋत्विग्भिर्वेदपारगैः ॥

इति यजमानः । 'ॐ आयुष्मते स्वस्ति' इति ब्राह्मणाः ।

ॐ प्रति पन्थामपद्महि स्वस्तिगामनेहसम् । येन
विश्वाᳫ परि द्विषो वृणक्ति विन्दते वसु ॥

यज्ञ कर्ता 'प्रजापतिर्लोकपालो०' इस श्लोक का उच्चारण कर 'ॐ भगवान् प्रजापतिः प्रीयताम्' इस प्रकार कह एक आचमनी जल गिरा दे । विप्र वर्ग भी, 'ॐ प्रजापते न०' इस मन्त्र का उच्चारण करें ।

ॐ स्वस्तिवाचनसमृद्धिरस्तु । इति यजमानः ।

यजमानो हस्ते जलं गृहीत्वा, 'कृतस्य स्वस्तिवाचनकर्मणः समृद्धयर्थं स्वस्तिवाचकेभ्यो ब्राह्मणेभ्य इमां दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे ।' इति भूमौ जलं क्षिपेत् ।

[1]अभिषेकः—एकस्मिन् पात्रे वरुणोदकं गृहीत्वाऽविधुराश्चत्वारो ब्राह्मणाः दूर्वाऽऽम्रपल्लवैः सकुटुम्बं वामभागस्थितां पत्नीं यजमानमभिषिञ्चेयुः ।

ॐ पर्यः पृथिव्यां पय ऽओषधीषु पयो दिव्युन्तरिक्षे

पुनः यजमान 'आयुष्मते स्वस्तिमते०' इस श्लोक का पाठ करे । विप्र वर्ग भी 'आयुष्मते स्वस्ति' ऐसा कह 'ॐ प्रति पन्थामपद्महि०' इस मन्त्र का उच्चारण करें । यजमान भी ब्राह्मणों से 'स्वस्तिवाचन-समृद्धिरस्तु' इस प्रकार कहे। फिर यजमान हाथ में जल लेकर 'कृतस्य०' से 'दातुमहमुत्सृजे' पर्यन्त कहकर भूमिपर जल छोड़ दे ।

१. अभिषेके पत्नी वामभागे तिष्ठति ।

पयोधाः । पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥ १ ॥ ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः । सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित् ॥२॥ ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्ज्जनी स्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद ॥३॥

अभिषेक—एक पात्र में पुण्याहवाचन कलश का जल निकाल कर ब्राह्मण गण दूब और आम के पल्लव से वाम भाग में स्थित पत्नी और स-परिवार यजमान के सिर पर 'ॐ पयः पृथिव्यां०' से 'अभयं नः पशुभ्यः' पर्यन्त इन तेरह मन्त्रों-द्वारा जल छिड़कें ।

ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः। पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा ॥४॥ ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रियै दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ ॥५॥ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्राज्येनाभिषिञ्चामि ॥६॥ देवस्य त्वा

सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् । अश्विनोर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसायाभिषिञ्चामि सरस्वत्यै भैषज्येन वीर्यायान्नाद्यायाभिषिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसेऽभिषिञ्चामि ॥७॥ ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव । यद्भद्रं तन्न ऽआसुव ॥८॥ धामच्छदग्निरिन्द्रो ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः । सचेतसो विश्वेदेवा यज्ञं प्रावन्तु नः शुभे॥ ९ ॥ त्वं यविष्ठ दाशुषो

नः पाहि शृणुधी गिरः । रक्षा तोकमुत त्मना ॥ १० ॥
अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः । प्प्रप्रदातारं
तारिषऽऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे ॥११॥ द्यौः शान्ति-
रन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः
शान्तिः । वनस्प्पतयः शान्तिर्व्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म
शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा
शान्तिरेधि ॥१२॥ यतो यतः समीहसे ततो नोऽअभयं

कुरु । शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ॥१३॥

इत्यादि-मन्त्रान् पठित्वा, ब्राह्मणाः सपत्नीक-यजमानमस्तकोपरि जलं प्रक्षिपेयुः । इति पुण्याहवाचनप्रयोगः समाप्तः ।

अविघ्नपूजनम्

अविघ्नो मण्डपश्चैव मातृणां पूजनं सकृत् ।
वैश्वदेवं वसोर्द्धारा नान्दीश्राद्धमतः परम् ॥१॥

विवाहोपनयन-चूडाकरण-सीमन्तोन्नयनादावेव-अविघ्नपूजनं मण्डप-स्थापनं च भवति ।

इस प्रकार 'शिवदत्ती' हिन्दी टीका में पुण्याहवाचन-प्रयोग समाप्त ।

अविघ्न (गणेश) पूजन तथा स्थापन—विवाह, यज्ञोपवीत, मुण्डन और सीमन्त संस्कार में ही अविघ्न (गणपति) पूजन होता है ।

मोदश्चैव प्रमोदश्च सुमुखो दुर्मुखस्तथा ।
अविघ्नो विघ्नहर्त्ता च षडेते विघ्ननायकाः ॥२॥

ॐ मोदाय नमः, मोदमावाहयामि स्थापयामि । ॐ प्रमोदाय नमः, प्रमोदम् आवाहयामि स्थापयामि । ॐ सुमुखाय नमः, सुमुखम् आवाहयामि स्थापयामि । ॐ दुर्मुखाय नमः, दुर्मुखमावाहयामि स्थापयामि । ॐ अविघ्नाय नमः, अविघ्नमावाहयामि स्थापयामि । ॐ विघ्नहर्त्रे नमः, विघ्न-

---

जिसका विधान विवाहादि कार्य में 'अविघ्नो मण्डपश्चैव' इस श्लोक-द्वारा कहा गया है ॥१॥ तथा 'मोदश्चैव प्रमोदश्च' इस श्लोक से मोद आदि छह विनायकों का निरूपण किया गया है ॥२॥

यजमान अक्षत-पुंज (चावल की ढेरी) पर छह स्थान में सोपारी रख 'ॐ मोदाय नमः' से 'विघ्नहर्तारमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त कहकर छहों सोपारी पर अक्षत छिड़क कर मोदादि छह विनायकों का आवाहन एवं स्थापन करे ।

हर्तारमावाहयामि स्थापयामि ॥ 'ॐ मोदादिषड्विनायकेभ्यो नमः' इत्युच्चार्य्य, पञ्चोपचारैः षोडशोपचारैर्वा पूजयेत्। इत्यविघ्नपूजनं समाप्तम्।

मण्डपस्थापनं, तद्देवताप्रतिष्ठा च

ततो मण्डपार्थं स्तम्भारोपणं कुर्यात्। तद्यथा–

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। इत्यनेनाऽभ्रिमादत्ते।

और 'ॐ मोदादि-षड्विनायकेभ्यो नमः' ऐसा कहकर पंचोपचार या षोडशोपचार से पूजन करे।

इस प्रकार अविघ्न पूजन समाप्त।

मण्डप स्थापन तथा मण्डपस्थ देवताओं की प्रतिष्ठा–उसके बाद यजमान विवाहादि शुभ कार्य में मँड़वा गाड़े। वह इस प्रकार है–पूजन कर्ता को चाहिए कि वह सर्व-प्रथम 'ॐ देवस्य त्वा०' मन्त्र पढ़कर हाथ में कुदारी या फरसा उठावे।

ॐ इदमहᳪ रक्षसां ग्रीवा अपि कृन्तामि ।

इत्यनेनाऽवटोपरि रेखां कुर्यात् ।

ॐ मा वो रिषत्खनिता यस्मै चाऽहं खनामि वः ।
द्विपाच्चतुष्पादस्माकᳪ सर्वमस्त्वनातुरम् ॥

इति मन्त्रेण गर्तं खनेत् ।

ॐ सिञ्चन्ति परिषिञ्चन्त्युत्सिञ्चन्ति पुनन्ति च । सुरायै
बभ्र्वै मदे किन्त्वो वदाति किन्त्वः ॥

इति मन्त्रेण तस्मिन् गर्ते अप आसिञ्चेत् ।

'ॐ इदमहᳪ०' इस मन्त्र से उस गड्ढे में रेखा करे ।

ॐ यवोऽसि यवयास्म्मद्द्वेषो यवयारातीः ॥

इत्यनेन यवानावपेत् । दर्भसिद्धार्थकांस्तूष्णीमावपेत् ।

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्प्परि । एवा नो दूर्वे प्प्रतनु सहस्रेण शतेन च ॥ इत्यनेन गर्ते दूर्वाङ्कुरान् क्षिपेत् ।

ॐ दधिक्राव्णोऽअकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः ।

पुनः यजमान 'ॐ मा वो रिषत्खनिता०' इस मन्त्र से भलीभाँति गड्ढा खोदे । तथा 'ॐ सिञ्चन्ति परिषिञ्चन्ति०' यह मन्त्र कहकर उस गर्त (गड्ढे) में जल छिड़के ।

फिर 'ॐ यवोऽसि०' इस मन्त्र से उस गड्ढे में यव छोड़े । और अमन्त्रक (बिना मन्त्र का ही) उसमें कुशा छोड़े । पश्चात 'ॐ काण्डात् काण्डात्०' इस मन्त्र से गड्ढे में दूब छोड़े ।

सुरभि नो मुखा करत्प्र ण ऽआयूꣳषि तारिषत् ॥

इत्यनेन दधि क्षिपेत्।

ॐ याः फलिनीर्य्या ऽअफला ऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पति प्प्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वꣳहसः ॥

इत्यनेन फलं प्रक्षिपेत्।

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽआसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥

और 'ॐ दधिक्राव्णो०' इस मन्त्र से दही छोड़ दे। पुनः उसमें 'ॐ याः फलिनीर्या०' इस मन्त्र से सोपारी

इत्यनेन दक्षिणां प्रक्षिपेत् ।

ॐ उच्छ्रयस्व वनस्पत ऊर्ध्वो मा पाह्यꣳ हस ऽआस्य यज्ञस्योदृचः ॥

इति मन्त्रेण रक्तसूत्रबद्ध-मदनफलसमन्वित-स्तम्भमुत्थापयेत् ।

ॐ ऊर्द्ध्व ऽऊषुण ऽऊतये तिष्ठा देवो न सविता ।
ऊर्द्ध्वो वाजस्य सनिता यदञ्जिभिर्वाघद्भिर्विह्वयामहे ॥

इत्यनेनाऽवटे स्तम्भमारोपयेत् ।

छोड़े । पुनः 'ॐ हिरण्यगर्भ०' इस मन्त्र से उस गडढे में दक्षिणा छोड़ कर 'ॐ उच्छ्रयस्व०' इस मन्त्र द्वारा नारे से बँधा हुआ मैन फल सहित बाँस को उठावे, और 'ॐ ऊर्ध्व ऊषुण०' इस मन्त्र द्वारा गड्ढे में स्तम्भ रखे ।

ॐ स्थिरो भव वीड्वङ्ग आशुर्भव वाज्यर्वन् ।
पृथुर्भव सुषदस्त्वमग्नेः पुरीषवाहणः ॥

इत्यनेन समन्ततो मृत्पूर्णेन स्थिरं कुर्यात् । एवं सर्वान् स्तम्भान् स्थिरीकृत्य, सर्वेषु स्तम्भेषु रोपणक्रमेणैकैकं देवमावाहयेत् । तद्यथा– ॐ नलिन्यै नमः, नलिनीमावाहयामि ॥१॥ ॐ नन्दिन्यै नमः, नन्दिनीमावाहयामि ॥२॥ ॐ मैत्रायै नमः, मैत्रामावाहयामि ॥३॥ ॐ उमायै नमः, उमामावाहयामि ॥४॥ ॐ पशुवर्द्धिन्यै नमः, पशुवर्द्धिनीमावाहयामि ॥५॥ हस्तेऽक्षतान् गृहीत्वा,

---

तथा 'ॐ स्थिरो भव०' इस मन्त्र से उस गड्ढे को चारों ओर से मिट्टी-द्वारा भरकर स्तम्भारोपण क्रम से 'नलिनी' आदि पाँच देवियों का आवाहन एवं पूजन इस प्रकार करे ।

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमं दधातु। विश्वेदेवास ऽइह मादयन्तामोँ३म्प्रतिष्ठ॥

मण्डपदेवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु, इति प्रतिष्ठाप्य। 'ॐ मण्डपदेवताभ्यो नमः' इति पठित्वा, षोडशोपचारैः पञ्चोपचारैर्वा समर्चयेत्। हस्ते जलमादाय, 'मण्डपदेवताप्रीत्यर्थं यथाशक्ति ब्राह्मणान् भोजयिष्ये।' इत्युक्त्वा भूमौ जलं क्षिपेत्। अत्र मण्डपप्रतिष्ठा तु सीमन्तोन्नयना-ऽन्न-

---

अक्षत की ढ़ेरी पर पाँच स्थान में सुपारी रख 'ॐ नलिन्यै नमः' से 'पशुवर्द्धिनीमावाहयामि' पर्यन्त कह कर हाथ में अक्षत लेकर 'ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य०' इस मन्त्र से 'वरदा भवन्तु' तक उच्चारण कर अक्षत छोड़ दे।

उसके बाद 'ॐ मण्डपदेवताभ्यो नमः' कह कर नलिन्यादि पाँच देवियों का षोडशोपचार अथवा पंचोपचार से पूजन करे।

प्राशनचूडाकरणोपनयन-वेदारम्भ-केशान्त-व्रतविसर्ग-विवाहेषु कार्या। अत्र शिष्टाचार एव शरणम्। तत्रैव मण्डपार्थं स्तम्भनिवेशनं तु। वृष-मिथुन-कर्कराशित्रये सूर्ये सति आग्नेय्यां कार्यम्। सिंह-कन्या-तुला-राशित्रये ईशान्यां कार्यम्। वृश्चिक-धन-मकर-राशित्रये वायव्यां कार्यम्। कुम्भ-मीन-मेष-राशित्रये नैर्ऋत्यां विधेयम्। इति मण्डपस्थापनं तद्देवताप्रतिष्ठा च समाप्ता।

पुनः यजमान हाथ में जल लेकर 'मण्डपदेवताप्रीत्यर्थं०' पढ़कर ब्राह्मण भोजन का संकल्प कर भूमि पर जल छोड़ दे। यह मण्डप-प्रतिठा सीमन्त, अन्न प्राशन, मुण्डन, यज्ञोपवीत, वेदारम्भ एवं विवाहादि शुभकार्यों में किया जाता है। यहाँ देशाचार के अनुसार ही कार्य करना चाहिए।

वृष. मिथुन. कर्क राशि स्थित सूर्य में मण्डप स्तम्भ (मँड़वा) अग्निकोण में, सिंह, कन्या, तुला राशि स्थित सूर्य में उक्त स्तम्भ ईशान कोण में और वृश्चिक, धन, मकर राशि के सूर्य में वायु कोण में तथा कुम्भ, मीन, मेष राशि स्थित सूर्य में मण्डपस्तम्भ नैऋत्यकोण में स्थापित करना चाहिए।

इस प्रकार मण्डप स्थापन तथा मण्डपस्थित देवता प्रतिष्ठा समाप्त।

षोडश-मातृका-पूजनम्

आग्नेय्यां प्रतिमास्वक्षत-पुञ्जेषु वा प्राक्संस्थमुदक्संस्थं वा पीठोपरि मातृस्थापनं कुर्यात्। तद्यथा—

समीपे मातृवर्गस्य सर्वविघ्नहरं सदा।
त्रैलोक्यवन्दितं देवं गणेशं स्थापयाम्यहम्॥

ॐ गणानां त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिꣳ हवामहे वसो

षोडशमातृकापूजन-विवाहादि शुभ कार्यों में निर्मित गणेशप्रतिमा के समक्ष गोमय-पिण्ड द्वारा सोलह स्थानों में षोडशमातृका का पूजन करे। अथवा पीढ़े पर सोलह स्थानों में अक्षत की ढेरी पर सोलह सोपारी रख पूर्व दिशा या उत्तर दिशा की ओर से षोडश मातृका की स्थापना निम्नलिखित प्रकार से करे।

मम । आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि स्थापयामि ॥१॥

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम् ।
लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः । पितरं च प्रयन्त्स्वः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः, गौरीमावाहयामि स्थापयामि ॥२॥

यजमान हाथ में अक्षत लेकर 'समीपे मातृवर्गस्य' यह श्लोक और 'ॐ गणानां त्वा०' मन्त्र द्वारा 'ॐ भूर्भुवः स्वः' से 'गणपतिमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त उच्चारण कर गणेश की स्थापना करे ॥ १ ॥ 'हेमाद्रितनयां०'

पद्माभां पद्मवदनां पद्मनाभोरुसंस्थिताम् ।
जगत्प्रियां पद्मवासां पद्मामावाहयाम्यहम् ॥

ॐ हिरण्यरूपा ऽउषसो व्विरोक ऽउभाविन्द्रा ऽउदिथः सूर्य्यश्च । आरोहतं व्वरुण मित्र गर्त्तं ततश्चक्षाथामदितिं दितिं च मित्रोऽसि व्वरुणोऽसि ॥

ॐ पद्मायै नमः, पद्मामावाहयामि स्थापयामि ॥ ३ ॥

श्लोक तथा 'ॐ आयं गौः' से 'गौरीमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त पढ़कर गौरी की स्थापना करे ॥ २ ॥

यजमान 'पद्माभां पद्मवदनां०' यह श्लोक और 'ॐ हिरण्यरूपा०' से 'पद्मामावाहयामि स्थापयामि' तक पढ़कर पद्माका आवाहन करे ॥ ३ ॥

दिव्यरूपां विशालाक्षीं शुचि-कुण्डल-धारिणीम् ।
रक्तमुक्ताद्यलङ्कारां शचीमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ निवेशनः सङ्गमनो वसूनां विश्वा रूपाभिचष्टे शचीभिः । देव इव सविता सत्यधर्मेन्द्रो न तस्थौ समरे पथीनाम् ॥

ॐ शच्यै नमः, शचीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४ ॥

विश्वेऽस्मिन् भूरिवरदां जरां निर्जरसेविताम् ।

'दिव्यरूपां विशालाक्षीं०' यह श्लोक तथा 'ॐ निवेशनः०' से 'शचीमावाहयामि स्थापयामि' कहकर शची का आवाहन एवं स्थापन करे ॥ ४ ॥

बुद्धिप्रबोधिनीं सौम्यां मेधामावाहयाम्यहम् ॥

ॐ मेधां मे व्वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः ।
मेधामिन्द्रश्च व्वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा ॥

ॐ मेधायै नमः, मेधामावाहयामि स्थापयामि ॥ ५ ॥

जगत्सृष्टिकरीं धात्रीं देवीं प्रणवमातृकाम् ।
वेदगर्भां यज्ञमयीं सावित्रीं स्थापयाम्यहम् ॥

ॐ सविता त्वा सवानाᳬं सुवतामग्निर्गृहपतीनाᳬं सोमो

'विश्वेऽस्मिन् भूरिवरदां०' यह श्लोक और 'ॐ मेधां मे वरुणो' से 'मेधामावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त उच्चारण कर मेधाका आवाहन करे ॥ ५ ॥

व्वनस्प्पतीनाम् । बृहस्प्पतिर्व्वाच ऽइन्द्रो ज्ज्यैष्ठ्याय रुद्रः
पशुब्भ्यो मित्रः सत्त्यो व्वरुणो धर्म्मपतीनाम् ॥

ॐ सावित्र्यै नमः, सावित्रीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ६ ॥

सर्वास्त्रधारिणीं देवीं सर्वाभरणभूषिताम् ।
सर्वदेवस्तुतां वन्द्यां विजयां स्थापयाम्यहम् ॥

ॐ विज्ज्यन्धनुः कपर्द्दिनो व्विशल्ल्यो बाणवाँ२॥ उत ।
अनेशन्नस्य या ऽइषव ऽआभुरस्य निषङ्गधिः ॥

'जगत्सृष्टिकरीं धात्रीं०' उक्त श्लोक तथा 'ॐ सविता त्वा०' मन्त्र से 'सावित्रीमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त कहकर सावित्री देवी का स्थापन एवं पूजन करे ॥ ६ ॥

ॐ विजयायै नमः, विजयामावाहयामि स्थापयामि ॥ ७ ॥

सुरारिमथिनीं देवीं देवानामभयप्रदाम् ।
त्रैलोक्यवन्दितां शुभ्रां जयामावाहयाम्यहम् ॥

ॐ बृह्वीनां पिता बहुरस्य पुत्रश्श्चिश्श्चांकृणोति समना-
वगत्य । इषुधिः सङ्काः पृतनाश्च सर्व्वाः पृष्ठे निनद्धो
जयाति प्रसूतः ॥

ॐ जयायै नमः, जयामावाहयामि स्थापयामि ॥ ८ ॥

'सर्वाङ्गधारिणीं देवीं०' यह श्लोक और 'ॐ विज्यं धनु०' इस मन्त्र से 'विजयामावाहयामि स्थापयामि' कहकर विजया का आवाहन और स्थापन करे ॥७॥ 'सुरारिमथिनीं देवीं०' से 'जयामावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त उच्चारण

मयूरवाहनां देवीं खड्ग-शक्ति-धनुर्धराम् ।
आवाहयेद् देवसेनां तारकासुरमर्दिनीम् ॥

ॐ इन्द्र ऽआसां नेता बृहस्पतिर्द्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः । देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम् ॥

ॐ देवसेनायै नमः, देवसेनामावाहयामि स्थापयामि ॥ ९ ॥

कर जया का आवाहन एवं स्थापन करे ॥ ८ ॥ 'मयूरवाहनां देवीं०' उक्त श्लोक एवं 'ॐ इन्द्र आसां नेता०' मन्त्र से 'देवसेनामावाहयामि स्थापयामि' तक कहकर देवसेनाका आवाहन और स्थापन करे ॥ ९ ॥

अग्रजा सर्वदेवानां कव्यार्थं या प्रतिष्ठिता ।
पितॄणां तृप्तिदां देवीं स्वधामावाहयाम्यहम् ॥

ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः । अक्षन्पितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम् ॥

ॐ स्वधायै नमः, स्वधामावाहयामि स्थापयामि ॥ १० ॥

'अग्रजा सर्वदेवानां०' यह श्लोक तथा 'ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः०' इस मन्त्र से आरम्भ कर 'स्वधामावाहयामि स्थापयामि' तक उच्चारण कर स्वधा का आवाहन एवं स्थापन करे ॥ १० ॥

हविर्गृहीत्वा सततं देवेभ्यो या प्रयच्छति ।
तां दिव्यरूपां वरदां स्वाहामावाहयाम्यहम् ॥

ॐ स्वाहा प्राणेभ्यः साधिपतिकेभ्यः । पृथिव्यै स्वाहाग्नये स्वाहान्तरिक्षाय स्वाहा वायवे स्वाहा । दिवे स्वाहा सूर्याय स्वाहा ॥

ॐ स्वाहायै नमः, स्वाहामावाहयामि स्थापयामि ॥ ११ ॥

'हविर्गृहीत्वा सततं०' यह श्लोक एवं 'ॐ स्वाहा प्राणेभ्यः०' मन्त्र से 'स्वाहामावाहयामि स्थापयामि' तक उच्चारण कर स्वाहा का आवाहन और स्थापन करे ॥ ११ ॥

आवाहयाम्यहं मातॄः सकलाः लोकपूजिताः ।
सर्वकल्याणरूपिण्यो वरदा दिव्यभूषणाः ॥

ॐ आपो ऽअस्मान्मातरः शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु । विश्वꣳ हि रिप्रं प्रवहन्ति देवीरुदिदाभ्यः शुचिरा पूत ऽएमि । दीक्षातपसोस्तनूरसि तां त्वा शिवाꣳशग्मां परिदधे भद्रं वर्णं पुष्यन् ॥

ॐ मातृभ्यो नमः, मातॄः आवाहयामि स्थापयामि ॥ १२ ॥

'आवाहयाम्यहं मातॄः०' उक्त श्लोक तथा 'ॐ आपो ऽअस्मान्०' इस मन्त्र से लेकर 'मातॄः आवाहयामि स्थापयामि' तक कहकर मातृ का आवाहन और स्थापन करे ॥ १२ ॥

आवाहयेल्लोकमातॄर्जयन्तीप्रमुखाः शुभाः ।
नानाऽभीष्टप्रदाः शान्ताः सर्वलोकहितावहाः ॥

ॐ रयिश्च मे रायश्च मे पुष्टं च मे पुष्टिश्च मे विभु च मे प्रभु च मे पूर्णं च मे पूर्णतरं च मे कुयवं च मेऽक्षितं च मेऽन्नं च मेऽक्षुच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥

ॐ लोकमातृभ्यो नमः, लोकमातॄः आवाहयामि स्थापयामि ॥ १३ ॥

'आवाहयेल्लोकमातॄः' यह श्लोक और 'ॐ रयिश्च मे०' मन्त्र से 'लोकमातॄः आवाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त पढ़कर लोकमातृ का आवाहन एवं स्थापन करे ॥ १३ ॥

सर्वहर्षकरीं देवीं भक्तानामभयप्रदाम् ।
हर्षोत्फुल्लास्यकमलां धृतिमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु । यस्मान्नऽऋते किञ्चन कर्म्म क्रियते तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥

ॐ धृत्यै नमः, धृतिमावाहयामि स्थापयामि ॥ १४ ॥

'सर्वहर्षकरीं देवीं०' यह श्लोक और 'ॐ यत्प्रज्ञानमुत०' इस मन्त्र से 'धृतिमावाहयामि स्थापयामि' तक उच्चारण कर धृति का आवाहन तथा स्थापन करे ॥१४॥

पोषयन्तीं जगत्सर्वं स्वदेहप्रभवैर्नवैः ।
शाकैः फलैर्जलैरत्नैः पुष्टिमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ अङ्गान्यात्मन्भिषजा तदश्विनात्मानमङ्गैः समधात्सरस्वती । इन्द्रस्य रूपꣳ शतमानमायुश्चन्द्रेण ज्योतिरमृतं दधानाः ॥

ॐ पुष्ट्यै नमः, पुष्टिमावाहयामि स्थापयामि ॥ १५ ॥

'पोषयन्तीं जगत्सर्वं०' यह श्लोक और 'ॐ' अङ्गान्यात्मन्०' इस मन्त्र से 'पुष्टिमावाहयामि स्थापयामि' तक उच्चारण कर पुष्टि का आवाहन एवं स्थापन करे ॥१५॥

देवैराराधितां देवीं सदा सन्तोषकारिणीम् ।
प्रसादसुमुखीं देवीं तुष्टिमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः ।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ॥

ॐ तुष्ट्यै नमः, तुष्टिमावाहयामि स्थापयामि ॥ १६ ॥

पत्तने नगरे ग्रामे विपिने पर्वते गृहे ।
नानाजातिकुलेशानीं दुर्गामावाहयाम्यहम् ॥

'देवैराराधितां देवीं०' यह श्लोक और 'ॐ जातवेदसे०' इस मन्त्र से 'तुष्टिमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त पढ़कर तुष्टि का आवाहन और स्थापन करे ॥१६॥

ॐ प्राणाय स्वाहाऽपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा। चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा॥

ॐ आत्मनः कुलदेवतायै नमः, आत्मनः कुलदेवतामावाहयामि स्थापयामि॥ १७॥

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामोँ३ प्रतिष्ठ॥

'पत्तने नगरे ग्रामे०' यह श्लोक एवं 'ॐ प्राणाय स्वाहा०' इस मन्त्र से 'आत्मनः कुलदेवतामावाहयामि स्थापयामि' तक उच्चारण कर अपने कुल देवी का आवाहन तथा स्थापन करे॥१७॥

गौर्याद्याः कुलदेवतान्तमातरो गणपतिसहिताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु ।

गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया ।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः ॥१॥
धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिः आत्मनः कुलदेवताः ।
गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्यास्तु षोडश ॥२॥

यजमान हाथ में अक्षत लेकर 'ॐ मनो जूतिः' इस मन्त्र से 'सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु' पर्यन्त उच्चारणकर षोडश मातृका पर अक्षत छिड़के। तथा 'गौरी पद्मा शची०' से आरम्भ कर 'वृद्धौ पूज्यास्तु षोडश' पर्यन्त दो श्लोक पढ़े।

ॐ गणपत्यादि-कुलदेवतान्त-मातृभ्यो नमः, इति पठित्वा, षोडशोपचारैः सम्पूज्य, प्रार्थयेत्—

आयुरारोग्यमैश्वर्यं ददध्वं मातरो मम ।
निर्विघ्नं सर्वकार्येषु कुरुध्वं सगणाधिपाः ॥

(चूडाकरणोपनयनविवाहेषु यथाकुलाचारं मातृभाण्डस्थापनम् ।)

इति षोडशमातृकापूजनं समाप्तम् ।

पुनः 'ॐ गणपत्यादि-कुलदेवतान्त-मातृभ्यो नमः' कहकर षोडश मातृका का षोडशोपचार से पूजन कर 'आयुरारोग्यमैश्वर्यं०' यह श्लोक पढ़कर प्रार्थना करे ।

(चूडाकरण (मुण्डन), यज्ञोपवीत एवं विवाह में अपने कुलाचार के अनुसार मातृभाण्ड का स्थापन एवं पूजन करे ।)

इस प्रकार षोडशमातृका-पूजन समाप्त ।

वसोर्द्धारापूजनम्

आग्नेय्यां भित्तौ कुङ्कुमादिना बिन्दुकरणेनाऽलङ्करणं कृत्वाऽऽगामिमन्त्रं पठन्, घृतेन सप्तधाराः प्राक्संस्था उदक्संस्था वा कुर्यात्।

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा॥

इति मन्त्रेण वसोर्द्धाराः कर्तव्याः। 'ॐ कामधुक्षः' इत्येतावता मन्त्रेण (धारामर्धभागेन) गुडेनैकीकरणम्। प्रतिधारामेकैकदेवतामावाहयेत्।

वसोर्द्धारा (सप्तघृतमातृका) पूजन - दीवाल या पीढ़ेपर अग्निकोण में रोरी या सिन्दूर से ऊपर श्री लिखकर उसके नीचे क्रम से एक से लेकर सात अर्थात् ऊपर एक, उसके नीचे दो, उसके नीचे तीन, इस प्रकार सात बिन्दु बनाकर

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीय । पशूनाꣳ रूपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा ॥

ॐ श्रियै नमः, श्रियमावाहयामि स्थापयामि ॥ १ ॥

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणामुम्म ऽइषाण

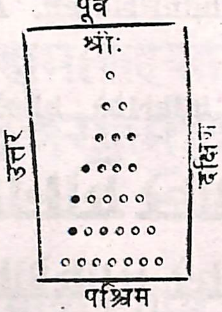
नीचे के सात बिन्दुओं में सात घी की धारा पूर्व अथवा उत्तर की ओर 'ॐ वसोः पवित्रमसि०' इस मन्त्र से 'सुप्वा' पर्यन्त पढ़ कर करें । और 'ॐ कामधुक्षः' कहकर गुड़ के चूरे से इन सातों घृत-धाराओं को अँगूठे से एक में मिला दे । स्पष्टार्थ चक्र निम्नलिखित है—

उसके बाद प्रत्येक धारा में एक-एक देवता का आवाहन करे । वह इस प्रकार है—

'ॐ मनसः काममाकूतिं' से 'श्रियमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त उच्चारण कर श्री का आवाहन एवं स्थापन करे ॥१॥

सर्व्वलोकम्मऽइषाण ।

सप्तघृत-मातृका-चक्रम्



ॐ लक्ष्म्यै नमः, लक्ष्मीमावाहयामि स्थापयामि ॥ २ ॥

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभि-र्यजत्राः । स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाᳬंसस्तनूभिर्व्यशेमहि

'ॐ श्रीश्च ते०' से 'लक्ष्मीमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त कह कर लक्ष्मी का आवाहन एवं स्थापन करे ॥ २ ॥

देवहितं यदायुः ॥

ॐ धृत्यै नमः, धृतिमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३ ॥

ॐ मेधां मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः ।
मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा ॥

ॐ मेधायै नमः, मेधामावाहयामि स्थापयामि ॥ ४ ॥

ॐ प्राणाय स्वाहा अपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा चक्षुषे

'ॐ भद्रं कर्णेभिः०' मन्त्र से 'धृतिमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त पढ़कर धृति का आवाहन और स्थापन करे ॥ ३ ॥

'ॐ मेधां मे वरुणो' इस मन्त्र से आरम्भकर 'मेधामावाहयामि स्थापयामि' तक उच्चारण कर मेधाका आवाहन एवं स्थापन करे ॥ ४ ॥

स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा ॥

ॐ स्वाहायै नमः, स्वाहामावाहयामि स्थापयामि ॥ ५ ॥

ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः ॥

ॐ प्रज्ञायै नमः, प्रज्ञामावाहयामि स्थापयामि ॥ ६ ॥

ॐ पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती यज्ञं वष्टु धियावसुः ॥

'ॐ प्राणाय स्वाहा०' से 'स्वाहामावाहयामि स्थापयामि' तक पढ़कर स्वाहा का आवाहन तथा स्थापन करे ॥५॥
'ॐ आयं गौः०' इस मन्त्र से 'प्रज्ञामावाहयामि स्थापयामि' तक पढ़ कर प्रज्ञाका आवाहन और स्थापन करे ॥ ६ ॥

ॐ सरस्वत्यै नमः, सरस्वतीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ७ ॥

ॐ श्रीर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती ।
माङ्गल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैता घृतमातरः ॥

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमं दधातु । विश्वे देवास इह मादयन्तामो३ प्रतिष्ठ ॥

'ॐ पावका नः सरस्वती०' से लेकर 'सरस्वतीमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त मन्त्रवाक्य कहकर सरस्वती का आवाहन एवं स्थापन करे ॥ ७ ॥ अथवा 'ॐ श्रीर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा०' यह श्लोक और ॐ वसोर्धारादेवताभ्यो नमः' तक पढ़कर सप्तघृतमातृका का आवाहन, स्थापन और पूजनकर प्रार्थना करे ।

इति मन्त्रेण वा। वसोर्धारादेवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु। 'ॐ वसोर्धारादेवताभ्यो नमः' इत्यावाह्य, सम्पूज्य च प्रार्थयेत्।

यदङ्गत्वेन भो देव्यः पूजिता विधिमार्गतः।
कुर्वन्तु कार्यमखिलं निर्विघ्नेन क्रतूद्भवम्॥

यजमानो हस्ते जलं गृहीत्वा, 'अनया पूजया वसोर्द्धारादेवताः प्रीयन्ताम्।' इत्युच्चार्य, भूमौ जलं क्षिपेत्।

इति वसोर्द्धाराकरणम्।

पुनः 'यदङ्गत्वेन भो देव्यः०' यह श्लोक पढ़कर सप्तघृतमातृका की प्रार्थना करे।

पश्चात् यजमान दाहिने हाथ में जल लेकर 'अनया पूजया०' इस वाक्य को पढ़कर भूमि पर जल छोड़ दे।

इस प्रकार वसोर्धारा पूजन समाप्त।

आयुष्यमन्त्रजपः (पाठः) । ततो ब्राह्मणाः-

यदायुष्यं चिरं देवाः सप्तकल्पान्तजीविषु ।
ददुस्तेनायुषा युक्ता जीवेम शरदः शतम् ॥१॥
दीर्घा नागा नगा नद्योऽनन्ताः सप्तार्णवा दिशः ।
अनन्तेनायुषा तेन जीवेम शरदः शतम् ॥२॥
सत्यानि पञ्चभूतानि विनाशरहितानि च ।
अविनाश्यायुषा तद्वज्जीवेम शरदः शतम् ॥३॥

ॐ आयुष्यं वर्च्चस्यꣳ रायस्पोषमौद्भिदम् । इदꣳहिरण्यं

वर्च्चँस्व जैत्रायाविँशाता दुमाम् ॥१॥ ॐ न तद्रक्षाꣳसि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमजꣳ ह्येतत् । यो बिभर्त्ति दाक्षायणꣳ हिरण्यꣳ स देवेषु कृणुते दीर्घमायुꣳ स मनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः ॥२॥ ॐ यदाबध्नन् दाक्षायणा हिरण्यꣳ शतानीकाय सुमनस्यमानाः । तन्म ऽआबध्नामि शतशारदायायुष्मान् जरदष्टिर्यथासम् ॥३॥

इत्यायुष्यमन्त्रजपः ।

आयुष्यमन्त्रपाठ—उसके बाद ब्राह्मणगण 'यदायुष्यं चिरं देवाः' से 'शरदः शतम्' पर्यन्त तीन श्लोक तथा 'ॐ आयुष्यं वर्चस्यꣳ०' से आरम्भ कर 'जरदष्टिर्यथासम्' पर्यन्त तीन मन्त्रों का पाठ करे । इस प्रकार आयुष्य मन्त्र जप (पाठ) समाप्त ।

नान्दीश्राद्धप्रयोगः

तत्पश्चात् साङ्कल्पिकेन विधिना[1] नान्दीश्राद्धं कुर्यात्। तद्यथा-पत्रावलिमध्ये प्रादक्षिण्येन चतुर्षु स्थानेषु ऋजून् कुशानास्तीर्य तदुपरि सङ्कल्पपूर्वकं पूजनं कुर्यात्। इदं श्राद्धं सव्येन[2] एव कुर्यात्।

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः। ॐ मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।

नान्दी श्राद्धप्रयोग—उसके बाद केवल संकल्प-द्वारा नान्दी श्राद्ध करे, जो इस प्रकार है—पूर्व दिशा की ओर विश्वेदेव के आसन पर उत्तराग्र कुशा स्थापित करे, एवं तीन आसन दक्षिण दिशा से पूर्वाग्र क्रम से—मातृ, पितामही तथा प्रपितामही के निमित्त प्रथम आसन और पितृ, पितामह तथा प्रपितामह के निमित्त द्वितीय आसन और सपत्नीक

---

१. भविष्यपुराणे—पिण्डनिर्वपणं कुर्य्यान्न वा कुर्य्यान्नराधिप !। वृद्धिश्राद्धे महाबाहो ! कुलधर्मानवेक्ष्य हि ॥

२. अनस्मद्वृद्धशब्दानामरूपाणामगोत्रिणाम्। अनाम्नामतिलाद्यैश्च नान्दीश्राद्धं च सव्यवत् ॥

ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः। ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।

आसनदानम्

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने

मातामह, प्रमातामह, वृद्ध प्रमातामह के लिये तीसरा आसन निर्मित करे। यह आसन एक में सटे नहीं रहना चाहिए। उन चारों आसन पर क्रम से विश्वेदेव सहित अपने पूर्वज पितरों का पूजन करे। जिसका क्रम इस प्रकार है—एक पत्तल पर पूर्व से दक्षिण क्रम सीधे चार कुशाओं को स्थापित कर उस पर संकल्प पूर्वक पूजन करे। यह श्राद्ध सव्य होकर करे।

पाद प्रक्षालन—हाथ में जल लेकर 'ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः' से 'पादप्रक्षालनं वृद्धिः' पर्यन्त वाक्य उच्चारण कर विश्वेदेव के आसन पर जल छोड़े। ॐ मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः' से 'पादप्रक्षालनं-वृद्धिः' पर्यन्त वाक्य

वो नमो नमः, नान्दीश्राद्धेक्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः। ॐ मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः, नान्दीश्राद्धेक्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्त्यो भवन्त्यः तथा प्राप्नुवामः। ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः, नान्दीश्राद्धेक्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः। ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमाता-

कहकर माता, दादी, परदादी के आसन पर जल छोड़े। 'ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहाः' से 'पादप्रक्षालनं वृद्धिः' तक वाक्य का उच्चारण कर पिता, दादा, परदादा के आसन पर जल छोड़ दे। 'ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः' से 'पादप्रक्षालनं वृद्धिः' पर्यन्त पढ़ कर नाना, नानी, परनाना, परनानी एवं वृद्ध परनाना, वृद्ध परनानी के आसन पर जल छोड़े।

आसनदान—हाथ में जल लेकर 'ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः' से 'तथा प्राप्नुवामः' पर्यन्त वाक्य पढ़कर विश्वेदेव के आसन पर कुशा रखे। 'ॐ मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः' से 'तथा प्राप्नुवामः' पर्यन्त वाक्य पढ़कर माता, दादी,

महाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः, नान्दीश्राद्धे्क्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः ।

गन्धादिदानम्

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः । ॐ मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः । ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं

परदादी के आसन पर कुशा रखे । 'ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहाः' से 'तथा प्राप्नुवामः' पर्यन्त उच्चारण कर पिता, दादा, परदादा के आसन पर कुशा रख, उन्हें आसन प्रदान करे । 'ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः' से 'तथा प्राप्नुवामः' पर्यन्त वाक्य उच्चारण कर नाना, परनाना, वृद्ध परनाना के आसन पर कुशा रखे ।

गन्धादिदान—'ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः' से 'गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः' तक वाक्य पढ़कर विश्वेदेव के आसन पर गन्ध (चन्दन), पुष्प चढ़ावे । 'ॐ मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः' से 'सम्पद्यतां वृद्धिः' पर्यन्त

स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः । ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ।

भोजननिष्क्रयदानम्

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्म-ब्राह्मणभोजन-पर्याप्ताऽऽमान्न-निष्क्रयभूतं द्रव्यममृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः । ॐ मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः

पढ़कर माता, दादी, परदादी के आसन पर गन्ध, पुष्प चढ़ावे। 'ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहाः' से 'सम्पद्यतां वृद्धिः' तक उच्चारण कर पिता, दादा, परदादा के आसन पर चन्दन और पुष्प चढ़ावे। 'ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्ध-प्रमातामहाः' से 'सम्पद्यतां वृद्धिः' पर्यन्त उच्चारणकर नाना, परनाना और वृद्ध परनाना के आसन पर गन्ध, पुष्प समर्पित करे।

भोजन-निष्क्रयदान—'ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः' से 'द्रव्यममृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः' तक उच्चारण

इदं[1] युग्म-ब्राह्मणभोजन-पर्याप्ताऽऽमान्न-निष्क्रयभूतं द्रव्यममृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्म-ब्राह्मणभोजन-पर्याप्ताऽऽमान्न-निष्क्रयभूतं द्रव्यममृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्म-ब्राह्मण-भोजन-पर्याप्ता-ऽऽमान्न-निष्क्रयभूतं द्रव्यममृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

कर त्रिश्वेदेव के आसन पर दो ब्राह्मणों के निमित्त भोजन-दक्षिणा प्रदान करे। 'ॐ मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः' से 'सम्पद्यतां वृद्धिः' पर्यन्त पढ़कर माता, दादी-परदादी के आसन पर दक्षिणा चढ़ावे। 'ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहाः' से 'सम्पद्यतां वृद्धिः' पर्यन्त वाक्य उच्चारण कर पिता, दादा और परदादा के आसन पर दक्षिणा समर्पित करे। 'ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः' से 'सम्पद्यतां वृद्धिः' तक वाक्य उच्चारण कर सपत्नीक नाना, परनाना, वृद्ध परनाना के आसन पर दक्षिणा प्रदान करे।

१. नान्दीश्राद्धे अन्नाभावे आमं, आमाभावे हिरण्यं, हिरण्याभावे युग्मब्राह्मण-भोजनपर्याप्तान्न-निष्क्रयीभूत-यथाशक्ति किञ्चिद् द्रव्यदानम्।—इति धर्मसिन्धौ।

स-क्षीर-यवमुदकदानम्

सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्। मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः प्रीयन्ताम्। पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्। मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्। चतुर्षु स्थानेषु–शिवा आपः सन्तु, इति जलम्। सौमनस्यमस्तु, इति पुष्पम्। अक्षतं चाऽरिष्टं चाऽस्तु, इत्यक्षतान्। ॐ

स-क्षीर-यवमुदकदान—एक मृत्तिका पात्र में दूध, जव, जल मिश्रित रख कर, उसे दाहिने हाथ में लेकर 'सत्यवसुसंज्ञकाः' से 'प्रीयन्ताम्' पर्यन्त उच्चारण कर विश्वेदेव के आसन पर छोड़ दे। पुनः 'मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः' से 'प्रीयन्ताम्' तक कह कर माता, दादी और परदादी के आसन पर दूध, जल मिश्रित जल छोड़ दे। तथा 'पितृ-पितामह-प्रपितामहाः' से 'प्रीयन्ताम्' पर्यन्त वाक्य पढ़कर पिता, दादा एवं परदादा के आसन पर उक्त जल छोड़ें। उसी प्रकार 'मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः' से 'प्रीयन्ताम्' तक उच्चारण कर सपत्नीक नाना, परनाना और वृद्धपरनाना के आसन पर उस कसोरे का जल छोड़ दे।

अघोराः पितरः सन्तु। इति पूर्वाग्रां जलधारां दद्यात्। इति समाचारः।

ततो यजमानः कृताञ्जलिः प्रार्थयेत्—

ॐ गोत्रन्नो वर्धतां दातारो नोऽभिवर्धन्तां वेदाः सन्ततिरेव च।
श्रद्धा च नो मा व्यगमद् बहु देयं च नोऽस्तु॥
अन्नं च नो बहु भवेदतिथींश्च लभेमहि।
याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कञ्चन॥

एताः सत्या आशिषः सन्तु। ब्राह्मणाः-सन्त्वेताः सत्या आशिष इति।

पुनः यजमान 'शिवा आपः सन्तु' कह कर चारों स्थानों में जल और 'सौमनस्यमस्तु' कह कर चारों स्थानों में पुष्प एवं 'अक्षतं चाऽरिष्टं चास्तु' पढ़ कर अक्षत चढ़ावे। तथा अंजलि में जल लेकर पूर्व की ओर से चारों स्थानों पर जल धारा छोड़े। ऐसा शिष्टाचार है।

दक्षिणादानम्

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फल-प्रतिष्ठा-सिद्ध्यर्थं द्राक्षा-ऽऽमलक-यव-मूलनिष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे। ॐ [1]मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फल-प्रतिष्ठा-सिद्ध्यर्थं द्राक्षा-ऽऽमलक-यव-मूलनिष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे। ॐ पितृ-पितामह-प्रपि-

---

पुनः यजमान हाथ जोड़ कर ब्राह्मणों से 'ॐ गोत्रं नो वर्धतां' से 'एताः सत्या आशिषः सन्तु' तक उच्चारण कर प्रार्थना करे। ब्राह्मण गण भी 'सन्त्वेताः सत्या आशिषः' इस प्रकार कहें।

दक्षिणादान—'ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः' से 'दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे' पर्यन्त पढ़ कर मुनक्का, आँवला, यव और अदरख मूल आदि निष्क्रय रूप दक्षिणा विश्वेदेव के आसन पर चढ़ावे। 'ॐ मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः' से

---

१. माता पितामही चैव तथैव प्रपितामही। पिता पितामहश्चैव तथैव प्रपितामहः ॥१॥
मातामहस्तत्पिता च प्रमातामहकादयः। एते भवन्तु सुप्रीताः प्रयच्छन्तु च मङ्गलम् ॥२॥

तामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फल-प्रतिष्ठा-सिद्ध्यर्थं द्राक्षा-ऽऽमलक-यव-मूलनिष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे ।

ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठा-सिद्ध्यर्थं द्राक्षा-ऽऽमलक-यव-मूल-निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे ।

ॐ उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे ॥ अभि देवाँ २॥ इयक्षते । ॐ इडामग्ने पुरुदꣳसꣳ सनिं गोः

दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे' तक कह कर माता, दादी एवं परदादी के आसन पर उक्त दक्षिणा चढ़ावे । 'ॐ पिता-पितामह-प्रपितामहाः' से 'दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे' तक पढ़ कर पिता, दादा, परदादा के आसन पर दक्षिणा भेंट करे । 'ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः' से 'दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे' तक उच्चारण कर सपत्नीक नाना, परनाना, वृद्धपरनाना के आसन पर पूर्वोक्त दक्षिणा चढ़ावे ।

शंश्वत्तमः हवमानाय साधे। स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे॥

इत्यनेन नान्दीश्राद्धं सम्पन्नम्-इति यजमानः। ब्राह्मणाः सुसम्पन्नम्।

विसर्जनम्

ॐ वाजेवाजेऽवत वाजिनो नो धनेषु विप्रा ऽअमृता ऽऋतज्ञाः। अस्य मद्ध्वः पिबत मादयद्ध्वं तृप्ता यात पथिभिर्देवयानैः॥१॥ ॐ आ मा वाजस्य प्रसवो जगम्यात्

पुनः 'ॐ उपास्मै गायता नरः' से 'सुमतिर्भूत्वस्मे' पर्यन्त मन्त्र पढ़ 'नान्दीश्राद्धं सम्पन्नम्' इस प्रकार यजमान ब्राह्मणों से कहे। ब्राह्मण लोग भी, 'सुसम्पन्नम्' ऐसा कह दें।

विसर्जन—उसके बाद यजमान हाथ में अक्षत लेकर 'ॐ वाजेवाजेऽवत॰' से आरम्भ कर 'अमृतत्वेन गम्यात्' पर्यन्त

देमे द्यावापृथिवी विश्वरूपे। आ मां गन्तां पितरा मातरा चा मा सोमोऽअमृतत्वेन गम्यात् ॥ २ ॥

इति मन्त्राभ्यां पितृ-पितामह-प्रपितामहानां तथा मातृ-पितामही-प्रपितामहीनामेवं सपत्नीक-मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहानामासनोपरि-अक्षतान् प्रक्षिप्य विसर्जयेत्।

पुनर्विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्—इत्युक्त्वा विश्वेदेव-विसर्जनं कुर्यात्।

यजमानः-मयाऽऽचरिते साङ्कल्पिकनान्दीश्राद्धे न्यूनातिरिक्तो यो विधिः

दो मन्त्र पढ़ कर पिता, दादा, परदादा तथा माता, दादी, परदादी एवं सपत्नीक नाना, परनाना तथा वृद्ध परनाना इन तीनों के आसन पर अक्षत छिड़क कर विसर्जन करे।

पुनः 'विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्' कह कर विश्वेदेव के आसन पर अक्षत छिड़क विश्वेदेव का भी विसर्जन करे।

स उपविष्टब्राह्मणानां वचनात्-श्रीगणेशप्रसादाच्च परिपूर्णोऽस्तु—इति वदेत्।
'अस्तु परिपूर्णः' इति ब्राह्मणाः वदेयुः।

इत्याचार्य-पण्डित-श्रीशिवदत्तमिश्रशास्त्रिविरचित-ग्रहशान्तिपद्धतौ

नान्दीश्राद्धप्रयोगः समाप्तः।

आचार्यादिवरणम्

उदङ्मुखमाचार्यमुपवेश्य, गन्धादिभिः सम्पूज्य, ॐ अमुकगोत्रोत्पन्नः अमुकप्रवरान्वितः अमुकशर्माऽहम् अमुकगोत्रोत्पन्नममुकप्रवरान्वितं शुक्लयजुर्वेदान्तर्गतवाजसनेय-माध्यन्दिनीयशाखाध्यायिनममुकशर्माणं ब्राह्मणमस्मिन् ग्रहशान्त्याख्ये (अमुकाख्ये वा) कर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः आचार्यत्वेन

तत्पश्चात् यजमान 'मयाऽऽचरिते' से 'परिपूर्णोऽस्तु' पर्यन्त वाक्य ब्राह्मणों से कहे। ब्राह्मण लोग भी 'अस्तु परिपूर्णः' इस प्रकार कहें।

इस प्रकार नान्दी श्राद्ध प्रयोग समाप्त।

आचार्यादिकों का वरण—उत्तराभिमुख आचार्य को बैठाकर यजमान गन्ध, अक्षत और पुष्प से उनका पूजन करे। तथा दाहिने हाथ में जल एवं वरण सामग्री-धोती, अँगोछा, दुपट्टा लेकर 'ॐ अमुकगोत्रोत्पन्नः' से 'आचार्यत्वेन त्वामहं

त्वामहं वृणे–इति यजमानः। 'वृतोऽस्मि' इति ब्राह्मणः। यजमानः–

आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः।

तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन्नाचार्यो भव सुव्रत ! ॥ १ ॥

अस्मिन् ग्रहशान्त्याख्ये (अमुकाख्ये वा) कर्मणि एभिर्वरणद्रव्यै-रमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे। इति यजमानः। 'वृतोऽस्मि' इति ब्राह्मणः। यजमानः–

यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्वलोकपितामहः।

तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् ब्रह्मा भव द्विजोत्तम ! ॥ २ ॥

वृणे' पर्यन्त संकल्प-वाक्य उच्चारण कर भूमि पर जल छोड़ दे। आचार्य भी 'वृतोऽस्मि' इस प्रकार करें।

पुनः यजमान 'आचार्यस्तु यथा स्वर्गे०' यह श्लोक पढ़ कर आचार्य की प्रार्थना करे।

ब्रह्मा का वरण—यजमान हाथ में जल एवं वरण-सामग्री लेकर 'अस्मिन् ग्रहशान्त्याख्ये कर्मणि०' से ब्रह्मत्वेन

ग्र० पृ० १५०

यजमानः—अस्मिन् ग्रहशान्त्याख्ये (अमुकाख्ये वा) कर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैरमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं सदस्यत्वेन त्वामहं वृणे। ब्राह्मणः—'वृतोऽस्मि' इति वदेत्। यजमानः—

> भगवन् सर्वधर्मज्ञ सर्वधर्मभृतांवर।
> वितते मम यज्ञेऽस्मिन् सदस्यो भव सुव्रत ! ॥ ३ ॥

अस्मिन् ग्रहशान्त्याख्ये कर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैरमुकगोत्रममुकशर्माणं

त्वामहं वृणे' तक संकल्प पढ़ कर भूमि पर जल छोड़ ब्रह्मा का वरण करे। और ब्रह्मा भी 'वृतोऽस्मि' इस प्रकार कह दें। फिर यजमान 'यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा०' यह श्लोक कह कर ब्रह्मा की प्रार्थना करे।

सदस्य वरण—यजमान हाथ में जल एवं वरण सामग्री लेकर 'अस्मिन् ग्रहशान्त्याख्ये' से 'सदस्यत्वेन त्वामहं वृणे' पर्यन्त संकल्प-वाक्य उच्चारण कर भूमि पर जल छोड़ सदस्य का वरण करे। सदस्य (ब्राह्मण) भी 'वृतोऽस्मि' ऐसा कहें। पुनः यजमान 'भगवन् सर्वधर्मज्ञ०' यह श्लोक पढ़ कर सदस्य की प्रार्थना करे।

गाणपत्य वरण—यजमान हाथ में जल एवं वरण-सामग्री लेकर 'अस्मिन् ग्रहशान्त्याख्ये०' से 'गाणपत्यत्वेन त्वा-

आ० पृ० १५०

ब्राह्मणं गाणपत्यत्वेन त्वामहं वृणे ।: विप्रः–'वृतोऽस्मि' । इति निगदेत् ।

यजमानः—

वाञ्छितार्थफलावाप्त्यै पूजितोऽसि सुराऽसुरैः ।
निर्विघ्नं क्रतुसंसिद्ध्यै त्वामहं गणपं वृणे ॥ ४ ॥

अस्मिन् ग्रहशान्त्याख्ये कर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैरमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणम् उपद्रष्टृत्वेन त्वामहं वृणे । विप्रः–'वृतोऽस्मि' । यजमानः–

भगवन् सर्वधर्मज्ञ सर्वधर्मपरायण ! ।
वितते मम यज्ञेऽस्मिन्नुपद्रष्टा भव द्विज ! ॥ ५ ॥

महं वृणे' तक कह कर भूमि पर जल छोड़ गाणपत्यका वरण करे । गाणपत्य भी 'वृतोऽस्मि' इस प्रकार कह दें । और यजमान 'वाञ्छितार्थफलावाप्त्यै०' यह श्लोक कह कर गाणपत्य की प्रार्थना करे ।

अस्मिन् ग्रहशान्त्याख्ये कर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैरमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं ऋत्विक्त्वेन त्वामहं वृणे, इति यजमानः। 'वृतोऽस्मि' इति विप्रप्रतिवचनम्। यजमानः—

भगवन् सर्वधर्मज्ञ सर्वधर्मपरायण! ।
वितते मम यज्ञेऽस्मिन्नृत्विक् त्वं मे मखे भव ॥ ६ ॥

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम् ।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥

उपदेष्टा का वरण—यजमान हाथमें जल एवं वरण-सामग्री लेकर 'अस्मिन् ग्रहशान्त्याख्ये कर्मणि०' से 'उपद्रष्टृत्वेन त्वामहं वृणे' पर्यन्त संकल्प उच्चारण कर भूमि पर जल छोड़ उपद्रष्टा का वरण करे। उपद्रष्टा भी 'वृतोऽस्मि' ऐसा कहे। फिर यजमान 'भगवन् सर्वधर्मज्ञ०' यह श्लोक पढ़ कर उपद्रष्टा की प्रार्थना करे।

ततो यजमानः करसम्पुटं कृत्वा, सर्वान् प्रार्थयेत्–

अक्रोधनाः शौचपराः सततं ब्रह्मचारिणः ।
ग्रहध्यानरताः नित्यं प्रसन्नमनसः सदा ॥ १ ॥
अदुष्टभक्षणाः सन्तु मा सन्तु परनिन्दकाः ।
ममाऽपि नियमा ह्येते भवन्तु भवतामपि ॥ २ ॥
ऋत्विजश्च यथा पूर्वं शक्रादीनां मखेऽभवन् ।
यूयं तथा मे भवत ऋत्विजो द्विजसत्तमाः ॥ ३ ॥

ऋत्विक् (होता) का वरण—यजमान हाथ में जल और वरण-सामग्री लेकर 'अस्मिन् ग्रहशान्त्याख्ये कर्मणि०' से आरम्भकर 'ऋत्विक्त्वेन त्वामहं वृणे' पर्यन्त उच्चारण कर भूमि पर जल छोड़ हवनकर्ता का वरण करे । हवनकर्ता भी

अस्मिन् कर्मणि ये विप्राः वृता गुरुमुखादयः ।
सावधानाः प्रकुर्वन्तु स्वं स्वं कर्म यथोदितम् ॥ ४ ॥
अस्य यागस्य निष्पत्तौ भवन्तोऽभ्यर्थिता मया ।
सुप्रसन्नैः प्रकर्तव्यं कर्मेदं विधिपूर्वकम् ॥ ५ ॥
यथाविहितं कर्म कुरुध्वम् । विप्राः–यथाज्ञानं करवामः, इति वदेयुः ।

इत्याचार्यादिवरणं समाप्तम् ।

'वृतोऽस्मि' इस प्रकार कहे। तथा यजमान 'भगवन् सर्वधर्मज्ञ०' इस श्लोक द्वारा होता की प्रार्थना करे। तथा 'ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति०' से 'सत्यमाप्यते' पर्यन्त मन्त्र का उच्चारण करे। तत्पश्चात् यजमान हाथ जोड़ 'अक्रोधनाः शौचपराः' से 'कर्मेदं विधिपूर्वकम्' पर्यन्त पाँच श्लोक पढ़कर वृणीत ब्राह्मणों की प्रार्थना करते हुए 'यथाविहितं कर्म कुरुध्वम्' इस प्रकार कहे। समस्त वृणीत ब्राह्मण गण भी 'यथाज्ञानं करवामः' इस प्रकार कहें। इस प्रकार आचार्यादि वरण समाप्त।

दिग्-रक्षणम्

आचार्यः आचम्य, प्राणानायम्य। देशकालौ सङ्कीर्त्य, अस्मिन् ग्रहशान्त्याख्ये कर्मणि यजमानेन वृतोऽहम् आचार्यकर्म करिष्ये। इति भूमौ जलं क्षिपेत्। ततः आचार्यो वामहस्ते गौरसर्षपान् गृहीत्वा, दिग्-रक्षणं कुर्यात्। तत्र मन्त्राः—

ॐ रक्षोहणं वलगहनं वैष्णवीमिदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे निष्ट्यो यममात्यो निचखानेदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे समानो यमसमानो निचखानेदमहं तं वलगमुत्किरामि

दिग्-रक्षण – यजमान द्वारा वृणीत आचार्य पूर्वाभिमुख बैठ आचमन, प्राणायाम करे। और दाहिने हाथ में जल लेकर 'देशकालौ सङ्कीर्त्य' से 'आचार्यकर्म करिष्ये' पर्यन्त संकल्प-वाक्य पढ़ भूमि पर जल छोड़ दे।

यं मे सबन्धुर्य्यमसबन्धुर्निचखानेदमहं तं व्वलगमुत्किरामि
यं मे सजातो यमसजातो निचखानोत्कृत्याङ्किरामि ॥ १ ॥
रक्षोहणो वो व्वलगहनः प्प्रोक्षामि व्वैष्णवान्रक्षोहणो वो
व्वलगहनोऽवनयामि व्वैष्णवान्रक्षोहणो वो व्वलगहनोऽव-
स्तृणामि व्वैष्णवान्रक्षोहणौ वां व्वलगहना ऽउपदधामि
व्वैष्णवी रक्षोहणौ वां व्वलगहनौ पर्य्यूहामि व्वैष्णवी
व्वैष्णवमसि व्वैष्णवाः स्थ ॥ २ ॥ रक्षसां भागोऽसि निरस्तः

उसके बाद आचार्य बायें हाथ में सफेद या पीली सरसों लेकर दाहिने हाथ से 'ॐ रक्षोहणं०' से 'सधस्थमसदत'

रक्षऽइदमह रक्षोऽभितिष्ठामीदमह रक्षोऽवबाध ऽइद-
मह रक्षोऽधमं तमो नयामि। घृतेन द्यावापृथिवी प्रोर्णुवाथां
वायो वेस्तोकानामग्निराज्यस्य वेतु स्वाहा स्वाहाकृते
ऽऊर्ध्वनभसं मारुतं गच्छतम् ॥३॥ रक्षोहा विश्वचर्षणिरभि
योनिमयोहते। द्रोणे सधस्थमासदत् ॥ ४ ॥

यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वदा।
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु ॥ १ ॥

पर्यन्त चार मन्त्र एवं 'यदत्र संस्थितं भूतं' से 'ग्रहयागं करोम्यहम्' पर्यन्त चार श्लोक पढ़ कर पूर्व आदि दिशाओं में

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः ।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥ २ ॥
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम् ।
सर्वेषामविरोधेन पूजाकर्म समारभे ॥ ३ ॥
भूतानि राक्षसा वाऽपि येऽत्र तिष्ठन्ति केचन ।
ते सर्वेऽप्यपगच्छन्तु ग्रहयागं करोम्यहम् ॥ ४ ॥
इति तिष्ठन् पूर्वादिदिक्षु विकिरेत् । उदकोपस्पर्शः ।

इति दिग्-रक्षणं समाप्तम् ।

छोड़ते हुए दिग्-रक्षण करे । और आचार्य अपने आँख, कान में जल का स्पर्श करे । इस प्रकार दिग्-रक्षण समाप्त ।

ततः पञ्चगव्यकरणम्

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो न: प्रचोदयात् ॥१॥ इति गायत्रीमन्त्रेण गोमूत्रं स्थापयेत् ।

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ २ ॥

इति मन्त्रेण गोमयं त्यजेत् ।

ॐ आप्प्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम् । भवा वाजस्य सङ्गथे ॥ ३ ॥ इत्यनेन दुग्धं प्रक्षिपेत् ।

पञ्चगव्य करण—एक मिट्टी के कसोरे में 'ॐ तत्सवितु०' इस गायत्री मन्त्र से गोमूत्र, 'गन्धद्वारां०' इससे

ॐ दधिक्राव्णो॑ ऽअकारिषं जिष्णोरश्व॑स्य वाजिन॑:।
सुरभि नो॒ मुखा॑ करत्प्रण॒ ऽआयू॑ᳪषि तारिषत् ॥ ४ ॥

इति मन्त्रेण दधि प्रक्षिपेत् ।

ॐ तेजो॑ऽसि शुक्रम॑स्यमृत॑मसि धाम॒नामा॑ऽसि प्रियं
दे॒वाना॒मना॑धृष्टन्देव॒यज॑नमसि ॥५॥ इत्यनेन घृतं प्रक्षिपेत् ।

ॐ दे॒वस्य॑ त्वा सवि॒तुः प्रस॒वे॑ऽश्विनो॑र्बा॒हुभ्यां॑ पू॒ष्णो
हस्ताभ्याम् ॥ ६ ॥ इत्यनेन कुशोदकं सम्मेलयेत् ।

गोबर, 'ॐ आप्यायस्व०' इस मन्त्र से दूध, 'ॐ दधिक्रा०ण०' इस मन्त्र से दही, 'ॐ तेजोऽसि०' इस मन्त्र से घी और ॐ देवस्य त्वा०' इस मन्त्र से कुशा का जल मिलावे ।

पुनः यज्ञकाष्ठेनालोड्य, 'आपो हि ष्ठेति' त्रिभिर्मन्त्रैः कर्मभूमिं यज्ञसम्भारांश्च प्रोक्षयेत्। ततः कृताञ्जलिः 'स्वस्ति न०' इति मन्त्रं द्विवारं पठेत्। पुनः भूमौ प्रादेशं कृत्वा। देवाः आयान्तु। यातुधाना अपयान्तु। विष्णोर्देवयजनं रक्षस्व॥ एवं प्रकारेणाचार्यः कुर्यात्।

इति पञ्चगव्यकरणम्।

पुनः यज्ञकाष्ठ (समिधा) से पंचगव्य को मथ कर 'ॐ आपो हिष्ठा०' आदि तीन मन्त्रों से यज्ञ भूमि एवं स्रुवा, स्रुचि, प्रणीता पात्र, प्रोक्षणीपात्र, समिधा और कुशा आदि पर उस पंचगव्य को कुशा द्वारा आचार्य छिड़के। और हाथ जोड़ कर 'ॐ स्वस्तिन इन्द्र०' इस मन्त्र का दो बार पाठ करे।

उसके बाद भूमि में दाहिने हाथ की अंगुष्ठ और अनामिका अँगुलि को फैला कर 'देवाः आयान्तु' से अपनी अंजलि को हृदय में लगा कर 'यातुधाना अपयान्तु' पढ़ कर अंजलि को बाहर की ओर करते हुए 'विष्णोर्देवयजनं रक्षस्व' इस प्रकार आचार्य कहे।

इस प्रकार पंचगव्य करण समाप्त।

सर्वतोभद्र-लिङ्गतोभद्रमण्डलदेवतास्थापनं पूजनं च

ततः [1]सर्वतोभद्रमण्डलं लिङ्गतोभद्रं[2] वा विरचय्य, तत्र देवतास्थापनं कुङ्कुमादिना पूजनं च कृत्वा, सर्वतोभद्रे लिङ्गतोभद्रे वा कलशस्थापनविधिना कलशं स्थापयित्वा, कलशोपरि अग्न्युत्तारणपूर्वक-प्रधानप्रतिमां संस्थाप्य, विधिना सम्पूजयेत्। तद्यथा–

सर्वतोभद्र-लिङ्गतोभद्र देवता स्थापनक्रम––एक दो हाथ लम्बी, दो हाथ चौड़ी, चौकोर चौकी पर नारा द्वारा रोरी से सर्वतोभद्र एव लिङ्गतो भद्र बनाकर, उसपर तद्-तद् (उन-उन) देवताओं का स्थापन और पूजन कर उस चौकी के मध्य कलश स्थापन विधि से ताँबा या मृत्तिका का कलश स्थापित करे। और उस पर अग्न्युत्तारण पूर्वक प्राण-प्रतिष्ठा द्वारा सुवर्ण की प्रधान प्रतिमा (मूर्ति) का स्थापन एवं पूजन करे। जो इस प्रकार है—

---

१. सर्वतोभद्रकारिका स्कान्दे—प्रागुदीच्यां गता रेखाः कुर्यादेकोनविंशतिः। खण्डेन्दुस्त्रिपदः श्वेतः पञ्चभिः कृष्णशृङ्खलाः ॥ १ ॥
नीलैकादश वल्ली तु भद्रं रक्तं पदैर्नव। चतुर्विंशतिसता वापी परिधिः पीतविंशतिः ॥ २ ॥
मध्ये षोडशभिः कोष्ठैः रक्तं पद्मं सकर्णिकम्। परिध्यावेष्टितं पद्मं बाह्ये सत्त्वं रजस्तमः ॥
तन्मध्ये स्थापयेद्देवान् ब्रह्माद्यांश्च सुरेश्वरान् ॥ ३ ॥

२. लिङ्गतोभद्रकारिका स्कान्दे—रेखा त्वष्टादश प्रोक्ताश्चतुर्लिङ्गसमुद्भवे। कोणेन्दुस्त्रिपदः श्वेतस्त्रिपदैः कृष्णशृङ्खलाः ॥ १ ॥
वल्ली सप्तपदा नीला भद्रं रक्तं चतुष्पदम्। भद्रपार्श्वे महारुद्रं [illegible]दशैः पदैः ॥ २ ॥

वेदोक्त-सर्वतोभद्र-लिङ्गतोभद्रदेवतास्थापनक्रमः । तद्यथा-

ॐ ब्रह्म यज्ज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् विसीमतः सुरुचो वेन ऽआवः । स बुध्न्या ऽउपमा ऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥

(मध्ये कर्णिकायाम्) ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि ॥ १ ॥

शिवस्य पार्श्वतो वापीं कुर्यात् पञ्चपदां सिताम् । पदमेकं तथा पीतं भद्रवाप्योस्तु मध्यतः ॥ ३ ॥
शिरसि शृङ्खलायाश्च कुर्यात् पीतं पदत्रयम् । लिङ्गानां स्कन्धतः कोष्ठा विंशती रक्तवर्णका ॥ ४ ॥
परिधिः पीतवर्णस्तु पदैः षोडशभिः स्मृता । पदैस्तु नवभिः पश्चाद्रक्तं पद्मं सकर्णिकम् ॥ ५ ॥

पञ्च वर्णान्युक्तानि पञ्चरात्रे-रजांसि पञ्च वर्णानि मण्डलार्थं हि कारयेत् । शालितण्डुलचूर्णेन शुक्लं वा यवसम्भवम् ॥ १ ॥
रक्तं कुसुम्भसिन्दूरं गैरिकादिसमुद्भवम् । हरितालोद्भवं पीतं रजनीसम्भवैः क्वचित् ॥ २ ॥
कृष्णदग्धैर्यवैः कार्यं हरितं बिल्वचूर्णकम् । कारयेत् सर्वधान्यैर्वा वर्णकैरुपशोभितम् ॥ ३ ॥

ॐ व्वयᳪ सोम व्व्रते तव मनस्तनूषु विब्भ्रतः । प्रजा-
वन्तः सचेमहि ॥

(उत्तरे वाप्याम्) ॐ भूर्भुवः स्वः सोमाय नमः, सोममावाहयामि
स्थापयामि ॥ २ ॥

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्प्पतिं धियं जिन्न्वमवसे

'ॐ ब्रह्म यज्ञानं०' से आरम्भकर 'असतश्च विवः' पर्यन्त मन्त्र पढ़कर 'ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि' कहकर कर्णिका के मध्य में ब्रह्मा का आवाहन और पूजन करे ॥ १ ॥

'ॐ वयᳪ सोम०' इस मन्त्र से 'सोममावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त उच्चारणकर वापी के उत्तर दिशा में सोमका आवाहन एवं पूजन करे ॥ २ ॥

हूमहे व्वयम् । पूषा नो यथा व्वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥

(ईशान्यां खण्डेन्दौ) ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानाय नमः, ईशानमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३ ॥

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳ हवे हवे सुहवꣳ शूरमिन्द्रम् । ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रꣳ स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः ॥

'ॐ तमीशानं जगतः०' इस मन्त्र से 'ईशानमावाहयामि स्थापयामि' तक उच्चारणकर खण्डेन्दु के ईशानकोण में ईशान का आवाहन तथा स्थापन-पूजन करे ॥ ३ ॥

(पूर्वे वाप्याम्) ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४ ॥

ॐ त्वन्नो ऽअग्ने तव देव पायुभिर्म्मघोनो रक्ष तन्न्वश्च वन्द्य ।
त्राता तोकस्य तनये गवामस्यनिमेषꣳ रक्षमाणस्तव व्व्रते ॥

(आग्नेय्यां खण्डेन्दौ) ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः, अग्निमावाहयामि स्थापयामि ॥ ५ ॥

ॐ सुमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा । स्वाहा घर्म्माय

'ॐ त्रातारमिन्द्र०' से 'इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि' कहकर वापी के पूर्व दिशा में इन्द्रका आवाहन-स्थापन एवं पूजन करे ॥ ४ ॥

'ॐ त्वन्नो ऽअग्ने०' से 'अग्निमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त पढ़कर खण्डेन्दु के अग्निकोण में अग्नि का आवाहन और पूजन करे ॥ ५ ॥

स्वाहा घर्म्मः पित्रे ॥

(दक्षिणे वाप्याम्) ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः, यममावाहयामि स्थापयामि ॥ ६ ॥

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त ऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ॥

(नैर्ऋत्यां खण्डेन्दौ) ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋतये नमः, निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि ॥ ७ ॥

'ॐ यमाय त्वा०' से 'यममावाहयामि स्थापयामि' तक उच्चारणकर वापी के दक्षिण दिशा में यमका आवाहन और पूजन करे ॥ ६ ॥

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशꣳस मा न ऽआयुः प्रमोषीः॥

(पश्चिमे वाप्याम्) ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः, वरुणमावाहयामि स्थापयामि ॥ ८ ॥

ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरꣳ सहस्रिणीभिरुप-

'ॐ असुन्वन्तं०' मन्त्र से 'निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि' तक कहकर खण्डेन्दु के नैर्ऋत्य कोण में निर्ऋति का आवाहन और पूजन करे ॥ ७ ॥

'ॐ तत्त्वा यामि०' मन्त्र से 'वरुणमावाहयामि स्थापयामि' तक कहकर वापीके पश्चिम दिशा में वरुण का आवाहन-स्थापन और पूजन करे ॥ ८ ॥

याहि सुज्ञम् । व्वायोऽअस्म्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥

(वायव्यां खण्डेन्दौ) ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः, वायुमावाहयामि स्थापयामि ॥ ६ ॥

ॐ व्वसुब्भ्यस्त्वा रुद्रेब्भ्यस्त्वाऽऽदित्येब्भ्यस्त्वा सञ्जा-नाथां द्यावापृथिवी मित्रावरुणौ त्वा व्वृष्ट्यावताम् । व्यन्तु व्वयोक्तः रिहाणा मरुतां पृषतीर्गच्छ व्वशा पृश्निर्ब्भूत्वा

'ॐ आनो नियुद्भिः०' से 'वायुमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त पढ़ कर खण्डेन्दु के वायव्य कोण में वायु का आवाहन और स्थापन-पूजन करे ॥ ६ ॥

दिवं गच्छ ततो नो व्वृष्टिमावह । चक्षुष्प्पा ऽअग्ग्नेऽसि चक्षुर्म्मे पाहि ॥

(वायु-सोमयोर्मध्ये भद्रे) ॐ भूर्भुवः स्वः अष्टवसुभ्यो नमः, अष्टवसून् आवाहयामि स्थापयामि ॥ १० ॥

ॐ नमस्ते रुद्द्र मन्यव ऽउतो त ऽइषवे नमः । बाहुब्भ्यामुत ते नमः ॥

(सोमेशानयोर्मध्ये भद्रे) ॐ भूर्भुवः स्वः एकादशरुद्रेभ्यो नमः, एकादशरुद्रानावाहयामि स्थापयामि ॥ ११ ॥

'ॐ वसुभ्यस्त्वा०' मन्त्र से 'अष्टवसून् आवाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त उच्चारण कर वायु-सोम के मध्य भद्र में अष्टवसु का आवाहन और पूजन करे ॥ १० ॥

ॐ यज्ञो देवानां प्रत्यैति सुम्म्नमादित्यासो भवता मृडयन्तः । आवोऽर्वाची सुमतिर्व्ववृत्त्यादꣳहोश्चिद्या वरिवोवित्तरासत् ॥

(ईशानेन्द्रमध्ये भद्रे) ॐ भूर्भुवः स्वः द्वादशादित्येभ्यो नमः, द्वादशादित्यानावाहयामि स्थापयामि ॥ १२ ॥

ॐ अश्विना तेजसा चक्षुः प्प्राणेन सरस्वती वीर्य्यम् ।

'ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव०' इस मन्त्र से 'एकादशरुद्रानावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त पढ़कर सोम-ईशान के मध्य-भद्र में एकादशरुद्रों का आवाहन एवं पूजन करे ॥ ११ ॥

'ॐ यज्ञो देवानां०' इस मन्त्र से 'द्वादशादित्यानावाहयामि स्थापयामि' तक कह कर ईशान-इन्द्र के मध्य भद्र में द्वादशादित्य का आवाहन-स्थापन एवं पूजन करे ॥ १२ ॥

वा॒चेन्द्रो॑ बले॑नेन्द्रा॑य दधु॒रिन्द्रि॒यम् ॥

(इन्द्राग्निमध्ये भद्रे) ॐ भूर्भुवः स्वः अश्विभ्यां नमः, अश्विनौ आवाहयामि स्थापयामि ॥ १३ ॥

ॐ विश्वे॑देवास॒ऽआग॑त शृणु॒ता म॑ऽइ॒मꣳहव॑म् । एदं ब॒र्हिर्निषी॑दत । उ॒प॒या॒मगृ॑हीतोऽसि॒ विश्वे॑भ्यस्त्वा दे॒वेभ्य॑ऽए॒ष ते॒ योनि॒र्विश्वे॑भ्यस्त्वा दे॒वेभ्यः॑ ॥

(अग्नि-यममध्ये भद्रे) ॐ भूर्भुवः स्वः स-पैतृकविश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः, स-पैतृक-विश्वान् देवानावाहयामि स्थापयामि ॥ १४ ॥

'ॐ अश्विना तेजसा०' इस मन्त्र से 'अश्विनौ आवाहयामि स्थापयामि' तक कह कर इन्द्र-अग्नि के मध्य भद्र में दोनों अश्विनी का आवाहन और पूजन करे ॥ १३ ॥

ॐ अभि त्यं देवꣳ सवितारमोण्योः कविक्रतुमर्च्चामि सत्यसवꣳ रत्नधामभि प्रियं मतिं कविम्। ऊर्द्ध्वा यस्यामतिर्भाऽअदिद्युतत्सवीमनि हिरण्यपाणिरमिमीत सुक्रतुः कृपा स्वः। प्रजाभ्यस्त्वा प्रजास्त्वानुप्राणन्तु प्रजास्त्वमनुप्राणिहि ॥

(यम-निर्ऋतिमध्ये भद्रे) ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तयक्षेभ्यो नमः, सप्तयक्षानावाहयामि स्थापयामि ॥ १५ ॥

'ॐ विश्वेदेवास०' से 'स-पैतृक-विश्वान् देवानावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त पढ़ कर अग्नि-यम के मध्य-भद्र में स-पैतृक विश्वेदेव का आवाहन-स्थापन और पूजन करे ॥ १४ ॥

ॐ नमोऽस्तु सर्प्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु । ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्प्पेभ्यो नमः ॥

(निर्ऋति-वरुणमध्ये भद्रे) ॐ भूर्भुवः स्वः अष्टकुलनागेभ्यो नमः, अष्टकुलनागानावाहयामि स्थापयामि ॥ १६ ॥

ॐ ऋताषाडृतधामाग्निर्गन्धर्वस्तस्यौषधयोऽप्सरसो मुदो नाम । स न इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा

'ॐ अभि त्यं०' से 'सप्तयक्षानावाहयामि स्थापयामि' तक उच्चारण कर यम-निर्ऋति के मध्य-भद्र में सप्तयक्षों का आवाहन और पूजन करे ॥ १५ ॥

'ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यः०' मन्त्र से 'अष्टकुलनागानावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त पढ़ कर निर्ऋति-वरुण के मध्य-भद्र में अष्टकुल नागों का आवाहन-स्थापन एवं पूजन करे ॥ १६ ॥

वाट् ताभ्यः स्वाहा ॥

(वरुण-वायुमध्ये भद्रे) ॐ भूर्भुवः स्वः गन्धर्वाऽप्सरोभ्यो नमः, गन्धर्वाऽप्सरसः आवाहयामि स्थापयामि ॥ १७ ॥

ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान ऽउद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात् । श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहूऽउपस्तुत्यं महि जातं ते ऽअर्वन् ॥

(ब्रह्म-सोममध्ये वाप्यां लिङ्गे वा) ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दाय नमः, स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि ॥ १८ ॥

'ॐ ऋताषाड्०' इस मन्त्र से 'गन्धर्वाऽप्सरसः आवाहयामि स्थापयामि' तक कह कर वरुण-वायु के मध्य भद्र में गन्धर्वाप्सराओं का आवाहन-पूजन करे ॥ १७ ॥

ॐ आशुः शिशानो व्वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्। सङ्क्रन्दनोऽनिमिषऽएकवीरः शतᳪसेनाऽअजयत्साकमिन्द्रः ॥

(तदुत्तरे) ॐ भूर्भुवः स्वः वृषभाय नमः, वृषभमावाहयामि स्थापयामि ॥ १६ ॥

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्या ऽउन्नयामि। समापो

'ॐ यदक्रन्दः०' मन्त्र से 'स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त कह कर ब्रह्म-सोम के मध्य वापी अथवा लिङ्ग में स्कन्द का आवाहन-स्थापन और पूजन करे ॥ १८ ॥

'ॐ आशुः शिशानः०' मन्त्र से 'वृषभमावाहयामि स्थापयामि' तक उच्चारण कर ब्रह्म-सोम के मध्य उत्तर में वृषभ का आवाहन एवं पूजन करे ॥ १६ ॥

ऽअद्भिरग्ग्मत समोषधीभिरोषधीः ॥

(तदुत्तरे) ॐ भूर्भुवः स्वः शूलाय नमः, शूलमावाहयामि स्थापयामि ॥ २० ॥

अनेनैव मन्त्रेण तदुत्तरे—ॐ भूर्भुवः स्वः महाकालाय नमः, महाकालमावाहयामि स्थापयामि ॥ २१ ॥

ॐ शुक्रज्ज्योतिश्च चित्रज्ज्योतिश्च सत्यज्ज्योतिश्च ज्योतिष्मांश्च । शुक्रश्च ऽऋतपाश्चात्यंहाः ॥

'ॐ कार्षिरसि०' मन्त्र से शूलमावाहयामि स्थापयामि' तक उच्चारण कर वृषभ के आगे शूल का आवाहन एवं पूजन करे ॥ २० ॥ इसी मन्त्र से 'महाकालमावाहयामि स्थापयामि' तक कह कर शूल के आगे महाकाल का आवाहन-स्थापन व पूजन करे ॥ २१ ॥

(ब्रह्मेशानमध्ये शृङ्खलायाम्) ॐ भूर्भुवः स्वः दक्षादि-सप्तगणेभ्यो नमः, दक्षादिसप्तगणानावाहयामि स्थापयामि ॥ २२ ॥

ॐ अम्बे ऽम्बिके ऽम्बालिके न मा नयति कश्चन।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्।

(ब्रह्मेन्द्रमध्ये वाप्यां लिङ्गे वा) ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गायै नमः, दुर्गामावाहयामि स्थापयामि ॥ २३ ॥

'ॐ शुक्रज्योतिश्च०' मन्त्र से 'दक्षादिसप्तगणानावाहयामि स्थापयामि' तक कह कर ब्रह्म-ईशान के मध्य शृंखला में दक्षादिसप्त गणों का आवाहन एवं पूजन करे ॥ २२ ॥

'ॐ अम्बे ऽअम्बिके०' से 'दुर्गामावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त मन्त्र-वाक्य का उच्चारण कर ब्रह्म-इन्द्र के मध्य वापी या लिङ्ग में दुर्गा का आवाहन तथा पूजन करे ॥ २३ ॥

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाᳪसुरे स्वाहा ॥

(तत्पूर्वे) ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि स्थापयामि ॥ २४ ॥

ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन्पितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त

'ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे०' मन्त्र से 'विष्णुमावाहयामि स्थापयामि' तक कह कर दुर्गा के पूर्वभाग में विष्णु का आवाहन और पूजन करे ॥ २४ ॥

पितरं॒ पित॑रं॒ शुन्ध॑द्ध्वम् ॥

(ब्रह्माग्निमध्ये शृंखलायाम्) ॐ भूर्भुवः स्वः स्वधायै नमः, स्वधामावाहयामि स्थापयामि ॥ २५ ॥

ॐ परं मृ॒त्यो ऽअनु॒ परे॑हि॒ पन्थां॒ यस्ते॑ ऽअ॒न्य ऽइत॑रो देव॒याना॑त् । चक्षु॑ष्मते शृ॒ण्व॒ते ते॑ ब्रवीमि॒ मा नः॑ प्र॒जाᳬ रीरिषो॒ मोत वी॒रान् ॥

(ब्रह्म-यममध्ये वाप्याम् लिङ्गे वा) ॐ मृत्युरोगेभ्यो नमः, मृत्युरोगान् आवाहयामि स्थापयामि ॥ २६ ॥

'ॐ पितृभ्यः०' मन्त्र से 'स्वधामावाहयामि स्थापयामि' तक पढ़कर ब्रह्मा-अग्नि के मध्य शृंखला में स्वधा का आवाहन पूजन करे ॥ २५ ॥

ॐ गणानां त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिꣳ हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ॥

(ब्रह्म-निर्ऋतिमध्ये शृङ्खलायाम्) ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि स्थापयामि ॥ २७ ॥

ॐ अप्स्वग्ने सधिष्टव सौषधीरनु रुध्यसे। गर्भे

'ॐ परं मृत्योऽअनु०' मन्त्र से 'मृत्युरोगानावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त मन्त्र-वाक्यों का उच्चारण कर ब्रह्म-यमके मध्य वापी में मृत्यु-रोगों का आवाहन और पूजन करे ॥ २६ ॥

ॐ गणानां त्वा०' से 'गणपतिमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त कहकर ब्रह्म-निर्ऋति के मध्य शृंखला में गणपति का आवाहन-स्थापन और पूजन करे ॥ २७ ॥

सञ्ज्ञायसे पुनः ॥

(ब्रह्म-वरुणमध्ये वाप्याम्) ॐ भूर्भुवः स्वः अद्भ्यो नमः, अपः आवाहयामि स्थापयामि ॥ २८ ॥

ॐ मरुतो यस्य हि क्षये पाथा दिवो विमहसः । स सुगोपातमो जनः ॥

(ब्रह्म-वायुमध्ये शृङ्खलायाम्) ॐ भूर्भुवः स्वः मरुद्भ्यो नमः, मरुतः आवाहयामि स्थापयामि ॥ २९ ॥

'ॐ अप्स्वग्ने०' से 'अपः आवाहयामि स्थापयामि' तक उच्चारण कर ब्रह्म-वरुण के मध्य वापी में अपका आवाहन और पूजन करे ॥ २८ ॥

'ॐ मरुतो यस्य०' इस मन्त्र से 'मरुतः आवाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त उच्चारण कर ब्रह्म-वायु के मध्य शृंखला में मरुत् का आवाहन-पूजन करे ॥ २९ ॥

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी । यच्छा नः शर्म्म सप्रथाः ॥

(ब्रह्मणः पादमूले) ॐ भूर्भुवः स्वः पृथिव्यै नमः, पृथ्वीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३० ॥

ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः । सरस्वती तु पञ्चधा सो देशे ऽभवत्सरित् ॥

(तदुत्तरे) ॐ भूर्भुवः स्वः गङ्गादिनदीभ्यो नमः, गङ्गादिनदीः आवाहयामि स्थापयामि ॥ ३१ ॥

'ॐ स्योना पृथिवि नो०' मन्त्र से 'पृथ्वीमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त उच्चारण कर ब्रह्मा के पाद मूल में पृथ्वी का आवाहन-स्थापन तथा पूजन करे ॥ ३० ॥

ॐ समुद्रोऽसि नभस्वानार्द्रदानुः शम्भूर्म्मयोभूरभि मा वाहि स्वाहा । मारुतोऽसि मरुतां गणः शम्भूर्म्मयोभूरभि मा वाहि स्वाहा । अवस्यूरसि दुवस्वाञ्छम्भूर्म्मयोभूरभि मा वाहि स्वाहा ॥

(तदुत्तरे) ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तसागरेभ्यो नमः, सप्तसागरान् आवाहयामि स्थापयामि ॥ ३२ ॥

'ॐ पञ्च नद्यः०' मन्त्र से 'गङ्गादिनदीः आवाहयामि स्थापयामि' तक उच्चारण कर पृथ्वी के बाद गङ्गादि नदियों का आवाहन एवं स्थापन-पूजन करे ॥ ३१ ॥

'ॐ समुद्रोऽसि०' इस मन्त्र से 'सप्तसागरानावाहयामि स्थापयामि' तक कहकर गङ्गादि-नदियों के आगे सप्तसागरों का आवाहन एवं पूजन करे ॥ ३२ ॥

ॐ प्र पर्व्वतस्य व्वृषभस्य पृष्ठान्नावश्चरन्ति स्वसिच ऽइयानाः । ता ऽआववृत्रन्नधरागुदक्ता अहिम्बुध्न्यमनु रीयमाणाः । व्विष्णोर्व्विक्क्रमणमसि व्विष्णोर्व्विक्क्रान्तमसि व्विष्णोः क्क्रान्तमसि ॥

(कर्णिकापरिधौ) ॐ भूर्भुवः स्वः मेरवे नमः, मेरुमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३३ ॥   ततः सोमादिक्रमेण-

ॐ गणानां त्वा गणपतिः हवामहे प्रियाणां त्वा

'ॐ प्र पर्वतस्य०' से 'मेरुमावाहयामि स्थापयामि' तक उच्चारण कर कर्णिका की परिधि में मेरुका आवाहन और पूजन करे ॥ ३३ ॥

प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनां त्वां निधिपतिꣳ हवामहे व्वसो मम । आहमजानि गर्ब्भधमा त्वमजासि गर्ब्भधम् ॥

(सत्त्वबाह्यपरिधौ) ॐ भूर्भुवः स्वः गदायै नमः, गदामावाहयामि स्थापयामि ॥ ३४ ॥

ॐ त्रिꣳशद्धाम व्विराजति व्वाक् पतङ्गाय धीयते । प्रतिवस्तोरह द्युभिः ॥

(ईशान्याम्) ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिशूलाय नमः, त्रिशूलमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३५ ॥

'ॐ गणानां त्वा०' मन्त्र से 'गदामावाहयामि स्थापयामि' तक वाक्य का उच्चारण कर सोमादिक्रम से सत्त्व के बाहर परिधि में गदा का आह्वन और पूजन करे ॥ ३४ ॥

ॐ महाँ२॥ इन्द्रो वज्रहस्तः षोडशी शर्म्म यच्छतु । हन्तु पाप्मानं योऽस्मान्द्वेष्टि । उपयामगृहीतोऽसि महेन्द्राय त्वैष ते योनिर्महेन्द्राय त्वा ॥

(पूर्वे) ॐ भूर्भुवः स्वः वज्राय नमः, वज्रमावाहयामि स्थापयामि ॥३६॥

ॐ वसु च मे वसतिश्च मे कर्म्म च मे शक्तिश्च मेऽर्थश्च म एमश्च म इत्या च मे गतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥

'ॐ त्रिꣳशद्धाम त्रिराजति०' मन्त्र से 'त्रिशूलमावाहयामि स्थापयामि' तक कहकर सोमादि क्रम से सत्त्व परिधि के ईशान भाग में त्रिशूल का आवाहन और पूजन करे ॥३५॥ 'ॐ महाँ इन्द्रो०' मन्त्र से 'वज्रमावाहयामि स्थापयामि' तक उच्चारण कर सत्त्व परिधि के पूर्व भाग में वज्र का आवाहन और पूजन करे ॥ ३६ ॥

(आग्नेय्याम्) ॐ भूर्भुवः स्वः शक्तये नमः, शक्तिमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३७ ॥

ॐ इड ऽएह्यदित ऽएहि काम्म्या ऽएत । मयि वः कामधरणं भूयात् ॥

(दक्षिणे) ॐ भूर्भुवः स्वः दण्डाय नमः, दण्डमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३८ ॥

ॐ खड्गो वैश्वदेवः श्वा कृष्णः कर्णो गर्दभस्तरक्षुस्ते

'ॐ वसु च मे०' से 'शक्तिमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त मन्त्र-वाक्य का उच्चारण कर सत्त्व-परिधिके अग्नि कोण में शक्ति का आवाहन एवं पूजन करे ॥ ३७ ॥

'ॐ इड एह्यदित०' इस मन्त्र से 'दण्डमावाहयामि स्थापयामि' तक कहकर सत्त्व-परिधिके दक्षिण दिशा में दण्ड का आवाहन-स्थापन और पूजन करे ॥ ३८ ॥

रक्षसामिन्द्राय सूकरः सिᳪहो मारुतः कृकलासः पिप्पका शकुनिस्ते शरव्यायै विश्वेषां देवानां पृषतः ॥

(नैऋर्त्याम्) ॐ भूर्भुवः स्वः खड्गाय नमः, खड्गमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३९ ॥

ॐ उदुत्तमं व्वरुण पाशमस्मदवाधमं व्वि मध्यमᳪश्रथाय अथा व्वयमादित्य व्व्रते तवानागसो ऽअदितये स्याम ॥

(पश्चिमे) ॐ भूर्भुवः स्वः पाशाय नमः, पाशमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४० ॥

'ॐ खड्गो वैश्वदेवः' से 'खड्गमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त मन्त्र-वाक्य उच्चारण कर सत्त्व परिधि के नैऋर्त्य कोण में खड्ग का आवाहन-पूजन करे ॥ ३९ ॥

ॐ अꣳशुश्च मे रश्मिश्च मेऽदाभ्यश्च मेऽधिपतिश्च
मऽउपाꣳशुश्च मेऽन्तर्यामश्च म ऽऐन्द्रवायवश्च मे
मैत्रावरुणश्च मेऽआश्विनश्च मे प्रतिप्रस्थानश्च मे
शुक्रश्च मे मन्थी च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥

(वायव्याम्) ॐ भूर्भुवः स्वः अङ्कुशाय नमः, अङ्कुशमावाहयामि
स्थापयामि ॥ ४१ ॥

‘ॐ उदुत्तमं वरुण०’ इस मन्त्र से ‘पाशमावाहयामि स्थापयामि’ तक उच्चारण कर सत्त्वपरिधिकी पश्चिम
दिशा में पाश का आवाहन एवं पूजन करे ॥ ४० ॥

‘ॐ अꣳशुश्च मे०’ से ‘अङ्कुशमावाहयामि स्थापयामि’ पर्यन्त मन्त्र-वाक्य उच्चारण कर सत्त्व परिधि के वायव्य
कोण में अङ्कुशका आवाहन तथा पूजन करे ॥ ४१ ॥

ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः । पितरञ्च प्रयन्त्स्वः ॥

(तद्बाह्ये उत्तरे रक्तपरिधौ सोमादिक्रमेण) ॐ भूर्भुवः स्वः गौतमाय नमः, गौतममावाहयामि स्थापयामि ॥ ४२ ॥

ॐ अयं दक्षिणा विश्वकर्म्मा तस्य मनो वैश्वकर्म्मणं ग्रीष्म्मो मानसस्त्रिष्टुब्ग्रैष्म्मी त्रिष्टुभः स्वारꣳस्वारादन्तर्य्यामोऽन्तर्य्यामात्पञ्चदशः पञ्चदशाद्बृहद्भरद्वाज ऽऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया मनो गृह्णामि प्रजाभ्यः ॥

(ईशान्याम्) ॐ भूर्भुवः स्वः भरद्वाजाय नमः, भरद्वाजमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४३ ॥

ॐ इदमुत्तरात्स्वस्तस्य श्रोत्रंᳲ सौवᳲशरच्छ्रौत्र्यनुष्टुप् शारद्यनुष्टुभं ऽऐडमैडान्मन्थी मन्थिनं ऽएकविᳲश ऽएकविᳲ शौद्वराजं विश्वामित्र ऽऋषिः प्रजापति-गृहीतया त्वया श्रोत्रं गृह्णामि प्रजाभ्यः ॥

'ॐ आयं गौः०' मन्त्रसे 'गौतममावाहयामि स्थापयामि' तक उच्चारण कर परिधि के बाहर, उसके बाद रक्त परिधि में सोमादि क्रम से गौतम का आवाहन-स्थापन एवं पूजन करे ॥ ४२ ॥

'ॐ अयं दक्षिणा०' मन्त्र से 'भरद्वाजमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त पढ़कर रक्तपरिधिके ईशानकोण में भरद्वाज का अवाहन-स्थापन एवं पूजन करे ॥ ४३ ॥

(पूर्वे) ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वामित्राय नमः, विश्वामित्रमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४४ ॥

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम्। यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषम् ॥

(आग्नेय्याम्) ॐ भूर्भुवः स्वः कश्यपाय नमः, कश्यपमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४५ ॥

ॐ अयं पश्चाद्विश्वव्यचास्तस्य चक्षुर्वैश्वव्यचसं वर्षा-

'ॐ इदमुत्तरात्स्वस्तस्य०' इस मन्त्र से 'विश्वामित्रमावाहयामि स्थापयामि' तक उच्चारणकर रक्त परिधि के पूर्व दिशा में विश्वामित्र का आवाहन एवं पूजन करे ॥ ४४ ॥ 'ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः०' इस मन्त्र से 'कश्यपमावाहयामि स्थापयामि' तक कहकर रक्तपरिधि के अग्निकोण में कश्यपका आवाहन तथा पूजन करे ॥ ४५ ॥

श्चांक्षुष्यो जगती व्वार्षी जगत्याऽऋक्सम्मृक्सम्माच्छुक्रः शुक्रात्सप्तदशः सप्तदशाद्वैरूपं जमदग्निर्ऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया चक्षुर्गृह्णामि प्रजाभ्यः ॥

(दक्षिणे) ॐ भूर्भुवः स्वः जमदग्नये नमः, जमदग्निमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४६ ॥

ॐ अयं पुरो भुवस्तस्य प्राणो भौवायनो वसन्तः प्राणायनो गायत्री वासन्ती गायत्र्यै गायत्रं गायत्रादु-

'ॐ अयं पश्चाद०' मन्त्र से 'जमदग्निमावाहयामि स्थापयामि' तक कहकर रक्त परिधिके दक्षिण दिशा में जमदग्नि का आवाहन एवं पूजन सम्पन्न करे ॥ ४६ ॥

पा॒ꣳशुरु॒पा॒ꣳशोस्त्रि॒वृत्त्रि॒वृतौ॑ रथन्त॒रं व॒सिष्ठ॒ ऽऋषि॑ः प्र॒जाप॑तिगृहीतया॒ त्वया॒ प्रा॒णं गृ॑ह्णामि प्र॒जाभ्य॑ः ॥

(नैर्ऋत्याम्) ॐ भूर्भुवः स्वः वसिष्ठाय नमः, वसिष्ठमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४७ ॥

ॐ अत्र॑ पि॒तरो मादयद्ध्वं य॒थाभा॒गमावृ॑षायद्ध्वम् । अमी॑मदन्त पि॒तरो॑ यथाभा॒गमावृ॑षायिषत ॥

(पश्चिमे) ॐ भूर्भुवः स्वः अत्रये नमः, अत्रिमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४८ ॥

'ॐ अयं पुरो भुवः०' प्रस्तुत मन्त्र तथा 'वसिष्ठमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त उच्चारण कर रक्तपरिधिके नैर्ऋत्यकोण में वसिष्ठ का आवाहन और पूजन करे ॥ ४७ ॥

ॐ तं पत्नीभिरनुगच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुतवा हिरण्यैः । नाकं गृभ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठेऽअधिरोचने दिवः ॥

(वायव्याम्) ॐ भूर्भुवः स्वः अरुन्धत्यै नमः, अरुन्धतीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४९ ॥ तद्बाह्ये, कृष्णपरिधौ, पूर्वादिक्रमेण ।

ॐ अदित्यै रास्न्नासीन्द्राण्या ऽउष्णीषः । पूषासि

'ॐ अत्र पितरः०' मन्त्र से 'अत्रिमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त मन्त्र एवं वाक्य का उच्चारण कर रक्तपरिधि के पश्चिम दिशामें अत्रि का आवाहन तथा पूजन करे ॥ ४८ ॥

'ॐ तं पत्नीभिः०' मन्त्र से 'अरुन्धतीमावाहयामि स्थापयामि' तक कहकर रक्तपरिधि के वायव्य कोण में अरुन्धती का आवाहन और पूजन करे ॥ ४९ ॥

घर्म्माय दीष्व ॥

(पूर्वे) ॐ भूर्भुवः स्वः ऐन्द्र्यै नमः, ऐन्द्रीमावाहयामि स्थापयामि ॥५०॥

ॐ अम्बे ऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥

(आग्नेय्याम्) ॐ भूर्भुवः स्वः कौमार्य्यै नमः, कौमारीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ५१ ॥

'ॐ अदित्यै रास्नासीन्द्राण्या०' से 'ऐन्द्रीमावाहयामि स्थापयामि' तक पढ़कर रक्त परिधि के बाहर कृष्ण परिधि के पूर्व दिशा में ऐन्द्री का आवाहन और पूजन करे ॥ ५० ॥

'ॐ अम्बे ऽअम्बिके०' मन्त्र से 'कौमारीमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त मन्त्र और वाक्य का उच्चारण कर कृष्ण परिधि के अग्नि कोण में कौमारी का आवाहन और पूजन करे ॥ ५१ ॥

ॐ इन्द्रायाहि धियेषितो विप्रजूतः सुतावतः । उप ब्रह्माणि वाघतः ॥

(दक्षिणे) ॐ भूर्भुवः स्वः ब्राह्मयै नमः, ब्राह्मीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ५२ ॥

ॐ इन्द्रस्य क्रोडोऽदित्यै पाजस्यं दिशां जत्रवोऽदित्यै भसज्जीमूतान्हृदयौपशेनान्तरिक्षं पुरीतता नभऽउदर्येण चक्रवाकौ मतस्नाभ्यां दिवं वृक्काभ्यां गिरीन्प्लाशि-

---

'ॐ इन्द्रायाहि०' से 'ब्राह्मीमावाहयामि स्थापयामि' तक पढ़कर कृष्ण परिधि के दक्षिण दिशा में ब्राह्मी का आवाहन और पूजन करे ॥ ५२ ॥

भिरुपलाँल्लुहा व्वल्मीकान्क्लोमभिर्ग्ग्लौभिर्ग्गुल्मा-
न्हिराभिः स्रवन्तीर्ह्रदान्कुक्षिभ्याँ समुद्रमुदरेण व्वैश्वानरं
भस्मना ॥

(नैर्ऋत्याम्) ॐ भूर्भुवः स्वः वाराह्यै नमः, वाराहीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ५३ ॥

ॐ अम्बे ऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन ।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥

'ॐ इन्द्रस्य क्रोडो०' मन्त्र से लेकर 'वाराहीमावाहयामि स्थापयामि' तक कहकर कृष्ण परिधि के नैर्ऋत्य कोण में वाराही का आवाहन-स्थापन और पूजन करना चाहिए ॥ ५३ ॥

ग्रह० पृ० २००

सर्व० स्था० २००

(पश्चिमे) ॐ भू० चामुण्डायै नमः, चामुण्डामावाहयामि स्थापयामि ॥५४॥

ॐ आप्प्यायस्व समेतु ते विश्श्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य सङ्गथे ॥

(वायव्ये) ॐ भूर्भुवः स्वः वैष्णव्यै नमः, वैष्णवीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ५५ ॥

ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्न्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि ॥

'ॐ अम्बे ऽअम्बिके०' से 'चामुण्डामावाहयामि स्थापयामि' तक उच्चारण कर कृष्ण परिधि के पश्चिमदिशा में चामुण्डा का आवाहन एवं पूजन करना चाहिए ॥५४॥ 'ॐ आप्यायस्व०' से 'वैष्णवीमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त मन्त्र-वाक्य का समुच्चारण कर कृष्णपरिधि के वायव्य कोण में वैष्णवी का आवाहन एवं पूजन करे ॥ ५५ ॥

(उत्तरे) ॐ भूर्भुवः स्वः माहेश्वर्यै नमः, माहेश्वरीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ५६ ॥

ॐ समक्ख्ये देव्व्या धिया सन्दक्षिणायोरुचक्क्षसा । मा मु ऽआयुः प्प्रमोषीम्मो ऽअहं तव व्वीरं व्विदेय तव देवि सन्दृशि ॥

(ईशान्याम्) ॐ भूर्भुवः स्वः वैनायक्यै नमः, वैनायकीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ५७ ॥ इति सर्वतोभद्रदेवतास्थापनक्रमः समाप्तः ।

'ॐ या ते रुद्र शिवा०' इस मन्त्र से 'माहेश्वरीमावाहयामि स्थापयामि' तक कहकर कृष्ण परिधिके उत्तर दिशा में माहेश्वरी का आवाहन एवं पूजन करे ॥ ५६ ॥

सर्वतोभद्रदेवतापेक्षया लिङ्गतोभद्रदेवताविशेषः

ॐ नमः कृत्स्नायतया धावते सत्त्वनां पतये नमो नमः सहमानाय निव्याधिने ऽआव्याधिनीनां पतये नमो नमो निषङ्गिणे ककुभाय स्तेनानां पतये नमो नमो निचेरवे परिचरायारण्यानां पतये नमः॥

'ॐ समक्ख्ये दे०था०' इस मन्त्र से लेकर 'वैनायकीमावाहयामि स्थापयामि' तक वाक्य उच्चारण कर कृष्ण परिधि के ईशान कोण में वैनायकी का आवाहन और पूजन करना चाहिए ॥ ५७ ॥

इस प्रकार सर्वतोभद्र देवताओं का स्थापन एवं पूजन क्रम समाप्त ।

सर्वतोभद्र में लिङ्गतोभद्र विशिष्ट देवताओंकी स्थापना—**सर्वतोभद्र मण्डलस्थ देवताओंके आवाहन, स्थापन एवं पूजन क्रममें कुछ लिङ्गतो भद्र मण्डल के देवताओंके भी आवाहन, स्थापन एवं पूजन का विधान इस प्रकार है ।**

(सर्वतोभद्र-कृष्णपरिधितो वाह्ये पूर्वे) ॐ भूर्भुवः स्वः असिताङ्गभैरवाय नमः, असिताङ्गभैरवमावाहयामि स्थापयामि ॥ १ ॥

ॐ श्वित्र ऽआदित्यानामुष्ट्रो घृणीवान् वार्ध्रीनसस्ते मत्या ऽअरण्याय सृमरो रुरूरौद्रः क्कयिः कुटरुर्दात्यौहस्ते वाजिनां कामाय पिकः ॥

(आग्नेय्याम्) ॐ भूर्भुवः स्वः रुरुभैरवाय नमः, रुरुभैरवमावाहयामि स्थापयामि ॥ २ ॥

अष्टभैरव स्थापन — 'ॐ नमः कृत्स्नायतया०' से 'असिताङ्गभैरमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त मन्त्र एवं वाक्य उच्चारण कर सर्वतो भद्र मण्डलस्थ कृष्ण परिधि के बाहर पूर्व दिशा में असिताङ्गभैरव का आवाहन-स्थापन और पूजन करे ॥ १ ॥

ॐ उग्ग्रं ल्लोहितेन मित्रᳬ सौव्व्रत्त्येन रुद्द्रं दौर्व्व्रत्त्येनेन्द्द्रं प्प्रक्क्रीडेन मरुतो बलेन साध्ध्यान्प्प्रमुदा । भवस्य कण्ठ्यᳬ रुद्द्रस्यान्तःपाश्श्र्व्यं महादेवस्य यकृच्छर्व्वस्य वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत् ॥

(दक्षिणे) ॐ भूर्भुवः स्वः चण्डभैरवाय नमः, चण्डभैरवमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३ ॥

'ॐ शिवत्र आदित्यानाम्०' से लेकर 'रुरुभैरवमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त मन्त्र-वाक्य उच्चारण कर अग्नि कोण में रुरुभैरव का आवाहन, स्थापन तथा पूजन करे ॥ २ ॥

'ॐ उग्रं लोहितेन०' से 'चण्डभैरवमावाहयामि स्थापयामि' तक उच्चारण कर दक्षिण दिशा में चण्डभैरव का आवाहन-स्थापन और पूजन करे ॥ ३ ॥

ॐ इन्द्रस्य क्रोडोऽदित्यै पाजस्यन्दिशाञ्जत्रवो दित्यै भसज्जीमूतान्हृदयौपशेनान्तरिक्षं पुरीततानभ ऽउदर्य्येण चक्रवाकौमतस्नाभ्यान्दिवं व्वृक्काभ्याङ्गिरीन्प्लाशिभिरुपलान्प्लीह्हा व्वल्म्मीकान्क्लोमभिग्ग्लौभिर्ग्गुल्म्मान्हिराभिः स्रवन्तीर्ह्रदान्कुक्षिभ्याᳬं समुद्रमुदरेण व्वैश्वानरम्भस्मना ॥

(नैर्ऋत्याम्) ॐ भूर्भुवः स्वः क्रोधभरवाय नमः, क्रोधभैरवमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४ ॥

प्रह० प० २०५ १८

लि० स्था० २०

ॐ उन्नत ऽऋषभो वामनस्तऽऐन्द्रावैष्णावाऽउन्नतः-शितिबाहुः शितिपृष्ठस्त ऽऐन्द्राबार्हस्पत्याः शुकरूपा वाजिनाः कल्माषाऽआग्निमारुताः श्यामाः पौष्णाः ॥

(पश्चिमे) ॐ भूर्भुवः स्वः उन्मत्तभैरवाय नमः, उन्मत्तभैरवमावाहयामि स्थापयामि ॥ ५ ॥

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्या ऽउन्नयामि ।

'ॐ इन्द्रस्य क्रोडोदित्यै०' मन्त्र से 'क्रोधभैरवमावाहयामि स्थापयामि०' तक वाक्य उच्चारण कर नैर्ऋत्य कोण में क्रोध भैरव का आवाहन और स्थापन करे ॥ ४ ॥

'ॐ उन्नत ऋषभो०' से 'उन्मत्तभैरवमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त मन्त्र-वाक्य का उच्चारण कर पश्चिम दिशा में उन्मत्त भैरव का आवाहन-स्थापन और पूजन करे ॥ ५ ॥

समापो ऽअद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः ॥

(वायव्याम्) ॐ भूर्भुवः स्वः कपालभैरवाय नमः, कपालभैरवमा-वाहयामि स्थापयामि ॥ ६ ॥

ॐ उग्रश्च भीमश्च ध्वान्तश्च धुनिश्च । सासह्वाँश्चा-भियुग्वा च विक्षिपः स्वाहा ॥

(उत्तरे) ॐ भूर्भुवः स्वः भीषणभैरवाय नमः, भीषणभैरवमावाहयामि स्थापयामि ॥ ७ ॥

'ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य०' मन्त्र से आरम्भ कर 'कपालभैरवमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त कहकर वायव्य कोण में कपालभैरव का आवाहन और स्थापन करे ॥ ६ ॥ 'ॐ उग्रश्च भीमश्च०' से 'भीषणभैरवमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त पढ़ कर उत्तर दिशा में भीषण भैरव का आवाहन-स्थापन एवं पूजन करे ॥ ७ ॥

ॐ नमः॑ शम्भ॒वाय॑ च मयोभ॒वाय॑ च॒ नमः॑ शङ्क॒राय॑ च मयस्क॒राय॑ च॒ नमः॑ शि॒वाय॑ च शि॒वत॑राय च ॥

(ईशान्याम्) ॐ भूर्भुवः स्वः संहारभैरवाय नमः, संहारभैरवमावाहयामि स्थापयामि ॥ ८ ॥

ॐ नमः॑ श्वभ्यः॑ श्वप॑तिभ्यश्च वो॒ नमो॒ नमो॑ भ॒वाय॑ च रु॒द्राय॑ च नमः॑ श॒र्वाय॑ च पशु॒पत॑ये च॒ नमो॒ नील॑ग्रीवाय च शितिक॒ण्ठाय च ॥

'ॐ नमः शम्भवाय च०' से 'संहारभैरवमावाहयामि स्थापयामि' तक उच्चारण कर ईशान कोण में संहार भैरव का आवाहन-स्थापन एवं पूजन करे ॥ ८ ॥

(तद्बाह्ये पूर्वे) ॐ भूर्भुवः स्वः भवाय नमः, भवमावाहयामि स्थापयामि ॥ १ ॥

ॐ अग्निꣳ हृदयेनाशनिꣳ हृदयाग्रेण पशुपतिं कृत्स्न-हृदयेन भवं यक्ना। शर्वं मतस्नाभ्यामीशानं मन्युना महादेवमन्तःपर्शव्येनोग्रं देवं वनिष्ठुना वसिष्ठहनुꣳ शिङ्गीनि कोश्याभ्याम् ॥

(आग्नेय्याम्) ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वाय नमः, सर्वमावाहयामि स्थापयामि ॥ २ ॥

भव आदि अष्टशिवों का स्थापन—'ॐ नमः श्वभ्यः०' से 'भवमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त मन्त्र-वाक्य उच्चारण कर कृष्णपरिधि में अष्टभैरव के आगे पूर्व दिशा में भव का आवाहन एवं स्थापन करे ॥ १ ॥

ॐ उग्रँल्लोहितेन मित्रᳬ सौव्व्रत्त्येन रुद्रं दौर्व्रत्येनेन्द्रं प्रक्क्रीडेन मरुतो बलेन साध्यान्प्रमुदा ॥ भवस्य कण्ठ्यᳬ रुद्रस्यान्तः पार्श्व्यं महादेवस्य यकृच्छर्व्वस्य वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत् ॥

(दक्षिणे) ॐ भूर्भुवः स्वः पशुपतये नमः, पशुपतिमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३ ॥

'ॐ अग्निः हृदयेनाशनिं०' से 'सर्वमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त कह कर अग्निकोण में सर्व का आवाहन-स्थापन और पूजन करे ॥ २ ॥ 'ॐ उग्रं लोहितेन०' मन्त्र से लेकर 'पशुपतिमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त कह कर दक्षिण दिशा में पशुपति का आवाहन और स्थापन करे ॥ ३ ॥

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम् । पूषानो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥

(नैर्ऋत्याम्) ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानाय नमः, ईशानमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४ ॥

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त ऽइषवे नमः । बाहुभ्यामुत ते नमः ॥

'ॐ तमीशानं०' से 'ईशान-मावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त उच्चारण कर नैर्ऋत्यकोण में ईशान देव का आवाहन एवं पूजन स्थापन करे ॥ ४ ॥

(पश्चिमे) ॐ भूर्भुवः स्वः रुद्राय नमः, रुद्रमावाहयामि स्थापयामि ॥५॥

उग्ग्रश्च भीमश्च ध्वान्तश्च धुनिश्च । सासह्वाँश्चा-
भियुग्वा च विक्षिपः स्वाहा ॥

(वायव्याम्) ॐ भूर्भुवः स्वः उग्राय नमः, उग्रमावाहयामि
स्थापयामि ॥ ६ ॥

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात् ।
तमेव विदित्वाऽतिमृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय ॥

'ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव०' मन्त्र से आरम्भ कर 'रुद्रमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त उच्चारण कर पश्चिम दिशा में रुद्र का आवाहन एवं स्थापन-पूजन करे ॥ ५ ॥ 'ॐ उग्रश्च भीमश्च०' से 'उग्रमावाहयामि स्थापयामि' तक पढ़ कर वायव्य कोण में उग्र का आवाहन और स्थापन करे ॥ ६ ॥

(उत्तरे) ॐ भूर्भुवः स्वः भीमाय नमः, भीममावाहयामि स्थापयामि ॥ ७ ॥

ॐ मा नो॑ म॒हान्त॑मु॒त मा नो॑ ऽअर्भ॒कं मा न॒ ऽउक्ष॑न्तमु॒त मा न॑ ऽउक्षि॒तम्। मा नो॑ वधीः पि॒तरं॒ मोत मा॒तरं॑ मा नः॑ प्रि॒यास्त॒न्वो॒ रुद्र रीरिषः ॥

(ईशान्याम्) ॐ भूर्भुवः स्वः महते नमः, महान्तमावाहयामि स्थापयामि ॥ ८ ॥

'ॐ वेदाहमेतं पुरुषं०' मन्त्र से 'भीममावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त मन्त्र-वाक्य कह कर उत्तर दिशा में भीम का आवाहन एवं स्थापन करे ॥७॥ 'ॐ मा नो महान्तमुत०' से 'महान्तमावाहयामि स्थापयामि' तक कह कर ईशान कोण में महान्त (महादेव) का आवाहन, स्थापन एवं पूजन करे ॥ ८ ॥

ॐ स्योना पृथिवि नो भवान्नृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः॥

(तद्बाह्ये पूर्वे) ॐ भूर्भुवः स्वः अनन्ताय नमः, अनन्तमावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

ॐ देहि मे ददामि ते नि मे धेहि नि ते दधे। निहारं च हरासि मे निहारं निहराणि ते स्वाहा॥

(आग्नेय्याम्) ॐ भूर्भुवः स्वः वासुकये नमः, वासुकिमावाहयामि स्थापयामि॥ २॥

अष्टकुल नागों की स्थापना—'ॐ स्योना पृथिवि०' इस मन्त्र से लेकर 'अनन्तमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त वाक्य पढ़कर भवादि आठ के बाहर पूर्व दिशा में अनन्त का आवाहन एवं स्थापन करे॥ १॥

ॐ नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमो नमः कुलालेभ्यः कर्मारेभ्यश्च वो नमो नमो निषादेभ्यः पुञ्जिष्ठेभ्यश्च वो नमो नमः श्वनिभ्यो मृगयुभ्यश्च वो नमः ॥

(दक्षिणे) ॐ भूर्भुवः स्वः तक्षकाय नमः, तक्षकमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३ ॥

'ॐ देहि मे ददामि ते०' मन्त्र से 'वासुकिमावाहयामि स्थापयामि' तक उच्चारण कर अग्नि कोण में वासुकि का आवाहन एवं स्थापन करे ॥ २ ॥

'ॐ नमस्तक्षभ्यो०' से 'तक्षकमावाहयामि स्थापयामि' तक कहकर दक्षिण दिशा में तक्षक का आवाहन-स्थापन एवं पूजन करे ॥ ३ ॥

ॐ पुरुषमृगश्चन्द्रमसो गोधा कालका दार्व्वाघाटस्ते वनस्पतीनां कृकवाकुः सावित्रो हꣳसो वातस्य नाक्रो मकरः कुलीपयस्ते ऽकूपारस्य ह्रियै शल्ल्यकः ॥

(नैर्ऋत्याम्) ॐ भूर्भुवः स्वः कुलिशाय नमः, कुलिशमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४ ॥

ॐ सोमाय कुलुङ्ग ऽआरण्योऽजो नकुलः शका ते पौष्णाः क्रोष्टा मायोरिन्द्रस्य गौरमृगः पिद्वो न्यङ्कुः

'ॐ पुरुषमृगश्चन्द्रमसो०' इस मन्त्र से 'कुलिशमावाहयामि स्थापयामि' तक उच्चारण कर नैर्ऋत्य कोण में कुलिश (नाग) का आवाहन एवं स्थापन करे ॥ ४ ॥

कक्कुटस्तेऽनुमत्यै प्रतिश्रुत्कायै चक्रवाकः ॥

(पश्चिमे) ॐ भूर्भुवः स्वः कर्कोटकाय नमः, कर्कोटकमावाहयामि स्थापयामि ॥ ५ ॥

ॐ अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः ।
तमीमहे महागयम् ॥ उपयामगृहीतोऽस्यग्नये त्वा वर्चसऽएष ते योनिरग्नये त्वा वर्चसे ॥

(वायव्याम्) ॐ भूर्भुवः स्वः शङ्खपालाय नमः, शङ्खपालमावाहयामि स्थापयामि ॥ ६ ॥

'ॐ सोमाय कुलुङ्ग०' से 'कर्कोटकमावाहयामि स्थापयामि' तक पढ़कर पश्चिम दिशा में कर्कोटक (नाग) का आवाहन और स्थापन करे ॥ ५ ॥

ॐ सीसेन तन्त्रं मनसा मनीषिण ऽऊर्णसूत्रेण कवयो वयन्ति। अश्विना यज्ञꣳ सविता सरस्वतीन्द्रस्य रूपं वरुणो भिषज्यन् ॥

(उत्तरे) ॐ भूर्भुवः स्वः कम्बलाय नमः, कम्बलमावाहयामि स्थापयामि ॥ ७ ॥

ॐ अश्वस्तूपरो गोमृगस्ते प्राजापत्याः कृष्णग्रीव

'ॐ अग्निऋषिः०' मन्त्र से लेकर 'शङ्खपालमावाहयामि स्थापयामि' तक वाक्य पढ़कर शंखपाल (नाग) का आवाहन-स्थापन और पूजन करना चाहिए ॥ ६ ॥ 'ॐ सीसेन तन्त्रं०' मन्त्र से 'कम्बलमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त वाक्य का उच्चारण कर उत्तर दिशा में कम्बल (नाग) का आवाहन और स्थापन करे ॥ ७ ॥

ऽआग्नेयो रराटे पुरस्तात्सारस्वती मेष्यधस्ताद्धन्वोराश्विना-
वधोरामौ बाह्वोः सौमापौष्णः श्यामो नाभ्याᳫंसौर्य्ययामौ
श्वेतश्च कृष्णश्च पार्श्वयस्त्वाष्ट्रौ लोमशसक्थौ सक्थ्यो-
र्वायव्यः श्वेतः पुच्छ इन्द्राय स्वपस्याय वेहद्वैष्णवो
वामनः ॥

(ईशान्याम्) ॐ भूर्भुवः स्वः अश्वतराय नमः, अश्वतरमावाहयामि
स्थापयामि ॥ ८ ॥

'ॐ अश्वस्तूपरो०' मन्त्र से लेकर 'अश्वतरमावाहयामि स्थापयामि' तक उच्चारण कर ईशान कोण में अश्वतर का आवाहन एवं स्थापन करे ॥ ८ ॥

नमः॑ श्वभ्यः॑ श्वपतिभ्यश्च वो नमो नमो॑ भवाय॑ च रुद्राय च नम॑ः शर्वाय॑ च पशुपत॑ये च नमो नील॑ग्रीवाय च शितिकण्ठाय॑ च ॥

(ईशानेन्द्रमध्ये) ॐ भूर्भुवः स्वः शूलाय नमः, शूलमावाहयामि स्थापयामि ॥ १ ॥

ॐ चन्द्रमा मन॑सो जातश्चक्षोः॑ सूर्य्यो॑ ऽअजायत । श्रोत्राद्वायुश्च॑ प्राणश्च मुखा॑दग्निर॑जायत ॥

अष्ट शिव का स्थापन—'ॐ नमः श्वभ्यः०' से 'शूलमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त मन्त्र-वाक्य का उच्चारणकर ईशान और इन्द्र के मध्य शूल (शूलटंकेश्वर) का आवाहन और स्थापन करे ॥ १ ॥

(इन्द्राग्निमध्ये) ॐ भूर्भुवः स्वः चन्द्रमौलिने नमः, चन्द्रमौलिनमावाहयामि स्थापयामि ॥ २ ॥

ॐ चुन्द्रमा ऽअुप्स्वुन्तरा सुंपुर्णो धांवते दिवि ।
रयिं पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृहुꣳ हरिरेति कनिक्रदत् ॥

(अग्नि-यमयोर्मध्ये) ॐ भूर्भुवः स्वः चन्द्रमसे नमः, चन्द्रमसमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३ ॥

ॐ आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः

'ॐ चन्द्रमा मनसो०' मन्त्र से 'चन्द्रमौलिनमावाहयामि स्थापयामि' तक पढ़कर इन्द्र और अग्नि के मध्य चन्द्रमौलि का आवाहन और स्थापन करे ॥ २ ॥ 'ॐ चन्द्रमा अप्स्वन्तरा०' इस मन्त्र से आरम्भकर 'चन्द्रमसमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त पढ़कर अग्नि और यम के मध्य भाग में चन्द्र का आवाहन और स्थापन करे ॥ ३ ॥

त्क्षोभणश्चर्षणीनाम् । सुङ्क्रन्दनोऽनिमिष ऽएकवीरः शतᳪ

सेना ऽअजयत्साकमिन्द्रः ॥

(यम-निर्ऋतिमध्ये) ॐ भूर्भुवः स्वः वृषभध्वजाय नमः, वृषभध्वज-मावाहयामि स्थापयामि ॥ ४ ॥

ॐ सुगा वो देवाः सदना ऽअकर्म्म य ऽआजग्मेदᳪ

सवनं जुषाणाः । भरमाणा व्वहमाना हवीᳪष्यस्मे

धत्त व्वसवो व्वसूनि स्वाहा ॥

'ॐ आशुः शिशानो०' से 'वृषभध्वजमावाहयामि स्थापयामि' तक पढ़कर यम और निर्ऋति के बीच वृषभध्वज का आवाहन-स्थापन एवं पूजन करना चाहिए ॥ ४ ॥

(निर्ऋति-वरुणमध्ये) ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिलोचनाय नमः, त्रिलोचनमावाहयामि स्थापयामि ॥ ५ ॥

ॐ रुद्राः सᳬसृज्य पृथिवीं बृहज्ज्योतिः समीधिरे ।
तेषां भानुरजस्र ऽइच्छुक्रो देवेषु रोचते ॥

(वरुण-वायुमध्ये) ॐ भूर्भुवः स्वः शक्तिधराय नमः, शक्तिधरमावाहयामि स्थापयामि ॥ ६ ॥

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम् । उर्व्वारुकमिव

'ॐ सुगा वो देवाः' से 'त्रिलोचनमावाहयामि स्थापयामि' तक पढ़कर निर्ऋति एवं वरुण के मध्य भाग में त्रिलोचन का आवाहन और स्थापन करे ॥ ५ ॥

'ॐ रुद्राः सᳬसृज्य०' मन्त्र से 'शक्तिधरमावाहयामि स्थापयामि' तक कहकर वरुण और वायुके मध्य भाग में शक्तिधर का आवाहन एवं स्थापन करे ॥ ६ ॥

बन्धनान्मृत्योर्म्मुक्षीय माऽमृतात् ॥

(वायु-सोममध्ये) ॐ भूर्भुवः स्वः महेश्वराय नमः, महेश्वरमावाहयामि स्थापयामि ॥ ७ ॥

ॐ या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती । तया यज्ञं मिमिक्षतम् ॥

(सोमेशानमध्ये) ॐ भूर्भुवः स्वः शूलपाणये नम, शूलपाणिमावाहयामि स्थापयामि ॥ ८ ॥ इति लिङ्गतोभद्रदेवतास्थापनं पूजनं च समाप्तम् ।

'ॐ त्र्यम्बकं यजामहे०' मन्त्र से 'महेश्वरमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त वाक्य उच्चारण कर वायु-सोमके मध्य भाग में महेश्वर का आवाहन-स्थापन और पूजन करे ॥ ७ ॥ 'ॐ या वां कशा०' मन्त्र से लेकर 'शूलपाणिमावाहयामि स्थापयामि' तक पढ़कर सोम और ईशान के मध्य भाग में शूलपाणि का आवाहन-स्थापन और पूजन करना चाहिए ॥ ८ ॥ इस प्रकार लिङ्गतोभद्र देवता का स्थापन एवं पूजन समाप्त ।

प्रधानकलशस्थापनम्

तत्र (सर्वतोभद्रमण्डलस्थ-लिङ्गतोभद्रमण्डले) मध्ये-

ॐ मुही द्यौः पृ॑थिवी च॑ न ऽइमं य॒ज्ञं मि॑मिक्षताम् । पिपृताम्नो भरी॑मभिः ॥

इति मन्त्रेण पूर्वोक्तकलशस्थापनविधिना ताम्रकलशं प्रतिष्ठाप्य, वरुणं सम्पूज्य, तस्योपरि स्वर्णमयीं प्रधानप्रतिमामग्न्युत्तारणपूर्वकं स्थापयेत् ।

इति प्रधानकलशस्थापनम् ।

प्रधान कलश का स्थापन—सर्वतोभद्र मण्डल के मध्य भाग में, 'ॐ मही द्यौः०' इस मन्त्र से ताँबे का कलश स्थापन कर और ग्रहशान्ति के अनुसार वरुण का पूजन करे। तथा उस कलश के ऊपर सुवर्ण की प्रधान प्रतिमा अग्न्युत्तारण विधि से स्थापित करे।

इस प्रकार प्रधान कलश स्थापन समाप्त ।

अग्न्युत्तारणविधिः

तत्राऽऽचार्यः पात्रान्तरे प्रतिमां निधाय, घृतेनाभ्यज्य, उपरि जलधारां कुर्यात् । तत्र मन्त्राः—

ॐ समुद्रस्य त्वावकयाग्ने परिव्ययामसि । पावको ऽअस्मभ्यꣳ शिवो भव ॥ १ ॥ ॐ हिमस्य त्वा जरायुणाग्ने परिव्ययामसि । पावको ऽअस्मभ्यꣳ शिवो भव ॥ २ ॥ ॐ उप ज्मन्नुप वेतसेऽवतर नदीष्वा । अग्ने पित्तमपामसि

अग्न्युत्तारण विधि—आचार्य चाँदी के पात्र में, जिस देवता का स्थापन-प्राणप्रतिष्ठा करनी हो, उस देवता की सुवर्ण-प्रतिमा को रखकर उसमें घी लगावे । और 'ॐ समुद्रस्य त्वावकयाग्ने०' से 'अस्मभ्यꣳ. शिवो भव ॥१२॥' पर्यन्त बारह मन्त्र पढ़कर मूर्ति पर जल धारा छोड़े । इस प्रकार अग्न्युत्तारण विधि समाप्त ।

मण्डूकि ताभिरागहि सेमं नो यज्ञं पावकवर्णᳪ शिवं कृधि ॥३॥ ॐ अपामिदं न्ययनᳪ समुद्रस्य निवेशनम्। अन्याँस्ते ऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावको ऽअस्मभ्यᳪ शिवो भव ॥४॥ ॐ अग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वया। आ देवान्वक्षि यक्षि च ॥५॥ ॐ स नः पावक दीदिवोऽग्ने देवाँ२॥ ऽइहावह। उप यज्ञᳪ हविश्च नः ॥६॥ ॐ पावकया यश्चितयन्त्या कृपा क्षामन्रुरुच ऽउषसो न

भानुना । तूर्व्वन्न यामन्नेतशस्य नू रणा ऽआ यो घृणेन तं तृषाणो ऽअजरः ॥७॥ ॐ नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते ऽअस्त्वर्च्चिषे । अन्याँस्ते ऽअस्म्मत्तपन्तु हेतयः पावको ऽअस्म्मभ्यं शिवो भव ॥ ८ ॥ ॐ नृषदे वेडप्सुषदे वेड्बर्हिषदे वेड्वनसदे वेट् स्वर्विदे वेट् ॥ ९ ॥ ॐ ये देवा देवानां य्यज्ञिया य्यज्ञियानाᳪ संव्वत्सरीणमुप भागमासते । अहुतादो हविषो यज्ञे ऽअस्स्मिन्न्त्स्वयं पिबन्तु मधुनो

घृतस्य ॥१०॥ ॐ ये देवा देवेष्वधि देवत्वमायन्ये ब्रह्मणः पुर एतारो ऽअस्य । येभ्यो न ऋते पवते धाम किञ्चन न ते दिवो न पृथिव्या ऽअधि स्नुषु ॥११॥ ॐ प्राणदा ऽअपानदा व्यानदा वर्च्चोदा वरिवोदाः । अन्याँस्ते ऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावको ऽअस्मभ्यꣳ शिवो भव ॥१२॥ इति मन्त्रैरग्न्युत्तारणं कर्तव्यम् ।

इत्यग्न्युत्तारणविधिः समाप्तः ।

प्राणप्रतिष्ठा

ततः प्रधान-प्रतिमां हस्तेन संस्पृश्य, बीजमन्त्रान् जपेत् । ॐ आं

ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः अस्यां मूर्तौ प्राणाः इह प्राणाः । (पुनः)
आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः अस्यां मूर्तौ जीव इह स्थितः । (पुनः)
आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः अस्यां मूर्तौ सर्वेन्द्रियाणि
वाङ्-मनस्त्वक्-चक्षुः-श्रोत्र-जिह्वा-घ्राण-पाणि-पाद-पायूस्थानि इहैवागत्य
सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च ।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन ॥

प्रधान मूर्ति-प्राणप्रतिष्ठा—आचार्य प्रधान मूर्ति को बायें हाथ में रख, उसे दाहिने हाथ से ढँक कर 'ॐ आँ ह्रीं क्रों०' से लेकर 'सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा' पर्यन्त बीज मन्त्र और 'अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु०' श्लोक पढ़कर प्राणप्रतिष्ठा करने के पश्चात् मूर्ति को कलश के ऊपर रख दे ।

प्रा० प्र० २३०

ततः 'ॐ मनो जूतिः' इति मन्त्रेण प्रतिष्ठां कृत्वा, पूजयेत् ।

इति प्राणप्रतिष्ठा समाप्ता ।

पञ्चभूसंस्कारः

तत आचार्यः, अस्मिन् ग्रहशान्त्याख्ये कर्मणि पञ्चभूसंस्कारपूर्वकमग्निस्थापनं करिष्ये ।

१. कुशैः परिसमुह्य, तान् कुशानैशान्यां परित्यज्य, २. गोमयो-

उसके बाद बायें हाथ में अक्षत लेकर 'ॐ मनो जूतिः०' इस मन्त्र द्वारा दाहिने हाथ से प्रतिमा पर अक्षत छोड़ षोडशोपचार अथवा पंचोपचार से प्रधान प्रतिमा का पूजन करे ।

इस प्रकार प्रधानमूर्ति-प्राण-प्रतिष्ठा समाप्त ।

पंचभू संस्कार—आचार्य दाहिने हाथ में जल लेकर 'अस्मिन् ग्रहशान्त्याख्ये०' से 'अग्निस्थापनं करिष्ये' तक पढ़कर भूमि पर जल छोड़ दे। पुनः १. मुट्ठी भर कुशा दाहिने हाथ में लेकर वेदी की मिट्टी को झाड़ते हुए उस कुशा

दकाभ्यामुपलिप्य, ३. स्रुवेणोल्लिख्य, ४. अनामिकाङ्गुष्ठेन मृदमुद्धृत्य, ५. जलेनाऽभ्युक्ष्य ।

अग्निस्थापनम्

ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे ॥ देवाँ२॥ आसादयादिह ॥ [1]इति मन्त्रेणाऽग्निं स्थापयेत्।

इत्यग्निस्थापनम् ।

को ईशान कोण में रख दे । २. गोबर मिले हुए जल से वेदी का लेपन करे । ३. स्रुवा द्वारा वेदी पर तीन रेखा खींचे । ४. दाहिने हाथ की आनामिका अँगुलि तथा अँगूठे से उस मिट्टी को हटावे । ५. वेदी पर जल छिड़के ।

इस प्रकार पंचभूसंस्कार समाप्त ।

अग्निस्थापन—काँसे के पात्र में कुमारी कन्या द्वारा लायी हुई अग्नि को आचार्य 'ॐ अग्निं दूतं०' से 'आसादयादिह' तक मन्त्र उच्चारण कर वेदी में अग्नि की स्थापना करे । इस प्रकार अग्नि स्थापन समाप्त ।

१. कर्तुः शाखोक्तमार्गेण आचार्यस्याऽथवा पुनः । कुर्यादग्निप्रणयनं हवनादिविधीन् तथा ॥—इति मानवसंहितायाम् ।

सूर्यादिग्रहाणां स्थापनं पूजनं च

ततः पूर्वनिर्मित-हस्तमात्रं चतुरस्रं ग्रहवेद्यां श्वेतवस्त्रं प्रसार्य, नवग्रह-मण्डलं विलिख्य, मध्यादिकोष्ठेषु उक्तदिक्षु विदिक्षु च सूर्यादिग्रहाणां स्थापनं पूजनं च कुर्यात्। तद्यथा—

सूर्यादि नवग्रहों का स्थापन एवं पूजन—एक चौकोर चौकी पर सफेद कपड़ा बिछा रोरी द्वारा तारे से नव ग्रह मण्डल की रचना कर मध्यादि कोष्ठ एवं दिशा विदिशाओं में सूर्यादि ग्रहों का आवाहन-स्थापन और पूजन करे। वह इस प्रकार है—

१. सूर्यादिग्रहाणां स्थापनक्रमः स्कान्दे—

ईशाने मण्डलं कृत्वा ग्रहाणां स्थापनं ततः। वृत्तमण्डलमादित्यमर्धचन्द्रं निशाकरम्॥
त्रिकोणं मङ्गलं चैव बुधं च धनुषाकृतिम्। गुरुमष्टदलं प्रोक्तं चतुष्कोणं च भार्गवम्॥
नराकृतिं शनिं विन्द्याद्राहुं च मकराकृतिम्। केतुं खड्गसमं ज्ञेयं ग्रहमण्डलके शुभे॥

प्रकारान्तरम्—

वृत्तमण्डलमादित्यं चतुरस्रं निशाकरम्। त्रिकोणं मङ्गलं चैव बुधं वै बाणसन्निभम्॥
गुरवे पट्टिशाकारं पञ्चकोणं भृगुं तथा। मन्दे च धनुषाकारं सूर्पाकारं तु राहवे॥

जपाकुसुमसङ्काशं काश्यपेयं महाद्युतिम् ।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं सूर्यमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च ।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥

केतवे च ध्वजाकारं मण्डलानि क्रमेण तु । शुक्रार्कौ प्राङ्मुखौ ज्ञेयौ गुरु-सौम्यावुदङ्मुखौ ॥
प्रत्यङ्मुखौ शनि-सोमौ शेषा दक्षिणतो मुखाः । मध्ये तु भास्करं विन्द्याच्छशिनं पूर्वदक्षिणे ॥
दक्षिणे लोहितं विन्द्याद् बुधं पूर्वोत्तरेण तु । उत्तरेण गुरुं विन्द्यात् पूर्वेणैव तु भार्गवम् ॥
पश्चिमे तु शनिं विन्द्याद्राहुं दक्षिण-पश्चिमे । पश्चिमोत्तरतः केतुं इत्येषा ग्रहसंस्थितिः ॥
आदित्याभिमुखाः सर्वे साऽधिप्रत्यधिदेवताः । अधिदेवता दक्षिणे वामे प्रत्यधिदेवताः ॥
अरुणौ सूर्य-भौमौ च श्वेतौ शुक्रनिशाकरौ । हरितवर्णो बुधश्चैव पीतवर्णो गुरुस्तथा ॥
कृष्णवर्णाः शनि-राहु-केतवस्तु तथैव च ।

ॐ भूर्भुवः स्वः कलिङ्गदेशोद्भव काश्यपसगोत्र रक्तवर्ण भो सूर्य ! इहागच्छ इह तिष्ठ सूर्याय नमः, सूर्यमावाहयामि स्थापयामि ॥ १ ॥

दधि-शङ्ख-तुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम् ।
ज्योत्स्नापतिं निशानाथं सोममावाहयाम्यहम् ॥

ॐ इमं देवा ऽअसपत्नꣳ सुवद्ध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय । इमममुष्य-पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश ऽएष वोमीराजा सोमो ऽस्माकं

'जपा-कुसुम-सङ्काशं०' श्लोक एवं 'ॐ आकृष्णेन रजसा०' मन्त्र से 'सूर्यमावाहयामि स्थापयामि' तक उच्चारण कर सूर्य का आवाहन, स्थापन और पूजन करे ॥ १ ॥

ब्राह्मणानाᳬरा जा ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः यमुनातीरोद्भव आत्रेयसगोत्र शुक्लवर्ण भो सोम ! इहागच्छ इह तिष्ठ सोमाय नमः, सोममावाहयामि स्थापयामि ॥ २ ॥

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्तेजस्समप्रभम् ।
कुमारं शक्तिहस्तं च भौममावाहयाम्यहम् ॥

ॐ अग्निर्मूर्द्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्या ऽअयम् ।
अपाᳬ रेताᳬसि जिन्वति ॥

'दधि-शङ्ख-तुषाराभं०' यह श्लोक और 'ॐ इमं देवा०' से 'सोममावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त मन्त्र-वाक्य का उच्चारण कर चन्द्रका आवाहन एवं स्थापन करे ॥२॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अवन्तिकापुरोद्भव भरद्वाजसगोत्र रक्तवर्ण भो भौम ! इहागच्छ इह तिष्ठ भौमाय नमः, भौममावाहयामि स्थापयामि ॥ ३ ॥

प्रियङ्गुकलिकाभासं रूपेणाऽप्रतिमं बुधम् ।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं बुधमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहित्वमिष्टापूर्ते सꣳ सृजेथामयं च । अस्मिन्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत ॥

'धरणीगर्भसम्भूत०' श्लोक तथा 'ॐ अग्निर्मूर्द्धा० मन्त्र' से 'भौममावाहयामि स्थापयामि' तक कहकर भूमिपुत्र-मंगल का आवाहन और स्थापन करे ॥ ३ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः मगधदेशोद्भव आत्रेयसगोत्र हरितवर्ण भो बुध ! इहागच्छ इह तिष्ठ बुधाय नमः, बुधमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४ ॥

देवानां च मुनीनां च गुरुं काञ्चनसन्निभम् ।
वन्द्यभूतं त्रिलोकानां गुरुमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ बृहस्पते ऽअतियदर्यो ऽअर्हाद्युमद् विभाति क्रतुमज्जनेषु । यद्दीदयच्छवस ऽऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ॥

'प्रियङ्गु-कलिकाभासं०' यह श्लोक तथा 'ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने०' से 'बुधमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त पढ़कर बुध का आवाहन, स्थापन और पूजन करना चाहिए ॥४॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सिन्धुदेशोद्भव आङ्गिरसगोत्र पीतवर्ण भो बृहस्पते ! इहागच्छ इह तिष्ठ बृहस्पतये नमः, बृहस्पतिमावाहयामि स्थापयामि ॥५॥

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम् ।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं शुक्रमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानः शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु ॥

'देवानां च मुनीनां च०' उक्त श्लोक एवं 'ॐ बृहस्पते०' इस मन्त्र से 'बृहस्पतिमावाहयामि स्थापयामि' तक वाक्य उच्चारण कर देवताओं के गुरु बृहस्पति का आवाहन और स्थापन करे ॥५॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भोजकटदेशोद्भव भार्गवसगोत्र शुक्लवर्ण ! भो शुक्र इहागच्छ इह तिष्ठ शुक्राय नमः, शुक्रमावाहयामि स्थापयामि ॥ ६ ॥

नीलाम्बुजसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् ।
छायामार्तण्ड-सम्भूतं शनिमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ शं नो देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये । शं य्योरभिस्रवन्तु नः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भव काश्यपसगोत्र कृष्णवर्ण भो शनैश्चर ! इहागच्छ इह तिष्ठ शनैश्चराय नमः, शनैश्चरमावाहयामि स्थापयामि ॥७॥

'हिम-कुन्द-मृणालाभं॰' यह श्लोक तथा 'ॐ अन्नात्परिस्रुतो॰' मन्त्र से लेकर 'शुक्रमावाहयामि स्थापयामि' तक कहकर दैत्यगुरु शुक्र का आवाहन-स्थापन और पूजन करे ॥६॥

प्र॰ प॰ २४० सूर्या॰ स्था॰ २४०

अर्द्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम् ।
सिंहिकागर्भसम्भूतं राहुमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ कया नश्चित्र ऽआभुवदूती सदावृधः सखा । कया शचिष्ठया वृता ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः राठिनापुरोद्भव पैठिनसगोत्र कृष्णवर्ण भो राहो ! इहागच्छ इह तिष्ठ राहवे नमः, राहुमावाहयामि स्थापयामि ॥ ८ ॥

'नीलाम्बुज-समाभासं०' उक्त श्लोक से आरम्भ कर 'शनैश्चरमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त मन्त्र-वाक्य का समुच्चारण कर सूर्यपुत्र-शनि का आवाहन और स्थापन करे ॥७॥

'अर्द्धकायं महावीर्यं०' इस श्लोक तथा 'ॐ कया नश्चित्र०' मन्त्र से लेकर 'राहुमावाहयामि स्थापयामि' तक कहकर राहु का आवाहन और स्थापन करना चाहिए ॥ ८ ॥

पालाशधूम्रसङ्काशं तारकाग्रहमस्तकम् ।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं केतुमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्य्या ऽअपेशसे ।
समुषद्भिरजायथाः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अन्तर्वेदिसमुद्भव जैमिनिसगोत्र कृष्णवर्ण भो केतो !
इहागच्छ इह तिष्ठ केतवे नमः, केतुमावाहयामि स्थापयामि ॥ ९ ॥

'पालाशधूम्रसङ्काशं०' उक्त श्लोक और 'ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे०' मन्त्र से 'केतुमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त पढ़कर केतु का आवाहन एवं स्थापन-पूजन करे ॥ ९ ॥

ग्रह०

५०

२४३

[1]अधिदेवता-स्थापनं पूजनं च

अधि०

स्थ०

ततो ग्रहदक्षिणपार्श्वेऽधिदेवतास्थापनं पूजनं च कुर्यात् । तद्यथा—

पञ्चवक्त्रं वृषारूढमुमेशं च त्रिलोचनम् ।
आवाहयामीश्वरं तं खट्वाङ्गवरधारिणम् ॥

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम् । उर्वारुक-मिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ईश्वर इहागच्छ इह तिष्ठ ईश्वराय नमः, ईश्वरमावाहयामि स्थापयामि ॥ १ ॥

२४३

अधिदेवता स्थापन और पूजन—ग्रहों के दाहिनी ओर अधिदेवताओं का स्थापन तथा पूजन करे । वह इस प्रकार है—

१. स्कान्दे—शिवः शिवा गुहो विष्णुर्ब्रह्मेन्द्र-यम-कालकाः । चित्रगुप्तोऽथ भान्वादि-दक्षिणे चाऽधिदेवताः ॥

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम् ।
लम्बोदरस्य जननीमुमामावाहयाम्यहम् ॥

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणामुं म ऽइषाण सर्व्वलोकं म ऽइषाण ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः उमेहागच्छ इह तिष्ठ उमायै नमः, उमामावाहयामि स्थापयामि ॥ २ ॥

'पञ्चवक्त्रं वृषारूढं०' श्लोक तथा 'ॐ त्र्यम्बकं यजामहे०' से 'ईश्वरमावाहयामि स्थापयामि' तक पढ़कर ईश्वर का आवाहन, स्थापन और पूजन करना चाहिए ॥ १ ॥

'हेमाद्रितनयां देवीं०' से 'उमामावाहयामि स्थापयामि' तक पढ़कर उमा का आवाहन तथा स्थापन करे ॥२॥

रुद्रतेजः समुत्पन्नं देवसेनाग्रगं विभुम् ।
षण्मुखं कृत्तिकासूनुं स्कन्दमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान ऽउद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात् । श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते ऽअर्व्वन् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्देहागच्छ इह तिष्ठ स्कन्दाय नमः, स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३ ॥

'रुद्रतेजः समुत्पन्नं०' श्लोक एवं 'ॐ यदक्रन्दः प्रथमं०' मन्त्र से 'स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि' तक उच्चारण कर स्कन्द का आवाहन और स्थापन-पूजन सम्पन्न करे ॥ ३ ॥

देवदेवं जगन्नाथं भक्तानुग्रहकारकम् ।
चतुर्भुजं रमानाथं विष्णुमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ व्विष्णो रराटमसि व्विष्णोः श्नप्त्रे स्थो व्विष्णोः स्यूरसि व्विष्णोर्ध्रुवोऽसि । व्वैष्णवमसि व्विष्णवे त्वा ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णो इहागच्छ इह तिष्ठ विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४ ॥

कृष्णाजिनाऽम्बरधरं पद्मसंस्थं चतुर्मुखम् ।

'देवदेवं जगन्नाथं०' उक्त श्लोक तथा 'ॐ विष्णो रराटमसि०' मन्त्र से लेकर 'विष्णुमावाहयामि स्थापयामि' तक उच्चारण कर विष्णु का आवाहन और स्थापन करना चाहिए ॥ ४ ॥

वेदाधारं निरालम्बं विधिमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ आ ब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मन् इहागच्छ इह तिष्ठ ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि ॥ ५ ॥

देवराजं गजारूढं शुनासीरं शतक्रतुम् ।
वज्रहस्तं महाबाहुमिन्द्रमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ सुयोषा ऽइन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान् । जहि शत्रूँ२॥ रप मृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः ॥

'कृष्णाजिनाऽम्बरधरं०' श्लोक और 'ॐ आ ब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी०' मन्त्र से आरम्भकर 'ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त कहकर ब्रह्मा का आवाहन-स्थापन और पूजन करे ॥ ५ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्रेहागच्छ इह तिष्ठ इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि ॥ ६ ॥

धर्मराजं महावीर्यं दक्षिणादिक्पतिं प्रभुम् ।
रक्तेक्षणं महाबाहुं यममावाहयाम्यहम् ॥

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा । स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे ॥

'देवराजं गजारूढं०' उक्त श्लोक तथा 'ॐ सजोषा इन्द्र०' से 'इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त पढ़कर इन्द्रका आवाहन एवं स्थापन करे ॥ ६ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः यम इहागच्छ इह तिष्ठ यमाय नमः, यममावाहयामि स्थापयामि ॥ ७ ॥

अनाकारमनन्ताख्यं वर्त्तमानं दिने दिने ।
कलाकाष्ठादिरूपेण कालमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्या ऽउन्नयामि ।
समापो ऽअद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कालेहागच्छ इह तिष्ठ कालाय नमः, कालमावाहयामि स्थापयामि ॥ ८ ॥

'धर्मराजं महावीर्यं०' श्लोक से लेकर 'यममावाहयामि स्थापयामि' तक का पाठकर यम का आवाहन-स्थापन एवं पूजन करे ॥ ७ ॥ 'अनाकारमनन्ताख्यं०' श्लोक तथा 'ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा०' मन्त्र से 'कालमावा-

धर्मराजसभासंस्थं कृताऽकृतविवेकिनम् ।
आवाहयेच्चित्रगुप्तं लेखनीपत्रहस्तकम् ॥

ॐ चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः चित्रगुप्तेहागच्छ इह तिष्ठ चित्रगुप्ताय नमः, चित्रगुप्तमावाहयामि स्थापयामि ॥ ९ ॥

प्रत्यधिदेवतास्थापनं पूजनं च

ततो ग्रहवामपार्श्वे प्रत्यधिदेवतास्थापनं पूजनं च कुर्यात् । तद्यथा–

हयामि स्थापयामि' पर्यन्त पढ़कर कालका आवाहन एवं स्थापन करे ॥ ८ ॥

'धर्मराजसभासंस्थं०' श्लोक एवं 'ॐ चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय' मन्त्र से 'चित्रगुप्तमावाहयामि स्थापयामि' तक कहकर चित्रगुप्तका आवाहन, स्थापन और पूजन करना चाहिए ॥ ९ ॥

प्रत्यधिदेवताओं का स्थापन और पूजन—नवग्रहों के बायीं ओर प्रत्यधिदेवताओं का आवाहन-स्थापन एवं पूजन करना चाहिए । वह इस प्रकार है–

रक्तमाल्याम्बरधरं रक्तपद्मासनस्थितम् ।
वरदाभयदं देवमग्निमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुपब्रुवे । देवाँ२॥ ऽआसादयादिह ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्ने इहागच्छ इह तिष्ठ अग्नये नमः, अग्निमावाहयामि स्थापयामि ॥ १ ॥

'रक्तमाल्याम्बरधरं०' श्लोक एवं 'ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे०' इस मन्त्र से लेकर 'अग्निमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त उच्चारण कर 'अग्नि का आवाहन, स्थापन एवं पूजन करना चाहिए ॥ १ ॥

१. स्कान्दे—अग्निरापो धरा विष्णुः शक्रेन्द्राणी पितामहाः । पन्नगाकः क्रमाद्वामे ग्रहप्रत्यधिदेवताः ॥

आदिदेवसमुद्भूता जगच्छुद्धिकराः शुभाः ।
औषध्याप्यायनकरा अपामावाहयाम्यहम् ॥

ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऽऊर्ज्जे दधातन । मुहे रणाय चक्षसे ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अप इहागच्छत इह तिष्ठत अद्भ्यो नमः, अप आवाहयामि स्थापयामि ॥ २ ॥

'आदिदेवसमुद्भूता०' श्लोक और 'ॐ आपो हि ष्ठा०' से 'अप आवाहयामि स्थापयामि' तक मन्त्र-वाक्य का उच्चारण कर अप (जल) का आवाहन, स्थापन और पूजन करे ॥ २ ॥

शुक्लवर्णां विशालाक्षीं कूर्मपृष्ठोपरिस्थिताम् ।
सर्वशस्याश्रयां देवीं धरामावाहयाम्यहम् ॥

ऋ० १० २५४

प्रत्य० स्था०

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी । यच्छा नः शर्म्म सप्रथाः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः पृथिवि इहागच्छ इह तिष्ठ पृथिव्यै नमः, पृथिवीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३ ॥

२५४

शङ्ख-चक्र-गदा-पद्महस्तं गरुडवाहनम् ।
किरीटकुण्डलधरं विष्णुमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाᳬंसुरे स्वाहा ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णो इहागच्छ इह तिष्ठ विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४ ॥

ऐरावतगजारूढं सहस्राक्षं शचीपतिम् ।

वज्रहस्तं सुराधीशमिन्द्रमावाहयाम्यहम् ॥

'शुक्लवर्णां विशालाक्षीं०' श्लोक और 'ॐ स्योना पृथिवि०' इस मन्त्र से 'पृथिवीमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त पढ़कर पृथिवी का आवाहन और स्थापन करे ॥ ३ ॥

'शङ्ख-चक्र-गदा-पद्महस्तं०' श्लोक एवं 'ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे०' इस मन्त्र से आरम्भकर 'विष्णुमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त उच्चारण कर विष्णु का आवाहन, स्थापन और पूजन करे ॥ ४ ॥

ॐ इन्द्रऽआसां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा युज्ञः पुरऽएतु सोमः। देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मुरुतो युन्त्वग्रम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्रेहागच्छ इह तिष्ठ इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि ॥ ५ ॥

प्रसन्नवदनां देवीं देवराजस्य वल्लभाम् ।
नानाऽलङ्कारसंयुक्तां शचीमावाहयाम्यहम् ॥

'ऐरावतगजारूढं०' उक्त श्लोक तथा 'ॐ इन्द्र आसां नेता' इस मन्त्र से आरम्भ कर 'इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि' तक उच्चारण कर इन्द्र का आवाहन, स्थापन एवं पूजन करे ॥ ५ ॥

ॐ अदित्यै रास्नासीन्द्राण्या ऽउष्णीषः। पूषासि घर्म्माय दीष्व ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राणि इहागच्छ इह तिष्ठ इन्द्राण्यै नमः, इन्द्राणीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ६ ॥

आवाहयाम्यहं देवदेवेशं च प्रजापतिम्।
अनेकव्रतकर्तारं सर्वेषां च पितामहम् ॥

ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परि ता

'प्रसन्नवदनां देवीं .' यह श्लोक एवं 'ॐ आदित्यै रास्नासीन्द्राण्या०' मन्त्र से लेकर 'इन्द्राणीमावाहयामि स्थापयामि' तक कहकर इन्द्राणी का आवाहन, स्थापन एवं पूजन करे ॥ ६ ॥

बभूव । यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो ऽअस्तु व्वयᳪ स्याम पतयो रयीणाम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः प्रजापते इहागच्छ इह तिष्ठ प्रजापतये नमः, प्रजापतिमावाहयामि स्थापयामि ॥ ७ ॥

अनन्ताद्यान् महाकायान् नानामणिविराजितान् ।
आवाहयाम्यहं सर्पान् फणासप्तकमण्डितान् ॥

ॐ नमोऽस्तु सर्प्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु । ये

'आवाहयाम्यहं देव०' श्लोक तथा 'ॐ प्रजापते०' मन्त्र से लेकर 'प्रजापतिमावाहयामि स्थापयामि' तक उच्चारण कर प्रजापति का आवाहन एवं स्थापन-पूजन करे ॥ ७ ॥

ऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेब्भ्यः सर्प्पेब्भ्यो नमः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्पा इहागच्छत इह तिष्ठत सर्पेभ्यो नमः, सर्पानावाहयामि स्थापयामि ॥ ८ ॥

हंसपृष्ठसमारूढं देवतागणपूजितम् ।

आवाहयाम्यहं देवं ब्रह्माणं कमलासनम् ॥

ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन ऽआवः । स बुध्न्याऽउपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥

प्रइ० प० २६०

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मन्! इहागच्छ इह तिष्ठ ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माण-मावाहयामि स्थापयामि ॥ ९ ॥

ततो विनायकादि-पञ्चलोकपालदेवता[1], वास्तोष्पतिं क्षेत्रपालं चाऽऽवाहयेत् पूजयेच्च। तद्यथा—

लम्बोदरं महाकायं गजवक्त्रं चतुर्भुजम्।
आवाहयाम्यहं देवं गणेशं सिद्धिदायकम् ॥

'अनन्ताद्यान् महाकायान्०' उक्त श्लोक और 'ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो०' इस मन्त्र से लेकर 'सर्पानावाहयामि स्थापयामि' तक उच्चारण कर सर्पोंका आवाहन, स्थापन तथा पूजन करे ॥ ८ ॥ 'हंसपृष्ठसमारूढं०' श्लोक एवं 'ॐ ब्रह्म यज्ञानं०' से लेकर 'ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त उच्चारण कर ब्रह्मा का आवाहन, स्थापन एवं पूजन करे ॥९॥ वह इस (विनायकादि पञ्चलोकपाल देवता), वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल का आवाहन, स्थापन और पूजन करे। वह इस प्रकार है—

---

1. स्कान्दे—गणेशश्चाऽम्बिका वायुराकाशश्चाऽश्विनौ तथा। ग्रहाणामुत्तरे पञ्च लोकपालाः प्रकीर्तिताः ॥

विनाय० स्था० २६०

ॐ गणानां त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रिय-पतिꣳ हवामहे निधीनां त्वां निधिपतिꣳ हवामहे व्वसो मम । आहमजानि गर्ब्भधमा त्त्वमजासि गर्ब्भधम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणपते इहागच्छ इह तिष्ठ गणपतये नमः, गणपति-मावाहयामि स्थापयामि ॥ १ ॥

पत्तने नगरे ग्रामे विपिने पर्वते गृहे ।
नानाजातिकुलेशानीं दुर्गामावाहयाम्यहम् ॥

'लम्बोदरं महाकायं०' उक्त श्लोक और 'ॐ गणानां त्वा०' मन्त्र से 'गणपतिमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त उच्चारण कर गणपति का आवाहन एवं स्थापन करे ॥ १ ॥

ॐ अम्बे ऽम्बिके ऽम्बालिके न मा नयति कश्चन ।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गे इहागच्छ इह तिष्ठ दुर्गायै नमः, दुर्गामावाहयामि स्थापयामि ॥ २ ॥

आवाहयाम्यहं वायुं भूतानां देहधारिणाम् ।
सर्वाधारं महावेगं मृगवाहनमीश्वरम् ॥

ॐ वायो ये ते सहस्रिणो रथासस्तेभिरागहि ।
नियुत्वान्त्सोमपीतये ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वायो इहागच्छ इह तिष्ठ वायवे नमः, वायुमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३ ॥

अनाकारं शब्दगुणं द्यावाभूम्यन्तरस्थितम् ।
आवाहयाम्यहं देवमाकाशं सर्वगं शुभम् ॥

ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा । दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा ॥

'पत्तने नगरे ग्रामे०' श्लोक एवं 'ॐ अम्बे अम्बिके०' मन्त्र से आरम्भकर 'दुर्गामावाहयामि स्थापयामि' तक पढ़कर दुर्गा का आवाहन और स्थापन करे ॥ २ ॥ 'आवाहयाम्यहं वायुं०' श्लोक तथा 'ॐ वायो ये ते०' मन्त्र से लेकर 'वायुमावाहयामि स्थापयामि' तक उच्चारण कर वायु का आवाहन और स्थापन करे ॥ ३ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आकाशाय नमः, आकाशमावाहयामि स्थापयामि॥४॥

देवतानां च भैषज्ये सुकुमारौ भिषग्वरौ।
आवाहयाम्यहं देवावश्विनौ पुष्टिवर्द्धनौ॥

ॐ या वां कशा मधुमत्याश्विना सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षतम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अश्विनौ इहागच्छतां इह तिष्ठतां अश्विभ्यां नमः, अश्विनौ आवाहयामि स्थापयामि॥५॥

'अनाकारं शब्दगुणं०' उक्त श्लोक से आरम्भ कर 'आकाशमावाहयामि स्थापयामि' तक पढ़कर आकाश का आवाहन और स्थापन करना चाहिए॥४॥ 'देवतानां च भैषज्ये०' यह श्लोक तथा 'ॐ या वां कशा०' से 'अश्विनौ आवाहयामि स्थापयामि' तक पढ़कर दोनों अश्विनी कुमार का आवाहन और स्थापन करे॥५॥

वास्तोष्पतिं विदिक्कायं भूशय्याभिरतं प्रभुम् ।
आवाहयाम्यहं देवं सर्वकर्मफलप्रदम् ॥

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशो ऽअनमीवा-
भवो नः । यत्त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे
शं चतुष्पदे ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तोष्पते इहागच्छ इह तिष्ठ वास्तोष्पतये नमः,
वास्तोष्पतिमावाहयामि स्थापयामि ॥ ६ ॥

'वास्तोष्पतिं विदिकायं०' से लेकर 'वास्तोष्पतिमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त पढ़कर वास्तोष्पति का आवाहन-स्थापन एवं पूजन करना चाहिए ॥ ६ ॥

भूतप्रेत-पिशाचाद्यैरावृतं शूलपाणिनम् ।
आवाहये क्षेत्रपालं कर्मण्यस्मिन् सुखाय नः ॥

ॐ नहि स्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात् पुरऽएतारमग्नेः । एमेनमवृधन्नमृता ऽअमर्त्यं वैश्वानरं क्षैत्रजित्त्याय देवाः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्राधिपते इहागच्छ इह तिष्ठ क्षेत्राधिपतये नमः, क्षेत्राधिपतिमावाहयामि स्थापयामि ॥ ७ ॥

'भूत-प्रेत-पिशाचाद्यैरावृतं०' से 'क्षेत्राधिपतिमावाहयामि स्थापयामि' तक का पाठ कर क्षेत्राधिपति (क्षेत्रपाल) का आवाहन और स्थापन करे ॥ ७ ॥

दशदिक्पालादीनामावाहनं पूजनं च

मण्डलाद् बाह्ये [1]दशदिक्पालानावाहयेत्।

इन्द्रं सुरपतिश्रेष्ठं वज्रहस्तं महाबलम्।
आवाहये यज्ञसिद्ध्यै शतयज्ञाधिपं प्रभुम्॥

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳ हवे हवे सुहवꣳ शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रꣳ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्रेहागच्छ इह तिष्ठ इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

१. संग्रहे—रुद्रो वह्निः पितृपतिर्नैऋर्तो वरुणो मरुत्। कुबेर ईशो ब्रह्मा च ह्यनन्तो दश दिक्पतिः॥

त्रिपादं सप्तहस्तं च द्विमूर्द्धानं द्विनासिकम् ।
षण्नेत्रं च चतुःश्रोत्रमग्निमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ त्वं नो अग्ने तव देव पायुभिर्म्मघोनो रक्ष तन्न्वश्च वन्द्य ।
त्राता तोकस्य तनये गवामस्यनिमेषꣳ रक्षमाणस्तव व्रते ।

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्ने इहागच्छ इह तिष्ठ अग्नये नमः, अग्निमावाहयामि स्थापयामि ॥ २ ॥

दशदिक्पालों का आवाहन—'इन्द्रं सुरपतिश्रेष्ठं०' श्लोक तथा 'ॐ त्रातारमिन्द्रं०' इस मन्त्र से लेकर 'इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि' कहकर ग्रहमण्डल के बाहर इन्द्र का आवाहन एवं स्थापन करे ॥ १ ॥

'त्रिपादं सप्तहस्तं च' से लेकर 'अग्निमावाहयामि स्थापयामि' तक उच्चारण कर अग्नि का आवाहन और स्थापन करे ॥ २ ॥

महामहिषमारूढं दण्डहस्तं महाबलम् ।

यज्ञसंरक्षणार्थाय यममावाहयाम्यहम् ॥

ॐ युमाय त्त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा । स्वाहा घुर्म्माय

स्वाहा घुर्म्मः पित्रे ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः यमेहागच्छ इह तिष्ठ यमाय नमः, यममावाहयामि

स्थापयामि ॥ ३ ॥

'महामहिषमारूढं०' से 'यममावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त श्लोक तथा मन्त्र-वाक्यों को पढ़कर यम का आवाहन और स्थापन करना चाहिए ॥ ३ ॥

सर्वप्रेताधिपं देवं निर्ऋतिं नीलविग्रहम् ।
आवाहये यज्ञसिद्धयै नरारूढं वरप्रदम् ॥

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य । अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋते इहागच्छ इह तिष्ठ निर्ऋतये नमः, निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४ ॥

'सर्वप्रेताधिपं देवं०' श्लोक तथा 'ॐ असुन्वन्त०' इस मन्त्र से ले 'निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त पढ़कर निर्ऋति का आवाहन-स्थापन और पूजन करे ॥ ४ ॥

शुद्धस्फटिकसङ्काशं जलेशं यादसां पतिम् ।

आवाहये प्रतीचीशं वरुणं सर्वकामदम् ॥

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः । अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशꣳस मा न ऽआयुः प्रमोषीः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुण इहागच्छ इह तिष्ठ वरुणाय नमः, वरुणमावाहयामि स्थापयामि ॥ ५ ॥

'शुद्धस्फटिकसङ्काशं०' से 'वरुणमावाहयामि स्थापयामि' तक उच्चारण कर वरुण का आवाहन एवं स्थापन करे ॥ ५ ॥

मनोजवं महातेजं सर्वतश्चारिणं शुभम् ।
यज्ञसंरक्षणार्थाय वायुमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ आ नो॑ नियुद्भिः॑ शतिनी॑भिरध्वरꣳ स॑हस्रिणी॑भिरुप॑याहि यज्ञम् । वायो॑ऽअस्मिन्सव॑ने मादयस्व यूयं पा॑त स्वस्तिभिः॒ सदा॑ नः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वायो इहागच्छ इह तिष्ठ वायवे नमः, वायुमावाहयामि स्थापयामि ॥ ६ ॥

'मनोजवं महातेजं०' श्लोक और 'ॐ आ नो नियुद्भिः०' से 'वायुमावाहयामि स्थापयामि' तक कहकर वायु का आवाहन और स्थापन करे ॥ ६ ॥

आवाहयामि देवेशं धनदं यक्षपूजितम् ।
महाबलं दिव्यदेहं नरयानगतिं विभुम् ॥

ॐ वयꣳ सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः । प्रजावन्तः सचेमहि ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सोमेहागच्छ इह तिष्ठ सोमाय नमः, सोममावाहयामि स्थापयामि ॥ ७ ॥

'आवाहयामि देवेशं०' श्लोक एवं 'ॐ वयꣳ सोम०' मन्त्र से लेकर 'सोममावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त पढ़कर सोम का आवाहन और स्थापन करे ॥ ७ ॥

सर्वाधिपं महादेवं भूतानां पतिमव्ययम् ।
आवाहये तमीशानं लोकानामभयप्रदम् ॥

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम् । पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानेहागच्छ इह तिष्ठ ईशानाय नमः, ईशानमावाहयामि स्थापयामि ॥ ८ ॥

'सर्वाधिपं महादेवं०' श्लोक तथा 'ॐ तमीशानं जगतः०' इस मन्त्र से आरम्भ कर 'ईशानमावाहयामि स्थापयामि' तक उच्चारण कर ईशान का आवाहन और स्थापन करे ॥ ८ ॥

पद्मयोनिं चतुर्मूर्तिं वेदगर्भं पितामहम् ।
आवाहयामि ब्रह्माणं यज्ञसंसिद्धिहेतवे ॥

ॐ अस्म्मे रुद्रा मेहना पर्व्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः । यः शंसते स्तुवते धायि पज्र ऽइन्द्रज्ज्येष्ठा ऽअस्म्माँ२॥ ऽअवन्तु देवाः ॥

पूर्वैशानयोर्मध्ये—ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मन् इहागच्छ इह तिष्ठ ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि ॥ ६ ॥

'पद्मयोनिं चतुर्मूर्तिं०' श्लोक एवं 'ॐ अस्मे रुद्रा मेहना०' मन्त्र से लेकर 'ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि' तक कहकर पूर्व और ईशान कोण के मध्य ब्रह्मा का आवाहन और स्थापन करना चाहिए ॥ ६ ॥

अनन्तं सर्वनागानामधिपं विश्वरूपिणम् ।
जगतां शान्तिकर्तारं मण्डले स्थापयाम्यहम् ॥

ॐ स्योना पृथिवि नो भवान्नृक्षरा निवेशनी । यच्छा नः शर्म्म सप्रथाः ॥

निर्ऋति-पश्चिमयोर्मध्ये–ॐ भूर्भुवः स्वः अनन्तेहागच्छ इह तिष्ठ अनन्ताय नमः, अनन्तमावाहयामि स्थापयामि ॥१०॥

'अनन्तं सर्वनागानामधिपं०' श्लोक एवं 'ॐ स्योना पृथिवि०' मन्त्र से आरम्भ कर 'अनन्तमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त उच्चारण कर निर्ऋति और पश्चिम के मध्य अनन्त का आवाहन एवं स्थापन करे ॥ १० ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च ।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन ॥

ॐ मनो॑ जूतिर्जु॑षतामाज्य॑स्य बृह॒स्पति॑र्य॒ज्ञमि॒मं त॑नोत्वरि॑ष्टं य॒ज्ञꣳ समि॒मं द॑धातु । विश्वे॑ दे॒वास॑ इ॒ह मा॑दयन्ता॒मो३॒ प्रति॑ष्ठ ॥

ॐ सूर्यादि-अनन्तान्तदेवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदा भवन्तु ।

दाहिने हाथ में अक्षत लेकर 'अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु०' यह श्लोक एवं 'ॐ मनो जूतिर्जुषता०' मन्त्र से लेकर 'सूर्यादि-अनन्तान्तदेवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदा भवन्त०' पर्यन्त उच्चारण कर ग्रह की चौकी पर अक्षत छोड़े ।

ततः 'सूर्यादि-अनन्तान्तदेवताभ्यो नमः' इति पठित्वा, आसनाद्युपचारैः प्रत्येकमेकत्र वा सम्पूज्य, प्रार्थयेत्। प्रार्थना–

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनि-राहु-केतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु॥

ॐ ग्रहाऽऊर्जाहुतयो व्यन्तो विप्राय मतिम्। तेषां

उसके बाद 'सूर्यादि-अनन्तान्त-देवताभ्यो नमः' वाक्य पढ़कर प्रत्येक का अथवा एक मन्त्र से (इकट्ठे ही) सूर्यादि अनन्तान्त देवताओं का षोडशोपचार या पंचोपचार से पूजन करे।

प्रार्थना—'ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी०' इस श्लोक तथा 'ॐ ग्रहा ऊर्जाहुतयो०' से 'स्त्वा जुष्टतमम्' पर्यन्त मन्त्र उच्चारण कर सूर्यादि अनन्तान्त देवताओं की यजमान प्रार्थना करे।

विशिंप्रियाणां व्वोऽहमिषमूर्ज्जं समग्ग्रभमुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्म्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ॥

यजमानो दक्षिणहस्ते जलमादाय, अनया पूजया सूर्यादि-अनन्तान्त-देवताः प्रीयन्ताम्। इत्युक्त्वा भूमौ जलं क्षिपेत्।

इत्यावाहित-सूर्याद्यनन्तान्तदेवानामावाहनं स्थापनं पूजनं च समाप्तम्।

पुनः यजमान दाहिने हाथ में जल लेकर 'अनया पूजया सूर्यादि-अनन्तान्तदेवताः प्रीयन्ताम्' पढ़कर भूमि पर जल छोड़ दें।

इस प्रकार सूर्यादि-अनन्तान्त देवताओंका आवाहन, स्थापन और पूजन समाप्त।

असंख्यात-रुद्रकलश-स्थापनं पूजनं च

ततो ग्रहस्येशानदिग्भागे कलशस्थापनविधिना रुद्रकलशं संस्थाप्य, कलशे वरुणम् असङ्ख्यातरुद्रांश्चाऽऽवाह्य, पूजयेत् । तद्यथा–

ॐ असङ्ख्याता सहस्राणि ये रुद्रा ऽअधि भूम्म्याम् ।
तेषाᳬंसहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ।

असङ्ख्यातरुद्रेभ्यो नमः, असङ्ख्यातरुद्रानावाहयामि स्थापयामि ।

ॐ मनो जूतिर्ज्जुषतामाज्यस्य बृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमं

ग्रह के ईशान कोण में कलश-स्थापनविधि से रुद्रकलश की स्थापना कर, कलश में वरुण तथा असंख्यात रुद्रों का आवाहन कर पूजन करे। वह इस प्रकार है—

कलशस्थापन के बाद 'ॐ असंख्याता सहस्राणि०' से 'असंख्यातरुद्रानावाहयामि स्थापयामि' तक पढ़कर उस कलश में असंख्यात रुद्रों का आवाहन करे। तथा दाहिने हाथ में अक्षत लेकर 'ॐ मनो जूतिः०' इस मन्त्र द्वारा

तंनोत्वरिष्टं य्यज्ञꣳसमिमं दधातु । विश्वेदेवास ऽइह मादयन्तामो ँ३ प्रतिष्ठ ॥

इति मन्त्रेण असङ्ख्यातरुद्रान् प्रतिष्ठापयेत् ।

ततः 'असङ्ख्यातरुद्रेभ्यो नमः' इत्युक्त्वा, पञ्चोपचारैः, षोडशोपचारैर्वाऽसंख्यातरुद्रान् पूजयेत् ।

इत्यसंख्यात-रुद्रकलशस्थापनं पूजनं च समाप्तम् ।

अक्षत छिड़क कर, असंख्यात रुद्रों की स्थापना करे । और 'असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः' कहकर कलश स्थित असंख्यात रुद्रों की पंचोपचार या षोडशोपचार से पूजन करे ।

इस प्रकार असंख्यात रुद्रों का आवाहन एवं पूजन समाप्त ।

*

कुशकण्डिकाकरणम्

अग्नेर्दक्षिणतो ब्रह्मासनम् । अग्नेरुत्तरतः प्रणीतासनद्वयम् । ब्रह्मासने ब्रह्मोपवेशनम्[1] । 'यावत्कर्म समाप्यते तावत् त्वं ब्रह्मा भव' इति यजमानः । 'भवामि' इति ब्रह्मा वदेत् ।

ततो ब्रह्मणाऽनुज्ञातः प्रणीताप्रणयनम् । तद्यथा–

कुशकण्डिका— असंख्यात रुद्रस्थापन, पूजन के बाद इस प्रकार कुशकण्डिका करे ।

एक छोटी चौकी अथवा पत्तल पर अग्नि से दक्षिण भाग में ब्रह्मा का आसन स्थापित करे। अग्नि के उत्तर भाग में प्रणीताके लिए दो कुशा रखे। ब्रह्मा के स्थान में पचास कुशाओंमें ग्रन्थिबनाकर ब्रह्माके आसन पर स्थापित करे। और यजमान 'यावत्कर्म समाप्यते तावत् त्वं ब्रह्मा भव' यह वाक्य ब्रह्मा से कहे। ब्रह्मा भी, 'भवामि' इस प्रकार कहें।

उसके बाद ब्रह्माकी आज्ञा लेकर प्रणीता पात्र में जल भरे। उसका क्रम इस प्रकार है—प्रणीता पात्र को अपने

१. पञ्चाशता भवेद् ब्रह्मा तदर्द्धेन तु विष्टरः । ऊर्ध्वकेशो भवेद् ब्रह्मा लम्बकेशस्तु विष्टरः ॥
दक्षिणावर्तो ब्रह्मा च वामावर्तस्तु विष्टरः । विष्टरं सर्वयज्ञेषु लक्षणं परिकीर्तितम् ॥

प्रणीतापात्रं पुरतः कृत्वा, वारिणा परिपूर्य, कुशैराच्छाद्य, प्रथमासने निधाय, ब्रह्मणो मुखमवलोक्य, द्वितीयासने निदध्यात् ।

ईशानादिपूर्वाग्रैः कुशैः परिस्तरणम् । तद्यथा–ततो बर्हिषश्चतुर्थभागमादाय । आग्नेयादीशानान्तम्, उदगग्रैर्वा । ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तं प्रागग्रैः, नैर्ऋत्याद् वायव्यान्तम्, उदगग्रैर्वा । अग्नितः प्रणीतापर्यन्तं प्रागग्रैः, इतरथावृत्तिः ।

आगे रख, उसमें जल भरकर, उसे कुशाओं से आच्छादित (ढाँक देवे) करे तथा उस पात्र को पहले आसन पर रख कर ब्रह्मा का मुख देख प्रणीता पात्र को दूसरे आसनपर रखे ।

तत्पश्चात् कुशा-द्वारा अग्निकोण से ईशान कोण तक परिस्तरण करे । वह इस प्रकार है—बर्हि-कुश (इक्यासी, चौंसठ अथवा मुट्ठी भर कुशसमूह को बर्हि कहते हैं) के चौथे भाग को बायें हाथ में लेकर, दाहिने हाथ से उत्तर की ओर, अग्नि-कोण से ईशान कोण पर्यन्त, और पूर्वाग्र कुशाओं से ब्रह्मा के आसनसे अग्निकुण्ड (वेदी) तक, उत्तराग्र कुशाओं से नैऋत्य कोण से लेकर वायव्य कोण तक, और पूर्वाग्र कुशाओं द्वारा अग्निकुण्ड (वेदी) से प्रणीता पात्र पर्यन्त कुशा बिछा दे । पुनः हाथ में जल लेकर उलटा घुमावे ।

पात्रासादनम्

ततः पात्रासादनं कुर्यात्। तद्यथा–त्रीणि पवित्रे द्वे। प्रोक्षणीपात्रम्। आज्यस्थाली। चरुस्थाली। सम्मार्जनकुशाः पञ्च। उपयमनकुशाः सप्त। समिधस्तिस्रः। स्रुवः। आज्यम्। तण्डुलाः। पूर्णपात्रम्। वृषनिष्क्रयदक्षिणा। उपकल्पनीयानि द्रव्याणि निधाय।

पवित्रच्छेदनानि–द्वयोरुपरि त्रीणि निधाय। द्वौ मूलेन प्रदक्षिणीकृत्य, सर्वान् युगपदनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां धृत्वा। त्रिभिश्छिद्य। द्वौ ग्राह्यौ,

---

पात्रासादन—तत्पश्चात् पात्रासादन (यज्ञनिमित्त, यज्ञीयवस्तु स्थापन) करे। वह इस प्रकार से है–एक स्थान में तीन कुशा, और दूसरी जगह दो कुशा, प्रोक्षणी पात्र, आज्य स्थाली (घृतपात्र), चरु स्थाली (चावल पकाने का बटगुना), पाँच संमार्जन कुशा, सात उपयमन कुशा, तीन समिधा, स्रुवा, घी, चावल, पूर्णपात्र, वृष मूल्य भूत दक्षिणा तथा और भी स्थापन करने योग्य वस्तुओं को रखे।

उसके बाद पवित्र छेदन करे। उसका क्रम यह है कि–स्थापित दो कुशाओं पर तीन कुशा रखे और दो कुशा

त्रिस्त्याज्यः । प्रोक्षणीपात्रे प्रणीतोदकमासिच्य, त्रिः पूर्णं, पवित्राभ्यामुत्पवनम् । प्रोक्षण्याः सव्यहस्तकरणम् । दक्षिणेनोद्दिङ्गनम् ।

ततः प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीप्रोक्षणम् । प्रोक्षण्युदकेन आज्यस्थाल्याः प्रोक्षणम् । चरुस्थाल्याः प्रोक्षणम् । सम्मार्जनकुशानां प्रोक्षणम् । उपयमनकुशानां प्रोक्षणम् । समिधां प्रोक्षणम् । स्रुवस्य प्रोक्षणम् ।

के मूल भाग से प्रदक्षिण (घुमा) कर, उन पाँचों कुशाओं को दो बार अनामिका-अँगूठे से पकड़ कर तीन कुशाओं को तोड़ दे । अर्थात् उन में से दो कुशाओं को ग्रहण कर, तीन कुशाओं का परित्याग कर दे । हाथ में उन कुशाओं को लेकर प्रणीता पात्र के जल को तीन बार प्रोक्षणी पात्र में छोड़े । फिर अनामिका अँगुलि और अँगूठे से पवित्री पकड़ कर तीन बार प्रोक्षणी पात्र के जल को प्रादेश मात्र (एक बित्ता) ऊपर की ओर उछाले । पुनः प्रोक्षणी पात्र को बायें हाथ में लेकर दाहिने हाथ से उस प्रोक्षणी पात्र के जल को ऊपर की ओर उछाले ।

उसके बाद प्रणीतापात्र के जल से प्रोक्षणी पात्र का प्रोक्षण (सिंचन) करे । इसी प्रकार चरु-स्थाली, संमार्जन कुशा, उपयमन कुशा, समिधा, स्रुवा, घी, चावल, पूर्णपात्र एवं वहाँ रखे हुए सभी यज्ञीय वस्तुओं का प्रोक्षणी के

आज्यस्य प्रोक्षणम्। तण्डुलानां प्रोक्षणम्। पूर्णपात्रस्य प्रोक्षणम्। उपकल्पनीयानां पदार्थानां प्रोक्षणम्। असञ्चरे प्रोक्षणीर्निधाय।

आज्यस्थाल्यामाज्यनिर्वापः। चरुस्थाल्यां प्रणीतोदकासेकपूर्वकं तण्डुलप्रक्षेपः। ब्रह्मणो दक्षिणत आज्याधिश्रयणम्। चरोरधिश्रयणं स्वयमाज्यस्योत्तरतः। ज्वलदुल्मुकेनोभयोः पर्यग्निकरणम्। इतरथावृत्तिः। उदकोपस्पर्शः। अर्धश्रिते चरौ अधोमुखस्य स्रुवस्य प्रतपनम्। सम्मार्जनकुशैः स्रुवस्योर्ध्वमुखस्य सम्मार्जनम्। अग्रैरन्तरतो मूलैर्बाह्यतः

जल से प्रोक्षण (सिंचन) करे। तथा अग्नि और प्रणीता पात्र के मध्य में प्रोक्षणी पात्र को रख दे।

पुनः घृतपात्र में घी भरे, अग्नि के पश्चिम पवित्र सहित चरु स्थाली (चरु पात्र) में प्रणीता जल से आसिंचन पूर्वक चावलों को छोड़े। ब्रह्मा के दाहिनी ओर घृत पात्र को रखे। घृत पात्र के उत्तर से चरुपात्र अग्नि पर चढ़ावे। और जलती हुई लकड़ी लेकर उस घृत पात्र के चारों ओर सीधा घुमावे। पुनः उसी तरह उलटा घुमावे। तत्पश्चात् जल का स्पर्श करे। चरु (चावल) के आधे पक जाने पर स्रुवा हाथ में लेकर, उसे नीचे की ओर से अग्नि में तप कर संमार्जन कुशा के अग्रभाग से स्रुवा के ऊर्ध्व मुख (ऊपरी भाग) का सम्मार्जन और स्रुवा के अन्तर (मध्य)

स्रुवं सम्मृज्य। प्रणीतोदकेनाऽभ्युक्षणम्। सम्मार्जनकुशानामग्नौ प्रक्षेपः।

पुनः प्रतपनं, दक्षिणदेशे निधानम्। आज्योद्वासनम्। चरुं पूर्वेणानीयाऽग्नेरुत्तरतः स्थापयेत्। चरोरुद्वासनम्। अग्नेरुत्तरत एवाज्यस्य प्रदक्षिणीकृत्य, आज्यस्योत्तरतश्चरुं स्थापयेत्।

आज्योत्पवनम्। आज्यावेक्षणम्। अपद्रव्यनिरसनम्। पुनः प्रोक्षण्युत्पवनम्। वामहस्ते उपयमनकुशानादाय। उत्तिष्ठन् समिधो-

---

तथा मूल एवं बाहरी भाग का सम्मार्जन कर प्रणीता के जल से स्रुवा का अभ्युक्षण और सम्मार्जन कुशा द्वारा करे। तथा उन कुशाओं को अग्नि में छोड़ दे।

तदनन्तर स्रुवा को तपा कर अपनी दाहिनी ओर रखे। और घृत पात्र को अग्नि पर से उतार कर चरु को पूर्व दिशा से ले आकर, अग्नि के उत्तर की ओर स्थापित करे। पुनः चरु पात्र को अग्नि पर से उतार कर, अग्नि के उत्तर ओर से ही घृत पात्र की प्रदक्षिणा कर और उस (घृत पात्र) के उत्तर की ओर चरुपात्र को रख दे।

उसके बाद कुशा से घी को उछाले और घी को अच्छी प्रकार से देख ले एवं उसमें पड़े हुए तृण आदि अपद्रव्य को निकाल दे। फिर प्रोक्षणी जल को घृत पात्र में छिड़के। बायें हाथ में सात उपयमन कुशाओं को लेकर, घी लगे

भ्यादाय, घृताक्ताः समिधस्तिस्रः अग्नौ क्षिपेत्। प्रोक्षण्युदकेन सपवित्रहस्तेन ईशानादि अग्नेः प्रदक्षिणं पर्युक्षणम्। इतरथावृत्तिः।

पवित्रयोः प्रणीतासु निधानम्। दक्षिणं जान्वाच्य, ब्रह्मणा कुशैरन्वारब्ध[1]ः। समिद्धतमेऽग्नौ स्रुवेणाज्यहोमः। अग्नेरुत्तरभागे—ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम। अग्नेर्दक्षिणभागे—ॐ इन्द्राय स्वाहा।

हुए तीन समिधाओं को खड़े होकर अग्नि में छोड़े। पुनः पवित्रधारण किये हुए हाथ से प्रोक्षणी जल द्वारा ईशान कोण से ईशान कोण तक अपने दाहिने हाथ को घुमा दे। और इसी प्रकार प्रोक्षणी पात्र के जल को अग्नि (वेदी) से ईशान कोण तक उलटा घुमावे।

तत्पश्चात् उन दोनों कुशाओं को प्रणीता पात्र में रख दे। और अपना दाहिना घुटना मोड़ कर ब्रह्मा से कुशाओं द्वारा सम्बन्ध कर प्रज्वलित (धधकती) अग्नि में स्रुवा से घी की आहुति प्रदान करे। अग्नि के उत्तर भाग में—'ॐ प्रजापतये स्वाहा' से लेकर 'इदं प्रजापतये न मम' पर्यन्त, अग्नि के दक्षिण भाग में—'ॐ इन्द्राय स्वाहा'

१ अन्वारम्भे कृते होमे ब्रह्मणा दक्षिणे करे। बहुकाष्ठैः समिन्धीयादर्चिष्मन्तं क्रियाक्षमम्॥ १॥
भूरादिनवसु स्विष्टकृति स्वच्छे चतुष्टये। अन्वारब्धो भवेत्तेषु सोऽन्वारम्भः कुशेन हि॥ २॥
२ स्रुवधारणार्थं कारिका-अग्रमध्याच्च यन्मध्यं मूलमध्याच्च मध्यतः। स्रुवं धारयते विद्वान् ज्ञातव्यं च सदा बुधैः॥
स्रुवहोमे सदा त्यागः प्रोक्षणीपात्रमध्यतः॥ पाणिहोमे त्यागो न।

इदमिन्द्राय न मम। समिद्धतमे—ॐ अग्नये स्वाहा। इदमग्नये न मम। ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय न मम।

ततः सूर्यादिग्रहाणाम्-अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-गणपत्यादिपञ्चलोकपाल-वास्तोष्पति-क्षेत्रपालदेवतानाम्—इन्द्रादि-दशदिक्पालदेवतानां च प्रत्येकं [1]समित्तिल-चर्वाज्यद्रव्यैरष्टोत्तरशतमष्टाविंशतिमष्टौ वा जुहुयात्।

से 'इन्द्राय न मम' तक, पुनः प्रज्वलित अग्नि में 'ॐ अग्नये स्वाहा' से 'इदं सोमाय न मम' तक पढ़कर आहुति प्रदान करे। और अन्त में 'न मम' कहकर आहुति से बचे हुए स्रुवा के घी को प्रोक्षणी पात्र में छोड़ दे।

उसके बाद सूर्यादि-अनन्तान्त ग्रह, अधिदेवता, प्रत्यधिदेवता, गणपत्यादि पंचलोकपाल, वास्तोष्पति, क्षेत्रपाल एवं इन्द्रादि दश दिक्पाल देवों का समिधा, तिल, चावल और घृत से अर्थात् चरु से प्रत्येक देवता का एक सौ आठ, अट्ठाईस अथवा आठ बार हवन करे।

१. अर्कः पलाशः खदिरो ह्यपामार्गश्च पिप्पलः। औदुम्बर-शमीः दूर्वा कुशाश्च समिधो नव॥

२. तत्र प्रमाणम्-तिलार्धं तण्डुलाः प्रोक्ताः तण्डुलार्द्धं यवास्तथा। यवार्द्धं शर्करा प्रोक्ता आज्यभागचतुष्टयम्॥ १॥
(अथवा) यवार्द्धं तण्डुलाः प्रोक्ताः तण्डुलार्द्धं तिलास्तथा। तिलार्द्धं शर्करा प्रोक्ता आज्यभागचतुष्टयम्॥ २॥

सङ्कल्पः—यजमानो हस्ते जलमादाय, 'अस्मिन् ग्रहशान्तिकर्मणि (अमुकाख्ये कर्मणि वा) इमानि हवनीयद्रव्याणि या या यक्ष्यमाणदेवता-स्ताभ्यस्ताभ्यो मया परित्यक्तं न मम, इत्युच्चार्य, भूमौ जलं प्रक्षिपेत्। पुनः 'यथा दैवतानि सन्तु' इति वदेत्।

इति कुशकण्डिकाकरणं समाप्तम्।

संकल्प—पुनः यजमान दाहिने हाथ में जल लेकर 'अस्मिन् ग्रहशान्तिकर्मणि०' से 'मया परित्यक्तं न मम' तक कहकर भूमि पर जल छोड़ दे। और 'यथा दैवतानि सन्तु' यह वाक्य कहे।

इस प्रकार कुशकण्डिका समाप्त।

—*—

आवाहित-देवानां हवनम्

ततः 'ॐ गणानां त्वा०' इत्यारभ्य, 'ॐ स्योना पृथिवि०' इत्यन्तं प्रतिमन्त्रं हवनीयद्रव्येण (चर्वाज्य-मिश्रित-तिलेन) जुहुयात् । तद्यथा-

ॐ गणानां त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिꣳ हवामहे वसो मम । आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् स्वाहा ॥ १ ॥

आवाहित देवताओं का हवन – तत्पश्चात 'ॐ गणानां त्वा०' मन्त्र से लेकर 'ॐ स्योना पृथिवि०' मन्त्र से लेकर 'ॐ स्योना पृथिवि०' मन्त्र पर्यन्त एक-एक मन्त्र पढ़कर आवाहित देवताओं को चरु (चावल, घी और तिल मिले हुए) से अग्नि में आहुति प्रदान करे ।

इस प्रकार आवाहित देवताओं का हवन समाप्त ।

ॐ अम्बे ऽअम्बिके ऽम्बालिके न मा नयति कश्चन । ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकाँ काम्पीलवासिनीम् स्वाहा ॥२॥

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च । हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ इमं देवा ऽअसपत्नꣳसुवद्ध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय । इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश ऽएष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाꣳ राजा स्वाहा ॥ २ ॥

ऋ० द० २६३

ॐ अ॒ग्निर्मू॒र्द्धा दि॒वः क॒कुत्पतिः॑ पृथि॒व्या अ॒यम् । अ॒पाᳬं रेताᳬंसि जिन्वति स्वाहा ॥३॥ ॐ उद्बु॑ध्यस्वाग्ने प्रति॑जागृहि त्वमि॑ष्टापू॒र्ते सᳬं सृ॑जेथामु॒यं च॑ । अ॒स्मिन्त्स॒धस्थे॒ अध्युत्त॑रस्मि॒न् विश्वे॑देवा॒ यज॑मानश्च सीदत स्वाहा ॥४॥ ॐ बृह॑स्पते॒ अति॒ यद॒र्यो अर्हा॑द्द्यु॒मद्वि॒भाति॒ क्रतु॑मज्जने॑षु । यद्दी॒दय॒च्छव॑स ऋतप्रजात॒ तद॒स्मासु॒ द्रवि॑णं धेहि चि॒त्रम् स्वाहा ॥ ५ ॥

आ० दे० ह० २६३

ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः । ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानꣳ शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु स्वाहा ॥ ६ ॥

ॐ शं नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये । शं य्योरभिस्रवन्तु नः स्वाहा ॥ ७ ॥ ॐ कया नश्चित्रऽआभुवदूती सदावृधः सखा । कया शचिष्ठयाऽवृता स्वाहा ॥ ८ ॥

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्य्या अपेशसे । समुषद्भिर-

जायथाः स्वाहा ॥ ९ ॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम् । उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् स्वाहा ॥ १० ॥

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणामुं म ऽइषाण सर्व्वलोकं म ऽइषाण स्वाहा ॥ ११ ॥ ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान ऽउद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात् । श्येनस्य पक्षा हरिणस्य

बाहू उपस्तुत्यं महिं जातं तै ऽअर्व्वन् स्वाहा ॥ १२ ॥

ॐ विष्णों रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवे त्त्वा स्वाहा॥ १३॥

ॐ आ ब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्च्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर ऽइषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्ध्रिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे

नः पुर्ज्जन्यो व्वर्षतु फलवत्यो न ऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् स्वाहा ॥ १४ ॥

ॐ सुजोषा ऽइन्द्र सगणो मुरुद्भिः सोमं पिब व्वृत्रहा शूर विद्वान्। जहि शत्रूँ२॥ रप मृधो नुदु स्वाथाभयं कृणुहि व्विश्वतो नः स्वाहा ॥१५॥ ॐ युमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घुर्माय स्वाहा घुर्मः पित्रे स्वाहा ॥ १६ ॥

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्या उन्नयामि। समापो

अ० प० २६८

ऽअद्भिरंग्मत समोषधीभिरोषधीः स्वाहा ॥ १७ ॥

ॐ चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय स्वाहा ॥ १८ ॥

ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे । देवाँ२॥ऽआसादयादिह स्वाहा ॥१९॥ ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता नऽउर्ज्जे दधातन । महे रणाय चक्षसे स्वाहा ॥ २० ॥

ॐ स्योना पृथिवि नो भवान्नृक्षरा निवेशनी । यच्छा नः शर्म्म सप्रथाः स्वाहा ॥ २१ ॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढमस्य पाᳬसुरे स्वाहा ॥२२॥

आ० दे० ह० २६८

ॐ इन्द्र॑ऽआसां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर ऽएतु सोमः॑ । देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम् स्वाहा ॥२३॥ ॐ अदित्यै रास्नासीन्द्राण्या उष्णीषः । पूषासि घर्माय दीष्व स्वाहा ॥२४॥

ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परि ता बभूव । यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो ऽअस्त्वयममुष्य पिता-सावस्य पिता व्वयꣳस्याम पतयो रयीणाꣳस्वाहा ॥२५॥

ग्रह० ०५ ३००

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु । ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः स्वाहा ॥ २६ ॥ ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन ऽआवः । स बुध्न्या ऽउपमा ऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः स्वाहा ॥ २७ ॥ ॐ गणानां त्वा गणपतिं हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिं हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिं हवामहे वसो मम । आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि

आ०दे० हव० ३००

गर्ब्भधम् स्वाहा ॥२८॥ ॐ अम्बे ऽअम्बिके ऽम्बालिके न

मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पील-

वासिनीम् स्वाहा ॥ २९ ॥ ॐ वायो ये ते सहस्रिणो

रथासस्तेभिरागहि । नियुत्वान्त्सोमपीतये स्वाहा ॥ ३० ॥

ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य

हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिश ऽआदिशो विदिश ऽउद्दिशो

दिग्भ्यः स्वाहा ॥३१॥ ॐ या वां कशा मधुमत्यश्विना

अ०२३ म०२८ क०३०१ २९ २३०१ ३० ३०१

सूनृतावती । तया यज्ञं मिमिक्षतम् स्वाहा ॥३२॥

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशो ऽअनमीवो भवानः। यत्त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे स्वाहा ॥३३॥ ॐ नहि स्पशमविदन्नन्य-मस्माद् वैश्वानरात्पुर ऽएतारमग्नेः । एमेनमवृधन्नमृता ऽअमर्त्यं वैश्वानरं क्षैत्रजित्याय देवाः स्वाहा ॥ ३४ ॥ ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳ हवे हवे सुहवꣳ शूरमिन्द्रम् ।

ह्वयामि शुक्रं पुरुहूतमिन्द्रघँ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ॥३५॥

ॐ त्वन्नो ऽअग्ने तव देव पायुभिर्म्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य । त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेषघँ रक्षमाणस्तव व्रते स्वाहा ॥ ३६ ॥ ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा । स्वाहा घर्म्माय स्वाहा घर्म्मः पित्रे स्वाहा ॥ ३७ ॥ ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य । अन्यमस्मदिच्छ सा त ऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु

स्वाहा ॥३८॥ ओँ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः । अहेडमानो वरुणेह बोद्ध्युरुशꣳस मा नऽआयुः प्रमोषीः स्वाहा ॥३९॥ ओँ आनो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरꣳ सहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम् । व्वायो-ऽअस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः स्वाहा ॥४०॥ ओँ व्वयꣳ सोम व्रते तव मनस्तनूषु विभ्रतः प्रजावन्तः सचेमहि स्वाहा ॥४१॥ ओँ तमीशानं जगतस्तु-

स्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे व्वयम् । पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥ ४२ ॥
ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो व्वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः यः शंसते स्तुवते धायि पज्र इन्द्र ज्येष्ठा ऽअस्माँ२॥ ऽअवन्तु देवाः स्वाहा ॥ ४३ ॥ ॐ स्योना पृथिवि नो भवान्नृक्षरा निवेशनी । यच्छा नः शर्म सप्रथाः स्वाहा॥४४॥

इत्यादिमन्त्रैरावाहितदेवानां हवनं कुर्यात् ।

प्रधानहोमः

प्रधानो विष्णुश्चेत्तदा 'ॐ इदं विष्णुः०' इति मन्त्रेण, शिवस्य 'ॐ 'नमस्ते रुद्र०' इति मन्त्रेण, अम्बिकायाः 'ॐ अम्बे ऽअम्बिके०' इति मन्त्रेण च। एवं गणपत्यादिप्रधानश्चेत्तदा तत्तन्मन्त्रैरष्टोत्तरशतं जुहुयात्।

प्रधान हवन—यदि विष्णु प्रधान हों, तो 'ॐ इदं विष्णु०' इस मन्त्र से, शिव प्रधान हों, तो 'ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव०' इस मन्त्र से, अम्बिका (देवी) के प्रधान होने पर 'ॐ अम्बे अम्बिके०' इस मन्त्र से तथा गणपति आदि की प्रधानता में उन-उन देवों के मन्त्रों से एक सौ आठ आहुति देवे।

इस प्रकार प्रधान हवन समाप्त।

—*—

सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवानां हवनम्

ततः प्रधानहोमानन्तरं ब्रह्मादि-सर्वतोभद्रमण्डल-देवताश्च एकैकया-ऽऽज्याहुत्या जुहुयात्। तद्यथा—'ब्रह्मणे नमः स्वाहा' इत्यारभ्य, 'वैनायक्यै नमः स्वाहा' इत्यन्तं हवनं कुर्यात्।

सर्वतोभद्र मण्डल स्थित देवोंका हवन—प्रधान हवन के बाद सर्वतोभद्र मण्डलस्थित ब्रह्मादि देवों का घृत द्वारा एक-एक आहुति अग्नि में प्रदान करे। वह इस प्रकार है—'ब्रह्मणे नमः स्वाहा' से 'वैनायक्यै नमः स्वाहा' पर्यन्त उच्चारण कर छप्पन देवताओं को घी से एक-एक आहुति देवे।

इस प्रकार सर्वतोभद्रमण्डलदेवताओं का हवन समाप्त।

**

स्विष्टकृत्-हवनम्

अग्निपूजनम्। तद्यथा—

ॐ अग्ग्ने नय सुपथा राये ऽअस्मान्विश्वानि देव व्युनानि व्विद्वान्। युयोध्ध्यस्म्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम ऽउक्तिं व्विधेम॥

'ॐ स्वाहा-स्वधायुताग्नये वैश्वानराय नमः' इति मन्त्रेण गन्धा-ऽक्षत-पुष्पादिभिरग्निं सम्पूजयेत्। इत्यग्निपूजनम्।

स्विष्टकृत्-हवन और अग्निपूजन—यजमान दाहिने हाथमें गन्ध, अक्षत और पुष्प लेकर 'ॐ अग्ने नय सुपथा०' इस मन्त्र से लेकर 'वैश्वानराय नमः' पर्यन्त वाक्य पढ़कर प्रज्वलित अग्नि का पूजन करे।

इस प्रकार अग्निपूजन समाप्त।

ततो हुतशेषहविर्द्रव्यं गृहीत्वा, ब्रह्मणान्वारब्धः स्विष्टकृद्होमं कुर्यात्।
ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा। इदमग्नये स्विष्टकृते न मम। इति
हुतशेषाऽऽज्यस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः।

तत्पश्चात् बचे हुए शाकल्य (चरु) लेकर ब्रह्मा को कुशा से स्पर्श कर 'ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा' पढ़कर अग्नि में छोड़ दे। और 'इदमग्नये स्विष्टकृते न मम' कहकर स्रुवा के घृत का प्रोक्षणी पात्र में प्रक्षेप करे।

इस प्रकार स्विष्टकृत्-हवन समाप्त।

—**—

भूरादिनवाहुतयः

ततो भूराद्या नवाहुतयः कुर्युः। तद्यथा—ॐ भूः स्वाहा। इदमग्नये न मम। ॐ भुवः स्वाहा। इदं वायवे न मम। ॐ स्वः स्वाहा। इदं सूर्याय न मम।

ॐ त्वं नो ऽअग्ने व्वरुणस्य व्विद्वान्देवस्य हेडो ऽअवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो व्वह्नितमः शोशुचानो व्विश्वा द्वेषाᳬंसि प्प्रमुमुग्ध्यस्स्मत् स्वाहा॥ इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम।

भूरादि नवाहुति—उसके बाद स्रुवा में घी लेकर 'ॐ भूः स्वाहा' आदि नव आहुति अग्नि में प्रदान करे। वह इस प्रकार है—'ॐ भूः स्वाहा' से लेकर 'इदं प्रजापतये न मम' तक कहकर प्रत्येक मन्त्रों से क्रमशः घी की आहुति दे। एवं 'न मम' कहकर शेष घृत को प्रोक्षणी पात्र में छोड़ दे।

ॐ स त्वं नो ऽअग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो ऽअस्या ऽउषसो व्युष्टौ। अवयक्ष्व नो वरुणꣳ रराणो वीहि मृडीकꣳ सुहवो न ऽएधि स्वाहा ॥ इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम।

ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्ति पाश्च सत्यमित्वमया ऽअसि। अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषजꣳ स्वाहा ॥

इदमग्नये अयसे न मम।

ॐ ये ते शतं वरुणं ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता

महान्तः। तेभिर्न्नो ऽअद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्क्काः स्वाहा ॥

इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम।

ॐ उदुत्तमं व्वरुण पाशमस्म्मदवाधमं व्विमध्यमꣳ श्रथाय। अथा व्वयमादित्य व्व्रते तवानागसो ऽअदितये स्याम स्वाहा ॥

इदं वरुणायादित्यायादितये न मम। ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम। इति भूरादिनवाहुतयः।

दशदिक्पालादीनां बलिदानम्

अग्न्यायतनस्य समन्ताद् दिक्षु विदिक्षु च दशदिक्पालानां सदीप-दधि-माष-भक्तबलयो देयाः। तद्यथा—

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳ हवे हवे सुहवꣳ शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रꣳ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः॥

इति मन्त्रमुच्चार्य, इन्द्राय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीप-दधि-माष-भक्तबलिं समर्पयामि। इति वदेत्।

दश दिक्पालादिकों का पृथक्-पृथक् बलिदान—एक पत्तेपर दीप सहित और दही मिले हुए उड़द एवं कच्चा चावल एक में मिलाकर आवाहित दशदिक्पालादिकों के निमित्त प्रत्येक को बलिदान देवे। वह इस प्रकार है—

'ॐ त्रातारमिन्द्र०' यह मन्त्र और 'इन्द्राय साङ्गाय०' से 'वरदो भव' पर्यन्त वाक्य पढ़कर इन्द्रको पत्ते पर रखे

ततः भो इन्द्र! स्वां दिशं रक्ष, बलिं भक्ष, मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता, क्षेमकर्ता शुभकर्ता, शान्तिकर्ता, पुष्टिकर्ता, तुष्टिकर्ता वरदो भव। यजमानो हस्ते जलमादाय, 'अनेन बलिदानेन इन्द्रः प्रीयताम्'। इत्युक्त्वा भूमौ जलं क्षिपेत्। एवं सर्वत्र कर्तव्यम् ॥ १ ॥

ॐ त्वं नो अग्ने तव देव पायुभिर्म्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य। त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेषꣳ रक्षमाणस्तव व्व्रते ॥

हुए दीप सहित दही मिले हुए उड़द और चावल की बलि दे। तथा यजमान हाथ में जल लेकर 'अनेन बलिदानेन इन्द्रः प्रीयताम्' कहकर भूमि पर जल छोड़ दे ॥ १ ॥

'ॐ त्वं नो अग्ने०' यह मन्त्र तथा 'भो अग्ने!' से लेकर 'वरदो भव' पर्यन्त वाक्य उच्चारण कर अग्नि को बलि प्रदान करे। और यजमान हाथ में जल लेकर 'अनेन बलिदानेन०' पढ़कर भूमि पर जल छोड़ दे ॥ २ ॥

भो अग्ने! स्वां दिशं रक्ष, बलिं भक्ष, मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता, क्षेमकर्ता, शुभकर्ता, शान्तिकर्ता, पुष्टिकर्ता, तुष्टिकर्ता वरदो भव। यजमानो हस्ते जलमादाय, अनेन बलिदानेन अग्निः प्रीयताम् ॥२॥

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे ॥

यमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीप-दधि-माष-भक्तबलिं समर्पयामि । भो यम ! दिशं रक्ष, बलिं भक्ष मम० वरदो भव। अनेन बलिदानेन यमः प्रीयताम् ॥ ३ ॥

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि

'ॐ यमाय त्वा०' यह मन्त्र और 'यमाय साङ्गाय०' से 'वरदो भव' पर्यन्त वाक्य पढ़कर यम को बलि प्रदान करे। पुनः हाथ में जल लेकर 'अनेन बलिदानेन०' कहकर पृथ्वी पर जल गिरा दे ॥ ३ ॥

तस्क्करस्य । अन्यमुस्मदिच्छ सा त ऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ॥

निर्ऋतये सां० भक्तबलिं समर्पयामि । भो निर्ऋते दिशं रक्ष० । अनेन बलिदानेन निर्ऋतिः प्रीयताम् ॥ ४ ॥

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः । अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशꣳस मा न ऽआयुः प्रमोषीः ॥

'ॐ असुन्वन्तम०' यह मन्त्र एवं 'निर्ऋतये साङ्गाय०' से लेकर 'वरदो भव' तक वाक्य पढ़कर निर्ऋति को बलि प्रदान करे। और हाथ में जल ग्रहण कर 'अनेन बलिदानेन०' यह वाक्य पढ़कर भूमि पर जल का परित्याग करे॥४॥

वरुणाय सां० भो वरुण ! दिशं रक्ष, बलिं भक्ष० । अनेन बलिदानेन वरुणः प्रीयताम् ॥ ५ ॥

ॐ आ नो॑ नियुद्भिः॑ शतिनी॑भिरध्वरꣳ स॑हस्रिणी॑भिरुप॑याहि यज्ञम् । वायो॑ऽअस्मिन्त्सव॑ने मादयस्व यूयं पा॑त स्वस्तिभिः॒ सदा॑ नः ॥

वायवे सां० भक्तबलिं समर्पयामि । भो वायो ! दिशं रक्ष० । अनेन बलिदानेन वायुः प्रीयताम् ॥ ६ ॥

'ॐ तत्त्वा यामि०' प्रस्तुत मन्त्र, और 'वरुणाय साङ्गाय०' से 'वरदो भव' पर्यन्त वाक्य उच्चारण कर वरुण को बलि प्रदान करे । और हाथ में जल लेकर 'अनेन बलिदानेन०' यह वाक्य उच्चारण कर भूमि पर जल गिरा दे ॥ ५ ॥

'ॐ आ नो नियुद्भिः०' उक्त मन्त्र एवं 'वायवे साङ्गाय०' से 'वरदो भव' तक वाक्य कहकर वायु को बलि देवे। तथा हाथ में जल लेकर 'अनेन बलिदानेन' वाक्य कहकर भूमि पर जल छोड़ दे ॥ ६ ॥

ॐ व्वयꣳसोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः । प्रजावन्तः सचेमहि ॥

सोमाय सां० समर्पयामि। भो सोम ! दिशं रक्ष, बलिं भक्ष० । अनेन बलिदानेन सोमः प्रीयताम् ॥ ७ ॥

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे व्वयम् । पूषा नो यथा व्वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥

'ॐ वयꣳ० सोम०' यह मन्त्र और 'सोमाय साङ्गाय०' से 'वरदो भव' पर्यन्त वाक्य पढ़कर सोम को बलि प्रदान करे । और हाथ में जल लेकर 'अनेन बलिदानेन०' यह वाक्य उच्चारण कर पृथ्वी पर जल गिरा दे ॥ ७ ॥

ईशानाय सां० समर्पयामि। भो ईशान! दिशं रक्ष, बलिं भक्ष०। अनेन बलिदानेन ईशानः प्रीयताम् ॥ ८ ॥

ॐ अस्म्मे रुद्द्रा मेहना पर्व्वतासो व्वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाꣳ । यꣳ शꣳसते स्तुवते धायि पुज्ज्र ऽइन्द्द्रज्ज्येष्ठा ऽअस्म्माँ२॥ ऽअवन्तु देवाः ॥

ब्रह्मणे साङ्गाय सपरिवाराय० समर्पयामि। भो ब्रह्मन्! दिशं रक्ष, बलिं भक्ष०। अनेन बलिदानेन ब्रह्मा प्रीयताम् ॥ ९ ॥

'ॐ तमीशानं०' यह मन्त्र तथा 'ईशानाय साङ्गाय' से 'वरदो भव' तक वाक्य उच्चारण कर ईशान को बलि दे। पुनः हाथ में जल लेकर 'अनेन बलिदानेन०' इस वाक्य का उच्चारण कर भूमि पर जल छोड़ दे ॥ ८ ॥

'ॐ अस्मे रुद्रा०' यह मन्त्र एवं 'ब्रह्मणे साङ्गाय०' से आरम्भ कर 'वरदो भव' पर्यन्त वाक्य का उच्चारण कर ब्रह्मा को बलि प्रदान करे। पुनः हाथ में जल लेकर 'अनेन बलिदानेन०' वाक्य पढ़कर भूमि पर जल छोड़ दे ॥९॥

ॐ स्योना पृथिवि नो भवान्नृक्षरा निवेशनी। यच्छा नुः शर्म्म सप्रथाः ॥

अनन्ताय सां०समर्पयामि। भो अनन्त, दिशं रक्ष, बलिं भक्ष०। अनेन बलिदानेन अनन्तः प्रीयताम् ॥ १० ॥

ततो ग्रहवेदीसमीपे ग्रहादिभ्यः स-दीप-माष-भक्तबलयो देयाः।

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् स्वाहा ॥ १ ॥

'ॐ स्योना पृथ्वि०' उक्त मन्त्र तथा 'अनन्ताय साङ्गाय०' से 'वरदो भव' पर्यन्त वाक्य कहकर अनन्त को बलि प्रदान करे। पुनः हाथ में जल लेकर 'अनेन बलिदानेन' यह वाक्य पढ़कर भूमि पर जल गिरा दे ॥ १० ॥

इस प्रकार दश दिक्पालों का बलिदान समाप्त।

ग्रहाणां बलिदानम्

सूर्याय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय ईश्वराऽग्नि-रूपाधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहिताय एतं सदीप-दधि-माष-भक्तबलिं समर्पयामि। भो सूर्य! इमं बलिं गृहाण, मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शुभकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन सूर्यः प्रीयताम् ॥ १ ॥

ॐ इमं देवा ऽअसपत्नꣳ सुवद्ध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इममुष्य

ग्रहादिकों का बलिदान—उसके बाद ग्रहवेदी के सामने दीप सहित दही मिले हुए उड़द एवं चावल की बलि प्रत्येक ग्रहों को समर्पित करे।

'ॐ आ कृष्णेन०' यह मन्त्र तथा 'सूर्याय साङ्गाय०' से वरदो भव' पर्यन्त वाक्य समुच्चारण कर सूर्य को बलि प्रदान करे। पुनः हाथ में जल लेकर 'अनेन बलिदानेन०' यह वाक्य पढ़कर भूमि पर जल छोड़े ॥ १ ॥

पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै व्विश ऽएष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाᳪं राजा स्वाहा ॥ २ ॥

सोमाय साङ्गाय० । उमारूपाधिदेवता-प्रत्यधिदेवता० समर्पयामि । भो सोम! इमं बलिं गृहाण० । अनेन बलिदानेन सोमः प्रीयताम् ॥ २ ॥

ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या ऽअयम् । अपाᳪं रेताᳪंसि जिन्वति स्वाहा ॥ ३ ॥

ॐ 'इमं देवा०' यह मन्त्र तथा 'सोमाय साङ्गाय०' से 'वरदो भव' तक वाक्य कहकर सोमको बलि दे। और हाथ में जल लेकर 'अनेन बलिदानेन' यह वाक्य पढ़कर भूमि पर जल छोड़ दे ॥ २ ॥

भौमाय सां० स्कन्द-भूमिरूपाधिदेवता-प्रत्यधिदेवता० समर्पयामि । भो भौम! इमं बलिं० । अनेन बलिदानेन भौमः प्रीयताम् ॥ ३ ॥

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते सꣳसृजेथामयं च । अस्मिन्त्सधस्थे ऽअध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत स्वाहा ॥ ४ ॥

बुधाय साङ्गाय सपरिवाराय० नारायण-विष्णुरूपाधिदेवता-प्रत्यधि-

'ॐ अग्निर्मूर्धा' यह मन्त्र तथा 'भौमाय साङ्गाय०' से 'वरदो भव' तक वाक्य कहकर भौम (मङ्गल) को बलि दे। एवं हाथ में जल लेकर 'अनेन बलिदानेन' यह वाक्य उच्चारण कर भूमि पर जल छोड़ दे ॥ ३ ॥

'ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने' 'यह मन्त्र तथा 'बुधाय साङ्गाय०' से 'वरदो भव' तक वाक्य कहकर बुध को बलि दे।

देवता० समर्पयामि । भो बुध ! इमं बलिं गृहाण मम० । अनेन बलिदानेन बुधः प्रीयताम् ॥ ४ ॥

ॐ बृहस्पते ऽअति यदर्यो ऽअर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु । यद्दीदयच्छवसऽऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् स्वाहा ॥ ५ ॥

बृहस्पतये साङ्गाय० ब्रह्मेन्द्ररूपाधिदेवता-प्रत्यधिदेवता० समर्पयामि । भो बृहस्पते, इमं बलिं० । अनेन बलिदानेन बृहस्पतिः प्रीयताम् ॥ ५ ॥

तथा हाथ में जल लेकर 'अनेन बलिदानेन' उक्त वाक्य कहकर भूमि पर जल गिरा दे ॥ ४ ॥

'ॐ बृहस्पते०' यह मन्त्र तथा 'बृहस्पतये साङ्गाय०' से 'वरदो भव' तक वाक्य उच्चारण कर बृहस्पति को बलि दे । एवं हाथ में जल लेकर 'अनेन बलिदानेन' उक्त वाक्य कहकर भूमि पर जल का परित्याग करे ॥ ५ ॥

ग्रह० प० ३८५

ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानꣳ शुक्रमन्धस ऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु स्वाहा ॥ ६ ॥

शुक्राय सां० इन्द्रेन्द्राणीरूपाधिदेवता-प्रत्यधिदेवता० समर्पयामि। भो शुक्र, इमं बलिं०। अनेन बलिदानेन शुक्रः प्रीयताम् ॥ ६ ॥

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये। शं य्योरभिस्रवन्तु नः स्वाहा ॥ ७ ॥

१८

'ॐ अन्नात्परिस्रुतः०' उक्त मन्त्र तथा 'शुक्राय साङ्गाय०' से 'वरदो भव' तक कहकर शुक्र को बलि दे। और हाथ में जल लेकर 'अनेन बलिदानेन' यह वाक्य कहकर भूमि पर जल छोड़ दे ॥ ६ ॥

ग्रह० बलि० ३२५

शनैश्चराय सां० यमप्रजापतिरूपाधिदेवता-प्रत्यधिदेवता० समर्पयामि। भो शनैश्चर, इमं बलिं०। अनेन बलिदानेन शनैश्चरः प्रीयताम् ॥ ७ ॥

ॐ कया नश्चित्र ऽआभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठयाऽवृता स्वाहा ॥ ८ ॥

राहवे सां० कालसर्परूपाधिदेवता० समर्पयामि। भो राहो, इमं बलिं०। अनेन बलिदानेन राहुः प्रीयताम् ॥ ८ ॥

'ॐ शन्नो देवी०' यह मन्त्र एवं 'शनैश्चराय०' से 'वरदो भव' तक वाक्य उच्चारण कर शनि को बलि दे। और हाथ में जल लेकर 'अनेन बलिदानेन०' यह वाक्य कहकर भूमि पर जल छोड़ दे ॥ ७ ॥

'ॐ कया नश्चित्र०' यह मन्त्र एवं 'राहवे साङ्गाय०' से 'वरदो भव' पर्यन्त वाक्य उच्चारण कर राहु को बलि-दान दे। पुनः हाथ में जल लेकर 'अनेन बलिदानेन०' उक्त वाक्य पढ़कर भूमि पर जल छोड़ दे ॥ ८ ॥

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्य्या ऽअपेशसे। समुषद्भि-रजायथाः स्वाहा ॥ ९ ॥

केतवे सां० चित्रगुप्तब्रह्मरूपाधिदेवता-प्रत्यधिदेवता० समर्पयामि। भो केतो, इमं बलिं०। अनेन बलिदानेन केतुः प्रीयताम् ॥ ९ ॥

'ॐ केतुं कृण्वं०' उक्त मन्त्र तथा 'केतवे साङ्गाय०' से 'वरदो भव' तक वाक्य उच्चारण कर केतु को बलि प्रदान करे। और हाथ में जल लेकर 'अनेन बलिदानेन०' यह वाक्य पढ़कर भूमि पर जल गिरा दे ॥ ९ ॥

इस प्रकार ग्रहों का बलिदान समाप्त।

गणपत्यादि-पञ्चलोकपालानां बलिदानम्

ॐ गणानां त्वा गणपतिᳬं हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिᳬं हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिᳬं हवामहे वसो मम । आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् स्वाहा ॥ १ ॥

गणपतये साङ्गाय० समर्पयामि । भो गणपते, इमं बलिं० । अनेन बलिदानेन गणपतिः प्रीयताम् ॥ १ ॥

गणपत्यादि पंचलोकपालों का बलिदान—'ॐ गणानां त्वा०' यह मन्त्र तथा 'गणपतये साङ्गाय०' से 'वरदो भव' तक वाक्य कहकर गणपति को बलि प्रदान करे। पुनः हाथ में जल लेकर 'अनेन बलिदानेन०' यह वाक्य पढ़कर भूमि पर जल छोड़ दे ॥ १ ॥

ॐ अम्बे ऽअम्बिके ऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकाँ काम्पीलवासिनीम् स्वाहा ॥ २ ॥

दुर्गायै साङ्गायै० इमं०। भो दुर्गे, आयुःकर्त्री त्वं० शां० पु० तु० वरदा भव। अनेन बलिदानेन दुर्गा प्रीयताम् ॥ २ ॥

ॐ व्वायो ये ते सहस्रिणो रथासस्तेभिरागहि। नियुत्वान्त्सोमपीतये स्वाहा ॥ ३ ॥

वायवे सां० समर्पयामि। भो वायो, इमं बलिं०। अनेन बलिदानेन

'ॐ अम्बे अम्बिके०' उक्त मन्त्र तथा 'दुर्गायै साङ्गायै०' से 'वरदो भव' पर्यन्त वाक्य पढ़कर दुर्गा को बलि देवे। और हाथ में जल लेकर 'अनेन बलिदानेन०' यह वाक्य पढ़कर भूमि पर जल छोड़ दे ॥ २ ॥

'ॐ वायो ये ते०' उक्त मन्त्र तथा 'वायवे साङ्गाय०' से 'वरदो भव' पर्यन्त वाक्य कहकर वायु को बलि दे।

वायुः प्रीयताम् ॥ ३ ॥

ॐ घृतं घृतपावानः पिबत व्वसां व्वसापावानः पिबता-न्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा । दिशः प्रदिश ऽआदिशो विदिश ऽउद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा ॥४॥

आकाशाय सां० समर्पयामि । भो आकाश ! इमं बलिं० । अनेन बलिदानेन आकाशः प्रीयताम् ॥४॥

पुनः हाथ में जल ग्रहण कर 'अनेन बलिदानेन०' यह वाक्य उच्चारण कर पृथिवी पर जल छोड़ दे ॥ ३ ॥

'ॐ घृतं घृतपावानः०' यह मन्त्र एवं 'आकाशाय साङ्गाय०' से 'वरदो भव' तक उच्चारण कर आकाश के लिए बलि देवे । पुनः हाथ में जल लेकर 'अनेन बलिदानेन०' यह वाक्य पढ़कर भूमि पर जल छोड़ दे ॥ ४ ॥

ॐ यावां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षतम् स्वाहा ॥५॥

अश्विभ्यां साङ्गाभ्यां० समर्पयामि। भो अश्विनौ, इमं बलिं०। भो अश्विनौ, मम० आयुःकर्तारौ० वरदौ भवतम्। अनेन बलिदानेन अश्विनौ प्रीयेताम् ॥ ५ ॥

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशो ऽअनमी वो

'ॐ यावां कशा०' उक्त मन्त्र एवं 'अश्विभ्यां साङ्गाभ्यां०' से 'वरदौ भवतम्' पर्यन्त वाक्य पढ़कर दोनों अश्विनी कुमारों को बलि प्रदान करे। फिर हाथ में जल लेकर 'अनेन बलिदानेन०' यह वाक्य पढ़कर पृथ्वी पर जल छोड़ दे ॥ ५ ॥

भवानः। यत्त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे स्वाहा ॥६॥

वास्तोष्पतये सां० समर्पयामि । भो वास्तोष्पते, इमं बलिं० । अनेन बलिदानेन वास्तोष्पतिः प्रीयताम् ॥६॥

'ॐ वास्तोष्पते०' उक्त मन्त्र एवं 'वास्तोष्पतये साङ्गाय०' से 'वरदो भव' पर्यन्त वाक्य उच्चारण कर वास्तोष्पति के निमित्त बलि प्रदान करे और हाथ में जल लेकर 'अनेन बलिदानेन०' यह वाक्य कहकर भूमि पर जल छोड़ दे ॥६॥

इस प्रकार गणपत्यादि पञ्चलोकपाल बलिदान समाप्त।

दशदिक्पालानां बलिदानम्

अथवा दिक्पालेभ्य एकतन्त्रेणैकमेव बलिं दद्यात्।

ॐ प्राच्यै दिशे स्वाहाऽर्वाच्यै दिशे स्वाहा दक्षिणायै दिशे स्वाहाऽर्वाच्यै दिशे स्वाहा प्रतीच्यै दिशे स्वाहाऽर्वाच्यै दिशे स्वाहोदीच्यै दिशे स्वाहाऽर्वाच्यै दिशे स्वाहोर्ध्वायै दिशे स्वाहाऽर्वाच्यै दिशे स्वाहाऽर्वाच्यै दिशे स्वाहाऽर्वाच्यै दिशे स्वाहा ॥

'इन्द्रादि-दशदिक्पालेभ्यो नमः' इति सम्पूज्य, पुनर्हस्ते जलं

अथवा एकतन्त्र (इकट्ठे) से ही दशदिक्पालों को एक ही बलि प्रदान करे।

गृहीत्वा, इन्द्रादि-दशदिक्पालेभ्यः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः स-शक्तिकेभ्यः एतान् सदीप-दधि-माष-भक्तबलीन् समर्पयामि ।

प्रार्थना—भो भो इन्द्रादि-दशदिक्पालाः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः स-शक्तिकाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्तारः क्षेमकर्तारः शान्तिकर्तारः, पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारः वरदा भवत । ततो हस्ते जलं गृहीत्वा, अनेन बलिदानेन इन्द्रादि दशदिक्पालाः प्रीयन्ताम् ।

एवं प्रकारेण सर्वेभ्यो ग्रहेभ्यः एकतन्त्रेणैकमेव बलिं दद्यात् ।

'ॐ प्राच्यै दिशे स्वाहा॰' उक्त मन्त्र पढ़कर 'इन्द्रादि-दशदिक्पालेभ्यो नमः' कहकर इन्द्रादि दश दिक्पालों का गन्ध, अक्षत एवं पुष्पादि से पूजन कर तथा 'इन्द्रादि-दशदिक्पालेभ्यः साङ्गेभ्यः॰' से लेकर 'वरदा भवत' पर्यन्त वाक्य उच्चारण कर प्रार्थना पूर्वक इन्द्रादि दशदिक्पालोंको इकट्ठे एक ही बलि प्रदान करे । पुनः हाथ में जल लेकर 'अनेन बलिदानेन'॰ यह वाक्य पढ़कर भूमिपर जल छोड़ दे । इसी प्रकार सभी ग्रहों का एक तन्त्र से एक ही बलि प्रदान करे।

इस प्रकार एकतन्त्र से ही दशदिक्पालों का बलिदान समाप्त ।

ॐ ग्रहा ऊर्ज्जाहुतयो व्यन्तो विप्प्राय मतिम् । तेषां विशिप्प्रियाणां वोऽहमिषमूर्ज्जᳬ समग्ग्रभमुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्म्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ॥

'ग्रहेभ्यो नमः' इति पञ्चोपचारैः सम्पूज्य, हस्ते जलं गृहीत्वा, सूर्यादि-नवग्रहेभ्यः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-गणपत्यादिपञ्चलोकपाल-वास्तोष्पतिसहितेभ्यः एतं स-दीप-

सूर्यादि नवग्रहों का एकतन्त्र से एकही बलिदान—'ॐ ग्रहा ऊर्जाहुतयः०' उक्त मन्त्र पढ़कर 'ग्रहेभ्यो नमः' से सूर्यादि नव-ग्रहों का गन्ध अक्षत, पुष्पादि से पूजन करे। पुनः 'सूर्यादि-नवग्रहेभ्यः साङ्गेभ्यः०' से 'वरदा भवत' तक वाक्य उच्चारण

दधि-माष-भक्तबलिं समर्पयामि । प्रार्थना—भो भो सूर्यादिग्रहाः ! साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-गणपत्यादि-पञ्चलोकपाल-वास्तोष्पतिसहिताः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्तारः क्षेमकर्तारः शान्तिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारः वरदा भवत । पुनर्हस्ते जलं गृहीत्वा, 'अनेन बलिदानेन सूर्यादिग्रहाः प्रीयन्ताम्' इत्युक्त्वा भूमौ जलं क्षिपेत् ।

कर सूर्यादि नवग्रहों को एक ही बलिदान दे । और हाथ में जल लेकर 'अनेन बलिदानेन' सूर्यादिग्रहाः प्रीयन्ताम्' यह वाक्य पढ़कर भूमि पर जल छोड़ दे ।

इस प्रकार सूर्यादि नवग्रहों का एकतन्त्र से बलिदान समाप्त ।

क्षेत्रपालबलिदानम्

एकस्मिन् वंशादिपात्रे कुशानास्तीर्य, तदुपरि मनुष्याहार-चतुर्गुणं द्विगुणं वा माष-दध्योदनं जलपात्रं च निधाय, चतुर्मुखं दीपं प्रज्वाल्य, हरिद्रा-कुङ्कुमादि-पताकायुतं कृत्वा ।

ॐ नहि स्पशमविदन्नन्यमस्माद् वैश्वानरात्पुर ऽएतारमग्नेः । एमेनमवृधन्नमृता ऽअमर्त्यं वैश्वानरं क्षैत्रजित्याय देवाः ॥

'क्षेत्रपालाय नमः' इति षोडशोपचारैः पञ्चोपचारैर्वा सम्पूजयेत् । ततः—

क्षेत्रपालबलिदान—एक बाँसकी दौरी अथवा दोहरे पत्तल में (कुशा बिछाकर उसके ऊपर मनुष्य के) आहार

नमो वै क्षेत्रपालस्त्वं भूत-प्रेतगणैः सह ।
पूजाबलिं गृहाणेमं सौम्यो भवतु सर्वदा ॥१॥
पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान् कामांश्च देहि मे ।
आयुरारोग्यं मे देहि निर्विघ्नं कुरु सर्वदा ॥२॥

इत्युच्चार्य क्षेत्रपालस्य प्रार्थनां कुर्यात् ।

से चौगुना या दोगुना दही मिश्रित उड़द और चावल एवं एक पुरवा पानी रखकर आटेका चौमुखा दीप-तेल द्वारा जलाकर हल्दी तथा रोरी आदि से उसमें पताका (झंडी) निर्माणकर 'ॐ नहि स्पशमविदन्न०' उक्त मन्त्र तथा 'क्षेत्रपालाय नमः' कहकर क्षेत्रपालका षोडशोपचार या पंचोपचार से पूजन करे ।

उसके बाद 'नमो वै क्षेत्रपालस्त्वं०' से 'निर्विघ्नं कुरु सर्वदा' पर्यन्त दो श्लोक पढ़कर क्षेत्रपाल की प्रार्थना करे ।

बलिदान-सङ्कल्पः

यजमानो हस्ते जलं गृहीत्वा, 'क्षेत्रपालाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय मारीगण-भैरव-राक्षस-कूष्माण्ड-वेताल-भूत-प्रेत-पिशाच-डाकिनी-शाकिनी-पिशाचिनीगण-सहिताय एतं स-दीप-दधि-माष-भक्तबलिं समर्पयामि।' इत्युक्त्वा भूमौ जलं क्षिपेत्।

प्रार्थना—भो क्षेत्रपाल ! क्षेत्रं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव। इत्युच्चार्य क्षेत्रपालं प्रार्थयेत्।

बलिदान संकल्प—यजमान दाहिने हाथ में जल लेकर 'क्षेत्रपालाय साङ्गाय०' से 'माष-भक्त-बलिं समर्पयामि' पर्यन्त वाक्य पढ़कर भूमिपर जल छोड़ दे।

प्रार्थना—'पुनः भो क्षेत्रपाल, क्षेत्रं रक्ष०' से 'वरदो भव' तक पढ़कर क्षेत्रपाल की प्रार्थना करे।

पुनर्हस्ते जलं गृहीत्वा, 'अनेन बलिदानेन क्षेत्रपालः प्रीयताम्' इत्युक्त्वा भूमौ जलं क्षिपेत्। ततो यजमानस्य मस्तकोपरि सकृद्भ्रामयित्वा, शूद्रेण बलिं गृहीत्वा, चतुष्पथे निक्षिपेत्।

ततो यजमानस्तस्य पृष्ठतो द्वारपर्यन्तं गत्वा,

ॐ हिङ्काराय स्वाहा हिङ्कृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहाऽवक्रन्दाय स्वाहा प्रोथते स्वाहा प्रप्रोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा निविष्टाय स्वाहोपविष्टाय स्वाहा

फिर यजमान हाथ में जल लेकर 'अनेन बलिदानेन क्षेत्रपालः प्रीयताम्' पढ़कर भूमि पर जल गिरा दे। तत्पश्चात् शूद्र (नौकर) उस क्षेत्रपाल की दौरी या पत्तल उठाकर यजमान के मस्तक (सिर) पर घुमाकर बलि ले चौराहे या त्रिमुहानी पर रख दे। और पीठ पीछे न देखे।

सन्दिताय स्वाहा वल्गते स्वाहासीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्रबुद्धाय स्वाहा विजृम्भमाणाय स्वाहा विचृताय स्वाहा सᳪंहानाय स्वाहोपस्थिताय स्वाहायनाय स्वाहा प्रायणाय स्वाहा ॥

इति मन्त्रमुच्चार्य जलं क्षिपेत्। पुनः—यजमानः पाणिपादं प्रक्षाल्याऽऽचमनं प्राणायामं च कुर्यात्।

तथा यजमान भी उस बलि ले जानेवाले के साथ दरवाजे तक जाकर 'ॐ हिङ्काराय स्वाहा०' यह मन्त्र पढ़कर नौकर के पीछे-पीछे जल छोड़ता जाय। और यजमान हाथ, पैर धोकर आचमन एवं प्राणायाम करे।

इस प्रकार क्षेत्रपाल बलिदान समाप्त।

पूर्णाहुतिः

ततः नारिकेलफलं रक्तवस्त्रवेष्टितं द्वादश-षट्-चतुःस्रुवेण गृहीतमाज्यं स्रुच्यां कृत्वा, तस्योपरि नारिकेलफलं संस्थाप्य, 'ॐ पूर्णाहुत्यै नमः' इति षोडशोपचारैः सम्पूज्य, उत्तिष्ठन् पूर्णाहुतिं जुहुयात।

ॐ समुद्रादूर्म्मिर्म्मधुमाँ२ ॥ ऽउदारदुपाᳪशुना सममृतत्वमानट्। घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानाममृतस्य नाभिः ॥१॥ वयं नाम प्रब्रवामा घृतस्यास्मिन्

पूर्णाहुति—तदनन्तर यजमान नारियल में-से जल निकालकर उसमें घी भरे। और उस नारियल को लाल कपड़े से वेष्टित करे (लपेटे)। एवं बारह स्रुवा घी या छह स्रुवा घी अथवा चार स्रुवा घी स्रुचीपात्र में डाल कर, उसपर नारियल और नारियल पर स्रुवा रखकर 'ॐ पूर्णाहुत्यै नमः' इस वाक्य से नारियल (पूर्णाहुति) का षोडशोपचार या पंचोपचार से पूजन कर खड़े हो 'ॐ समुद्रादूर्मिर्मधुमां०' से आरम्भकर 'ईषमूर्जं॰ शतक्रतो स्वाहा'

यज्ञे धारयामा नमोभिः । उप ब्रह्मा शृणवच्छस्यमानं चतुःशृङ्गोऽवमीद्गौर ऽएतत् ॥२॥ चत्वारि शृङ्गा त्रयो ऽअस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो ऽअस्य । त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्याँ॥ ऽआविवेश ॥३॥ त्रिधा हितं पणिभिर्गुह्यमानं गवि देवासो घृतमन्वविन्दन् । इन्द्र ऽएकं सूर्य्य ऽएकं जजान वेनादेकं स्वधया निष्टतक्षुः ॥४॥ एता ऽअर्षन्ति हृद्यात्समुद्राच्छतव्रजा रिपुणा नावचक्षे ।

घृतस्य धारा ऽअभिचाकशीमि हिरण्ययो व्वेतसो मद्ध्य ऽआसाम् ॥५॥ सम्म्यक् स्रवन्ति सरितो न धेना ऽअन्तर्हृदा मनसा पूयमानाः । एते ऽअर्षन्त्यूर्म्मयो घृतस्य मृगा ऽइव क्षिपणोरीषमाणाः ॥६॥ सिन्धोरिव प्प्राद्ध्वने शूघनासो व्वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः । घृतस्य धारा ऽअरुषो न व्वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्म्मिभिः पिन्वमानः ॥७॥ आभिप्प्रवन्त समनेव योषाः कल्ल्याण्ण्यः स्म्मयमानासो

ऽअग्निम्। घृतस्य धारांः समिधों नसन्त ता जुंषाणो हंर्यति जातवेदाः ॥८॥ कन्या ऽइव वहतुमेतवा ऽउं ऽअञ्ज्यञ्जाना ऽअभि चांकशीमि। यत्र सोमः सूयते यत्र यज्ञो घृतस्य धारां ऽअभि तत्पवन्ते ॥९॥ अभ्यर्षत सुष्टुतिं गव्यमाजिम- स्मासु भद्रा द्रविंणानि धत्त। इमं यज्ञं नयत देवता नो घृतस्य धारा मधुमत्पवन्ते॥१०॥ धामं ते विश्वं भुवनमधि श्रितमन्तः संमुद्रे हृद्यन्तरायुंषि। अपामनीके समिथे य

ऽआभृतस्तमंश्याम मधुमन्तं तऽऊर्म्मिम् ॥११॥ पुनंस्त्वा-दित्त्या रुद्रा व्वसंवः समिंन्धतां पुनंर्ब्रह्माणो व्वसुनीथ यज्ञैः । घृतेन त्वं तन्वं वर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमांनस्य कामाः ॥१२॥ सप्त तेऽअग्ने समिधः सप्त जिह्वाः सप्त ऽऋषंयः सप्त धामं प्रियाणि । सप्त होत्राः सप्तधा त्वा यजन्ति सप्त योनीरापृंणस्व घृतेन स्वाहा ॥१३॥ मूर्द्धानं दिवो अंरतिं पृथिव्या ऽवैश्वानरऽमृत ऽआ जातमग्निम् ।

कविᳬसम्म्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः ॥१४॥ पूर्णा दर्वि परापत सपूर्णा पुनरापत । वस्नेव विक्रीणावहा ऽइषमूर्ज्जᳬ शतक्रतो स्वाहा ॥१५॥

इदमग्नये वैश्वानराय वसुरुद्रादित्येभ्यः शतक्रतवे सप्तवते अग्नये-ऽद्भ्यश्च न मम। इत्युच्चार्य स्रुवावशिष्टं घृतं प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षिपेत्।

वसोर्द्धाराहवनम्—ततो वसोर्द्धारां जुहुयात्। तद्यथा—

ॐ सप्त ते ऽअग्ने समिधः सप्त जिह्वाः सप्त ऽऋषयः

पर्यन्त पन्द्रह मन्त्र पढ़कर वेदी के प्रज्वलित अग्नि में उस नारियल का हवन कर दे। और स्रुवावशिष्ट घी का 'इदमग्नये वैश्वानराय०' से 'न मम' पर्यन्त वाक्य पढ़कर प्रोक्षणी पात्र में परित्याग करे। इस प्रकार पूर्णाहुति समाप्त।

सप्त धामं प्रियाणि । सप्त होत्राः सप्तधा त्वा यजन्ति सप्त योनीरापृणस्व घृतेन स्वाहा ॥ १ ॥ शुक्रज्योतिश्च चित्रज्योतिश्च सत्यज्योतिश्च ज्योतिष्मांश्च । शुक्रश्च ऋतपाश्चात्यंहाः ॥ २ ॥ ईदृङ् चान्यादृङ् च सदृङ् च प्रतिसदृङ् च । मितश्च सम्मितश्च सभराः ॥ ३ ॥ ऋतश्च सत्यश्च ध्रुवश्च धरुणश्च । धर्त्ता च विधर्त्ता च

वसोर्धाराहवन— तदनन्तर घृत की धारा दे. वह इस प्रकार है—

विधारयः ॥४॥ ऋतजिच्च सत्यजिच्च सेनजिच्च सुषेणश्च । अन्तिमित्रश्च दूरे ऽअमित्रश्च गणः ॥ ५ ॥ ईदृक्षास ऽएतादृक्षास ऊ षु णः सदृक्षासः प्रतिसदृक्षास ऽएतन । मितासश्च सम्मितासो नो ऽअद्य सभरसो मरुतो यज्ञे ऽअस्मिन् ॥ ६ ॥ स्वतवाँश्च प्रघासी च सान्तपनश्च गृहमेधी च । क्रीडी च शाकी चोज्जेषी ॥ ७ ॥ इन्द्रं दैवीर्विशो मरुतोऽनुवर्त्मानोऽभवन्यथेन्द्रं दैवीर्विशो

मरुतोऽनुवर्त्मानोऽभवन् । एवमिमं यजमानं दैवीश्च विशो मानुषीश्चानुवर्त्मानो भवन्तु ॥८॥ इमꣳ स्तनमूर्जस्वन्तं धयापां प्रपीनमग्ने सरिरस्य मध्ये । उत्सं जुषस्व मधुमन्तमर्वन्त्समुद्रियꣳ सदनमाविशस्व ॥९॥ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम । अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम् ॥ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः

मह० प० ३५० वसो० ह० ३५०

पवित्रमसि सहस्रधारम् । देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः
पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः स्वाहा ॥१०॥

एतानि मन्त्राणि पठित्वा, प्रज्वलितवह्नौ स्रुच्या घृतधारां कुर्यात् ।

ततोऽग्निं प्रदक्षिणीकृत्य, पश्चिमदेशे प्राङ्मुख उपविश्य । स्रुवेण भस्मानीय, अनामिकया, ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः, इति ललाटे । ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम्—इति ग्रीवायाम् । ॐ यद्देवेषु

यजमान 'ॐ सप्त ते अग्ने' से 'कामधुक्षः स्वाहा' तक दस मन्त्र पढ़कर प्रज्वलित अग्नि में स्रुची से घृत की धारा करे ।

त्र्यायुषम्, इति दक्षिणबाहुमूले। ॐ तन्नो ऽअस्तु त्र्यायुषम्, इति हृदि भस्म धारयेत्।

ततः संस्रवप्राशनम्। आचमनम्। पवित्राभ्यां मार्जनम्। अग्नौ पवित्रप्रतिपत्तिः कुर्यात्। इति ग्रहशान्तिपद्धतौ वसोर्द्धाराहवनं समाप्तम्।

पुनः दोनों हाथों से अग्नि की प्रदक्षिणा करे। एवं पश्चिम दिशा में पूर्व मुख बैठकर स्रुवा से वेदी का भस्म लेकर अनामिका अंगुलि से 'ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः' कहकर ललाट में, 'ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम्' से गर्दन के पीछे ग्रीवा में, 'ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम्' से दाहिने बाहुमूल (भुजा) में, और 'ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्' यह पढ़कर हृदय में भस्म लगावे।

इसके बाद यजमान प्रोक्षणीपात्र के घृत को सूँघे। और आचमन तथा दोनों पवित्र-कुशाओं द्वारा जल से मार्जनकर, उन कुशाओंको अग्नि में छोड़ दे। इस प्रकार वसोर्द्धाराहवन समाप्त।

ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम्

यजमानो हस्ते जलमादाय, 'कृतस्य ग्रहशान्तिहोमकर्मणोऽङ्गतया विहितमिदं पूर्णपात्रं स-दक्षिणं ब्रह्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे' इत्युक्त्वा, भूमौ जलं क्षिपेत्।

ॐ द्यौस्त्वा ददातु पृथिवीत्वा प्रतिगृह्णातु। इति ब्रह्मा वदेत्। अग्नेः पश्चात् प्रणीताविमोकः। **ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम्।**

उपयमनकुशैर्मार्जयेत्। उपयमनकुशानामग्नौ प्रक्षेपः। ब्रह्मग्रन्थिविमोकः।

ब्रह्मा को पूर्णपात्र का दान—यजमान दाहिने हाथ में जल लेकर 'कृतस्य' से 'तुभ्यमहं सम्प्रददे' पर्यन्त

श्रेयोदानम्—आचार्यः—अद्येत्याद्युच्चार्य 'कृतस्य' ग्रहशान्त्याख्यस्य कर्मणो यजमानाय श्रेयोदानं करिष्ये। भवन्नियोगेन मया अस्मिन् ग्रहशान्त्याख्ये कर्मणि (अमुकाख्ये कर्मणि वा) यत्कृतं आचार्यत्वं तदुत्पन्नं श्रेयस्तत् अमुना साक्षतेन सजलेन पूगीफलेन तुभ्यमहं सम्प्रददे। प्रतिगृह्यताम्। इत्याचार्यो वदेत्। 'प्रतिगृह्णामि' इति यजमानः।

संकल्प-वाक्य पढ़कर भूमि पर जल छोड़ दे। ब्रह्मा भी, 'ॐ द्यौस्त्वा ददातु०' यह वाक्य पढ़े। और अग्नि के पीछे भाग में प्रणीता पात्र को उलटकर 'ॐ आपः शिवाः शिवतमाः' से 'भेषजम्' पर्यन्त पढ़कर भूमि पर गिरे हुए जलसे सात उपयमन कुशा द्वारा अपने सिर पर मार्जन करे। तथा उपयमन कुशाओं को अग्नि में छोड़ दे। और कुशा द्वारा निर्मित ब्रह्मा की गाँठ खोल दे। इस प्रकार पूर्णपात्र दान समाप्त।

श्रेयोदान—'अद्येत्यादि कृतस्य०' से 'श्रेयोदानं करिष्ये' तथा 'भवन्नियोगेन' से 'तुभ्यमहं सम्प्रददे' और 'प्रतिगृह्यताम्' पर्यन्त संकल्प-वाक्य पढ़कर यजमान को पूगीफल (सोपारी) द्वारा श्रेयोदान (अभी तक किये हुए फल का श्रेय) करे। यजमान भी 'प्रतिगृह्णामि' कहकर श्रेय ग्रहण करे।

तेन श्रेयसा त्वं श्रेयोवान् भव। इत्याचार्यः। 'भवामी'ति तेन यजमानेन वाच्यम्। एवमेव ब्रह्मादयो ऋत्विजो जापकादयश्च श्रेयोदानं देयः। (यद्वा) ब्रह्मादयो ऋत्विजो जापकाश्च आचार्यद्वारा श्रेयोदानं कुर्युः। तद्यथा–

आचार्यो हस्ते जलं गृहीत्वा, 'भवन्नियोगेन मया अस्मिन् ग्रहशान्त्याख्ये कर्मणि (अमुकाख्ये कर्मणि वा) यत्कृतं आचार्यत्वं तथा एभिर्ब्राह्मणैः सह यत्कृतं ब्रह्मत्वं गाणपत्यं सदस्यत्वं तथा च यः कृतो जपः आचार्यत्वाद् ब्रह्मत्वाद् गाणपत्यात् सदस्यत्वाज्जापकत्वात् यदुत्पन्नं श्रेयस्तदमुना साक्षतेन सजलेन पूगीफलेन तुभ्यमहं सम्प्रददे।' इत्युक्त्वा

पुनः आचार्य 'तेन श्रेयसा त्वं श्रेयोवान् भव।' इस प्रकार कहे। यजमान भी 'भवामि' यह वाक्य बोले इस प्रकार ब्रह्मा, ऋत्विज, जापक आदि समस्त वृणीत ब्राह्मण गण यजमान को श्रेयोदान करें। अथवा ब्रह्मा, ऋत्विक्‌गण (होता), जापक आदि समस्त ब्राह्मण गण इकट्ठे ही आचार्य द्वारा श्रेयोदान करें। वह इस प्रकार है—

भूमौ जलं प्रक्षिपेत्। तेन श्रेयसा त्वं श्रेयोवान् भव। इत्याचार्यो वदेत्। 'भवामी'ति तेन यजमानो वदेत्।

तत आचार्यादीन् वृणीत, ब्राह्मणान् गन्ध-वस्त्रा-ऽलङ्कारादिभिर्यथा-विभवैः पूजयेत्। आचार्यादिभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दक्षिणां च दद्यात्। तद्यथा— १. आचार्याय गां दद्यात्। २. ब्रह्मणे वृषभम्। ३. सदस्याय अश्वम्। ४ गाणपत्याय रथम्। ५. उपद्रष्ट्रे गन्त्रीम्। ६. ऋत्विग्भ्यः सुवर्णं दद्यात्।

आचार्य हाथ में जल लेकर 'भवच्छिशोगेन०' से लेकर 'तुभ्यमहं सम्प्रददे' तक उच्चारण कर भूमि पर जल छोड़ तथा 'तेन श्रेयसा त्वं श्रेयोवान् भव' इस प्रकार कहे। यजमान भी 'भवामि' यह वाक्य कहे।

उसके बाद यजमान वृणीत आचार्यादि ब्राह्मणों का गन्ध, वस्त्र, अलंकार आदि अपने शक्ति के अनुसार पूजन एवं आचार्यादिकों को दक्षिणा प्रदान करे। वह इस प्रकार है—१. आचार्य को दुधारु गौ। २. ब्रह्माको वृषभ। ३. सदस्यों को अश्व। ४. गाणपत्य को रथ। ५. उपद्रष्टा को सवारी गाड़ी। ६. होताओं को सुवर्ण दक्षिणा प्रदान करे।

यजमानो हस्ते जलं गृहीत्वा, 'कृतस्य ग्रहशान्तिकर्मणः (वा अमुक-कर्मणः) साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थमिदं गोनिष्क्रयभूतं द्रव्यम् अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय आचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे' इत्युक्त्वा भूमौ जलं क्षिपेत्। 'ॐ स्वस्ती'ति आचार्यः ॥ १ ॥

कृतस्य ग्रहशान्तिकर्मण इदं वृषनिष्क्रयभूतं द्रव्यम् अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे। इति यजमानो वदेत्। 'स्वस्ति' इति ब्रह्मा वदेत् ॥ २ ॥

यजमान दाहिने हाथ में जल लेकर 'कृतस्य ग्रहशान्तिकर्मणः' से 'आचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे' पर्यन्त संकल्प-वाक्य पढ़कर आचार्य को दक्षिणा रूप में गौ प्रदान करे। आचार्य भी, 'स्वस्ति' इस प्रकार कहे ॥१॥

पुनः यजमान हाथ में जल लेकर 'कृतस्य' से 'ब्रह्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे' पर्यन्त कहकर ब्रह्मा को वृष-निष्क्रयभूत द्रव्य दे। ब्रह्मा भी 'स्वस्ति' इस प्रकार कहें ॥२॥

'कृतस्य ग्रहशान्तिकर्मणः इदं सदस्याय अश्वनिष्क्रयभूतं द्रव्यम् अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय सदस्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे' इति यजमानः। 'स्वस्ति' इति सदस्यो वदेत् ॥ ३ ॥

कृतस्य ग्रहशान्तिकर्मणः इदं गाणपत्याय रथनिष्क्रयभूतं द्रव्यम् अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय गाणपत्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे। इति यजमानः। 'स्वस्ति' इति गाणपत्यो वदेत् ॥ ४ ॥

फिर यजमान 'कृतस्य०' से 'सदस्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे' तक उच्चारण कर सदस्य को अश्व निष्क्रयभूत दक्षिणा प्रदान करे। सदस्य भी 'स्वस्ति' इस प्रकार कहे ॥३॥

पुनः यजमान 'कृतस्य०' से लेकर 'तुभ्यमहं सम्प्रददे' तक कहकर गाणपत्य को रथ निष्क्रयभूत द्रव्य दे। गाणपत्य भी 'स्वस्ति' इस प्रकार कहे ॥४॥

कृतस्य ग्रहशान्तिकर्मणः इदं उपद्रष्ट्रे गन्त्रीनिष्क्रयभूतं द्रव्यम् अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय उपद्रष्ट्रे तुभ्यमहं सम्प्रददे। इति यजमानः। 'स्वस्ति' इति उपद्रष्टा वदेत् ॥ ५ ॥

कृतस्य ग्रहशान्तिकर्मणः इदं ऋत्विग्भ्यः सुवर्णनिष्क्रयभूतं द्रव्यम् अमुकगोत्रेभ्यः अमुकशर्मभ्यः ब्राह्मणेभ्यः ऋत्विग्भ्यस्तुभ्यमहं सम्प्रददे। इति यजमानः। 'स्वस्ति' इति ऋत्विजो वदेत् ॥ ६ ॥

ब्राह्मणभोजनसङ्कल्पः

यजमानो हस्ते जलमादाय, अद्येत्यादि देशकालौ सङ्कीर्त्य, कृतस्य

फिर यजमान 'कृतस्य०' से 'तुभ्यमहं सम्प्रददे' पर्यन्त उच्चारण कर उपद्रष्टा को गन्त्री (सवारी गाड़ी) निष्क्रयभूत दक्षिणा प्रदान करे। उपद्रष्टा भी 'स्वस्ति' इस प्रकार कहे ॥५॥

पुनः यजमान 'कृतस्य०' से 'तुभ्यमहं सम्प्रददे' पर्यन्त कहकर होताओं को सुवर्ण निष्क्रयभूत दक्षिणा दे। होतागण भी 'स्वस्ति' इस प्रकार कहें ॥६॥

ग्रहशान्तिकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च यथासङ्ख्याकान् ब्राह्मणान् यथाकाले यथोत्पन्नेनाऽन्नेनाऽहं भोजयिष्ये (भोजयिष्यामि वा)। भोजनान्ते तेभ्यस्ताम्बूलदक्षिणां च दास्ये। इत्युक्त्वा भूमौ जलं क्षिपेत्।

आवाहितदेवानामुत्तरपूजनम्—ततो ग्रहपीठादिदेवतानां गन्धादिपञ्चोपचारैरुत्तरपूजनं कुर्यात्। तद्यथा—हस्ते जलमादाय, 'कृतस्य ग्रहशान्तिकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं चावाहितदेवानामुत्तरपूजनं करिष्ये।' इति सङ्कल्पं कृत्वा 'गणपत्याद्यावाहितदेवताभ्यो नमः'। इत्युच्चार्य प्रधानपीठादिदेवानां ग्रहपीठादिदेवानां च पञ्चोपचारैरुत्तरपूजनं कुर्यात्।

ब्राह्मणभोजन—यजमान हाथ में जल लेकर 'देशकालौ सङ्कीर्त्य' से 'तेभ्यस्ताम्बूलदक्षिणां च दास्ये' पर्यन्त संकल्प-वाक्य उच्चारणकर भूमि पर जल छोड़ दे।

उत्तरपूजन—यजमान हाथ में जल लेकर 'कृतस्य ग्रहशान्तिकर्मणः' से 'उत्तरपूजनं करिष्ये' पर्यन्त संकल्प-वाक्य पढ़कर 'गणपत्याद्यावाहितदेवताभ्यो नमः' कहकर गन्धाक्षत, पुष्पादि से उत्तरपूजन करे। इत्युत्तरपूजन समाप्त।

आचार्याय प्रधानपीठादिदानम्

तत आचार्याय प्रधानपीठादि दद्यात्। तद्यथा—यजमानो हस्ते जलमादाय, 'कृतस्य ग्रहशान्तिकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च इदं प्रधानपीठं ग्रहपीठं मातृकापीठं सोपस्करं दक्षिणासहितम् आचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे।'

अभिषेकः

ततो रुद्रकलश-देवतान्तरकलशोदकमेकस्मिन् पात्रे कृत्वा, दूर्वा-कुशा पञ्चपल्लवै रुद्ङ्मुख आचार्यस्तिष्ठन् चत्वारो ऋत्विजश्च सकुटुम्बं स्वोत्तरतः सपत्नीकं यजमानं प्राङ्मुखमुपविष्टमभिषिञ्चेयुः।

आचार्य को प्रधानपीठादि प्रदान— यजमान हाथ में जल लेकर 'कृतस्य' से 'तुभ्यमहं सम्प्रददे' तक संकल्प-वाक्य पढ़कर आचार्य को प्रधानपीठ, मातृकापीठ और ग्रहपीठ दक्षिणा सहित प्रदान करे।

अभिषेक—आचार्य प्रधान कलश एवं रुद्रकलश का जल एक पात्र में रख दूर्वा, कुशा एवं पञ्चपल्लव से खड़े

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् । सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रियै दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ ॥१॥ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् । सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्राज्येनाभिषिञ्चामि ॥२॥ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो

होकर चार ऋत्विजों सहित पूर्वाभिमुख सपरिवार यजमान के मस्तक पर 'ॐ देवस्य त्वा सवितुः' से 'शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिश्चाऽस्तु' पर्यन्त मन्त्र एवं श्लोक पढ़ कर छिड़कें ।

हस्ताभ्याम्। अश्विनोर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसायाभिषिञ्चामि सरस्वत्यै भैषज्येन वीर्यायान्नाद्यायाभिषिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसेऽभिषिञ्चामि ॥३॥

ॐ सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्म-विष्णु-महेश्वराः ।
वासुदेवो जगन्नाथस्तथा सङ्कर्षणो विभुः ॥१॥
प्रद्युम्नश्चाऽनिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते ।
आखण्डलोऽग्निर्भगवान् यमो वै निर्ऋतिस्तथा ॥२॥

वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः ।
ब्रह्मणा सहिताः सर्वे दिक्पालाः पान्तु ते सदा ॥३॥
कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रिया मतिः ।
बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिः कान्तिस्तुष्टिश्च मातरः ॥४॥
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः समागताः ।
आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुध-जीव-सिता-ऽर्कजाः ॥५॥
ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहु-केतुश्च तर्पिताः ।
देव-दानव-गन्धर्वा यक्ष-राक्षस-पन्नगाः ॥६॥

ऋषयो मनवो गावो देवमातर एव च ।
देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याश्चाऽप्सरसां गणाः ॥७॥
अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च ।
औषधानि च रत्नानि कालस्याऽवयवाश्च ये ॥८॥
सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः ।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु धर्म-कामा-ऽर्थसिद्धये ॥९॥

अमृताभिषेकोऽस्तु । शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिश्चाऽस्तु । इत्यभिषेकः ।

घृतच्छायापात्रदानम्

यजमानः एकस्मिन् घृतपूरितकांस्यपात्रे स्वमुखावलोकनार्थं सङ्कल्पं कुर्यात्। हस्ते जलं गृहीत्वा, 'देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रः अमुकशर्मा (वर्मा, गुप्तः, दासो वा) ऽहं कृतस्य ग्रहशान्तिकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं सर्वारिष्टविनाशार्थं चाऽऽज्यावेक्षणं करिष्ये।' इति सङ्कल्प्य,

ॐ रूपेण वो रूपमभ्यागां तुथो वो विश्ववेदा विभजतु। ऋतस्य पथा प्रेत चन्द्रदक्षिणा वि स्वः पश्य

घृतच्छायापात्रदान— यजमान घृतपूरित कांस्य पात्र में अपना मुख देखने के लिए संकल्प करे। हाथ में जल

ळ्व्युन्तरिक्षं यतस्व सदस्यैः॥

इति मन्त्रमुच्चार्य, घृते स्वमुखमवलोकयेत्।

यजमानः पुनर्हस्ते जलमादाय, 'देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रः अमुकशर्मा (वर्मा, गुप्तः दासो वा) ऽहं अवलोकितमिदमाज्यं कांस्य-पात्रस्थितं स-सुवर्णं मृत्युञ्जयदैवतं श्रीमृत्युञ्जयदेवताप्रीतये सर्वारिष्टविनाशार्थं चाऽमुकगोत्राय, अमुकशर्मणे सुपूजिताय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।' इति सङ्कल्पमुच्चार्य ब्राह्मणायाऽऽज्यपात्रं दद्यात्। ब्राह्मणोऽपि, घृतपात्रं गृहीत्वा, 'स्वस्ति' इति ब्रूयात्।

लेकर 'देशकालौ सङ्कीर्त्य' से 'आज्यावेक्षणं करिष्ये' पर्यन्त संकल्प-वाक्य पढ़कर 'ॐ रूपेण वो' इस मन्त्र का उच्चारण कर घृत में अपना मुख देखे।

पुनः हाथ में जल लेकर 'देशकालौ सङ्कीर्त्य' से 'ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे' पर्यन्त संकल्प-वाक्य पढ़कर

ततः करौ बद्ध्वा प्रार्थयेत्—

याऽलक्ष्मीर्यच्च मे दौस्थ्यं सर्वाङ्गं समुपस्थितम् ।
तत्सर्वं नाशयाऽऽज्य! त्वं श्रियमायुश्च वर्द्धय ॥१॥
आज्यं सुराणामाहारः सर्वमाज्ये प्रतिष्ठितम् ।
आज्यपात्रप्रदानेन शान्तिरस्तु सदा मम ॥२॥

इति घृतच्छायापात्रदानं समाप्तम् ।

ब्राह्मण को घृत-पात्र प्रदान करे। ब्राह्मण भी घृतपात्र लेकर 'स्वस्ति' ऐसा कह दे। तदनन्तर यजमान हाथ जोड़कर 'याऽलक्ष्मीर्यच्च' से 'सदा मम' पर्यन्त दो श्लोक पढ़कर घृतपात्र गृहीत ब्राह्मण की प्रार्थना करे।

भूयसीदक्षिणासङ्कल्पः

अन्येभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथाशक्ति भूयसीं दक्षिणां दद्यात्। यजमानः पुनर्हस्ते जलमादाय, 'कृतस्य ग्रहशान्तिकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्ण-फलप्राप्त्यर्थं तन्मध्ये न्यूनातिरिक्तदोषपरिहारार्थं नानानामगोत्रेभ्यो नानाशर्मभ्यो ब्राह्मणेभ्यः समाश्रितबन्धुवर्गेभ्यो दीनानाथेभ्यश्च यथोत्साह भूयसीं दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे।' इति सङ्कल्पमुच्चार्य भूमौ जलं प्रक्षिप्य ब्राह्मणेभ्यो भूयसीं दक्षिणां दद्यात्।

आवाहितदेवतानां विसर्जनम्

ततो यजमानः देवताग्निं सानुनयं हस्ते पुष्पाक्षतैर्विसृजेत्।

भूयसीदक्षिणा संकल्प—पुनः यजमान हाथ में जल लेकर 'कृतस्य ग्रहशान्तिकर्मणः' से 'दातुमहमुत्सृजे' पर्यन्त संकल्प-वाक्य पढ़ भूमि पर जल छोड़ कर उपस्थित सभी ब्राह्मणों को भूयसी दक्षिणा प्रदान करे।

ग्रह० प० ३७०

ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे ।
उप प्रयन्तु मरुतः सुदानव ऽइन्द्र प्राशूर्भवा सचा ॥१॥
यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम् ।
इष्टकामार्थसिद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च ॥१॥
आवाहितदेवताः स्वस्थाने गच्छत ।
ॐ यज्ञ यज्ञं गच्छ यज्ञपतिं गच्छ स्वां योनिं गच्छ
स्वाहा । एष ते यज्ञो यज्ञपते सहसूक्तवाकः सर्ववीरस्तं

आवाहित देवताओं का विसर्जन—यजमान हाथ में पुष्प और अक्षत लेकर 'ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते' से 'महाविष्णुः प्रीयताम्' पर्यन्त कहकर आवाहित देवताओं का विसर्जन करे ।

आवा० विस० २७०

जुषस्व स्वाहा ॥२॥

गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ ! स्वस्थाने परमेश्वर ! ।
यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन ! ॥२॥

यज्ञनारायण स्वस्थाने गच्छ ।

ॐ चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च द्वाभ्यां पञ्चभिरेव च ।
हूयते च पुनर्द्वाभ्यां तस्मै यज्ञात्मने नमः ॥३॥

मया यत्कृतं यथाकालं यथाऽऽदेशं यथाज्ञानं यथाशक्ति ग्रहयज्ञाख्यं कर्म तेन श्रीपापापहा महाविष्णुः प्रीयताम् । पुनः करौ सम्पुटीकृत्य, मया यत्कृतं ग्रहयज्ञाख्यं कर्म तत्कालहीनं श्रद्धाहीनं भवतां ब्राह्मणानां

वचनात् श्रीसूर्याद्यावाहितदेवताप्रसादात् सर्वविधेः परिपूर्णमस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु। ब्राह्मणाश्च–'अस्तु परिपूर्णम्' इति वदेयुः। इत्यावाहितदेवानां विसर्जनम्।

क्षमा-प्रार्थना

जपच्छिद्रं तपश्छिद्रं यच्छिद्रं शान्तिकर्मणि।
सर्वं भवतु मेऽच्छिद्रं ब्राह्मणानां प्रसादतः ॥१॥
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर! ॥२॥

यजमान पुनः हाथ जोड़कर 'मया यत्कृतं' से 'परिपूर्णमस्तु' पर्यन्त वाक्य ब्राह्मणों से कहे। ब्राह्मण गण भी 'अस्तु परिपूर्णम्' इस प्रकार कह दें।
क्षमा-प्रार्थना- पुनः यजमान 'जपच्छिद्रं' से 'सद्यो वन्द्ये तमच्युतम्' पर्यन्त छह श्लोक पढ़ क्षमा-प्रार्थना करे।

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर ! ।
यत्पूजितं मया देव ! परिपूर्णं तदस्तु मे ॥३॥
कर्मणा मनसा वाचा ग्रहशान्तिर्मया कृता ।
तेन तुष्टिं समासाद्य प्रसीद परमेश्वर ! ॥४॥
प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत् ।
स्मरणादेव तद्-विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः ॥५॥
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपो-यज्ञ-क्रियादिषु ।

न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥८॥

तिलकाशीर्वादः

श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात् पवमानं महीयते।
धान्यं धनं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः ॥१॥
मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।
शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव ॥२॥

तिलकाशीर्वाद—ब्राह्मणगण यजमान के मस्तक में तिलक लगाकर हाथ में फल और अक्षत लेकर 'श्रीर्वर्चस्व' से

आयुष्कामो यशस्कामो पुत्र-पौत्रस्तथैव च ।
आरोग्यं धनकामश्च सर्वे कामा भवन्तु मे ॥३॥
स्वस्त्यस्तु ते कुशलमस्तु चिरायुरस्तु
गो-वाजि-हस्ति-धन-धान्य-समृद्धिरस्तु ।
ऐश्वर्यमस्तु बलमस्तु रिपुक्षयोऽस्तु
वंशे सदैव भवतां हरिभक्तिरस्तु ॥४॥

'हरिभक्तिरस्तु' पर्यन्त चार श्लोकों को पढ़कर यजमान को आशीर्वाद प्रदान करें। यजमान भी यज्ञ के अन्त में

यजमानः यज्ञान्ते ब्राह्मणान् भोजयित्वा स्वयं इष्ट-मित्रादिसहितः हविष्यान्नं भुञ्जीत ।

इति देवरिया-मण्डलान्तर्गत-'मझौली राज्य' (सम्प्रति वाराणसी) वास्तव्येन पण्डित-श्रीकान्तमिश्रशर्मणां पौत्रेण पण्डित-श्रीसन्तशरणमिश्रशर्मणां पुत्रेण आचार्य-पण्डितशिवदत्त-मिश्रशास्त्रिणा विरचिता 'शिवदत्ती' हिन्दीटीका-सहिता च ग्रहशान्ति-पद्धतिः समाप्ता ।

* *

ब्राह्मणों को भोजन कराकर इष्ट-मित्रादि के साथ हविष्यान्न का भोजन करे ।

इस प्रकार आचार्य पण्डित शिवदत्तमिश्र शास्त्री-कृत 'शिवदत्ती' हिन्दी टीका सहित ग्रहशान्ति-पद्धति समाप्त ।

* * *

ग्रन्थकारसंस्तवः

देवरिया-जनपदके ख्याते ग्रामे मझौलिकाऽभिख्ये । उद्भटशूरा मल्ला यत्राऽऽसन् विश्वविख्याताः ॥ १ ॥

विद्या-सदाचारगुण-प्रसिद्धा लोकद्वयी साधनकर्मसिद्धाः । यत्राऽभवँल्लोक-ललामभूता, विप्रा जगद्वन्दित-पादपद्माः ॥ २ ॥

पितामहोऽभून्मम लोकवित्तः, श्रीकान्तनामा-ऽऽगममर्म-विज्ञः । तदात्मजौ द्वौ परमाऽर्थनिष्ठौ, जातौ प्रतीक्ष्याऽर्चनरक्तवित्तौ ॥ ३ ॥

श्रीसन्तशरणनामा ज्यायानासीन्नितान्त-विख्यातः । शास्त्राऽनुशीलनपरः शुभकर्मपरायणः सततम् ॥ ४ ॥

श्रीसत्यनारायणनामधेय आसीत्कनीयाञ्शुभभागधेयः । द्वावप्यभूतां पितृभक्तिभाजौ, लोकोपकारे परमप्रवीणौ ॥ ५ ॥

श्रीसन्तशरणविदुषो द्वौ पुत्रौ भक्तिसम्पन्नौ । श्रीलजगन्नाथ इति ज्यायानासीद्गुणाऽग्रणीर्धीमान् ॥ ६ ॥

तदनुजनुर्गुरुभक्तः शिवदत्तोऽहं समाख्यया प्रथितः । पित्रोः परिचरणपरः शास्त्राऽम्बुधिमज्जने रसिकः ॥ ७ ॥

वागीश्वरी नाम ममाऽऽद्यपत्नी, सावित्रिकाया प्रसवित्रिकाऽऽसीत् । सा द्रौपदी नाम मदन्यपत्नी, पुष्पाप्रसूर्द्वे अपि मुक्तिभाजौ ॥ ८ ॥

पौरस्त्य-पाश्चात्य-विशिष्टविद्या कलाप्रवीणस्य विचक्षणस्य । सत्यव्रतस्याऽस्ति कलत्ररत्नं सावित्रिका नाम मदीयकन्या ॥ ९ ॥

कनीयसी मे दुहिताऽस्ति पुष्पा, श्रीमद्-रमेशाख्यबुधस्य पत्नी । उभे मदीये तनये, स्वधर्मं, सम्पाद्य सौभाग्य-समन्विते स्तः ॥१०॥

आचार्योऽहं शब्दशास्त्रे तथैव, साहित्याऽब्धिर्ग्रन्थनिर्माणशीलः । तन्त्रे, स्तोत्रे, व्याकृतौ धर्मशास्त्रे, सन्ति ग्रन्था निर्मिता मामकीनाः ॥११॥

अद्याऽवधि ग्रन्थशताऽधिकं मे प्रकाशितं भूरिपरिश्रमेण । अशान्तयत्नेन कृतिं करोमि शास्त्रोक्तकृत्यं विदधामि नित्यम् ॥१२॥

स्वचित्त-शिष्टा-ऽऽस्तिक-तोषणाय निरन्तरं शास्त्रचयं समीक्ष्य । मया प्रणीता विविधाः प्रबन्धाः संप्रार्थये तत्र सतां सुदृष्टिम् ॥१३॥

* * *

ग्रहशान्ति-पद्धतिस्थ-वैदिक-मन्त्रानुक्रमणिका

* * *

ग्रहशान्ति-पद्धतिस्थ-पौराणिक-श्लोकानुक्रमणिका

* * *

JAKAOELUXUR

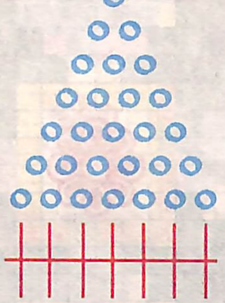
अथ षोडशमातृकाचक्रम्

ॐ आत्मनःकुल-देवतायै नमः १६	ॐ लोकमातृभ्यो नमः १३	ॐ देवसेनायै नमः ९	ॐ मेधायै नमः ५
ॐ तुष्ट्यै नमः १६	ॐ मातृभ्यो नमः १२	ॐ जयायै नमः ८	ॐ शच्यै नमः ४
ॐ पुष्ट्यै नमः १५	ॐ स्वाहायै नमः ११	ॐ विजयायै नमः ७	ॐ पद्मायै नमः ३
ॐ धृत्यै नमः १४	ॐ स्वधायै नमः १०	ॐ सावित्र्यै नमः ६	ॐ गौर्य्यै नमः २ ॐ गणेशाय नमः१

गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः।।१।।
धृतिः पुष्टिस्ततथा तुष्टिः आत्मनः कुलदेवताः।
गणेशेनाधिका होता वृद्धौ पूज्यास्तु षोडश।।२।।

घृतमातृकाचक्रम

।। श्रीः ।।

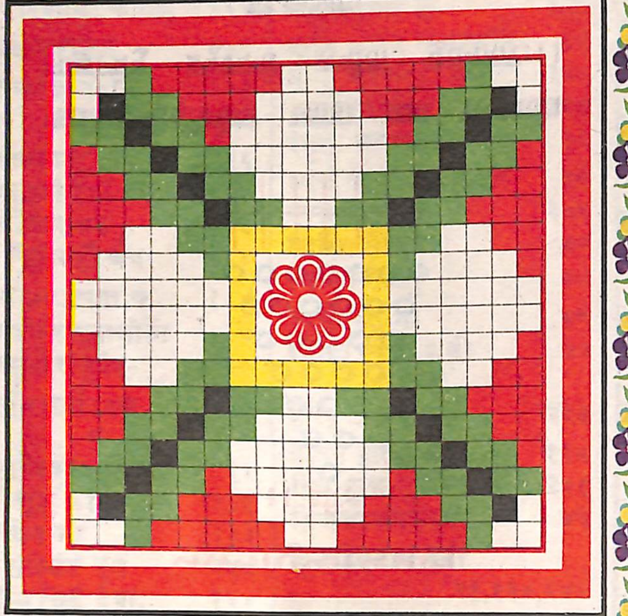


कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती।
माङ्गल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैता घृतमातरः।।

इति वसोर्धारा।

अथ सर्वतोभद्रचक्रम्

प्रागुदीच्यां गता रेखाः कुर्यादेकोनविंशतिम् ।
खण्डेदुस्त्रिपदैः कोणे शृङ्खला पञ्चभिः पदैः ।।१।।
एकादशपदा वल्ली भद्रं तु नवभिः पदैः ।
चतुर्विंशत्पदा वापी परिधिर्विंशतिः पदैः ।।२।।
मध्ये षोडशभिः कोष्ठैः पद्ममष्टदलं स्मृतम् ।
श्वेतेन्दुः शृङ्खला कृष्णावली नीलेन पूरयेत् ।।४।।
भद्रारुणा सिता वापी परिधिः पीतवर्णकः ।
बाह्यान्तर्दला श्वेत कर्णिका पीतवर्णिका ।।३।।
परिध्यावेष्टितं पद्मं बाह्ये सत्वं रजस्तमः ।
तन्मध्ये स्थापयेद्देवान् ब्रह्माद्यांश्च सुरेश्वरान् ।।५।।
भद्रेण पूजनाशक्तौ कुर्य्यमष्टदलं शुभम् ।
गोधूमान्नेन तत्कार्यं तण्डुलेनाऽथवा शुभम् ।।६।।



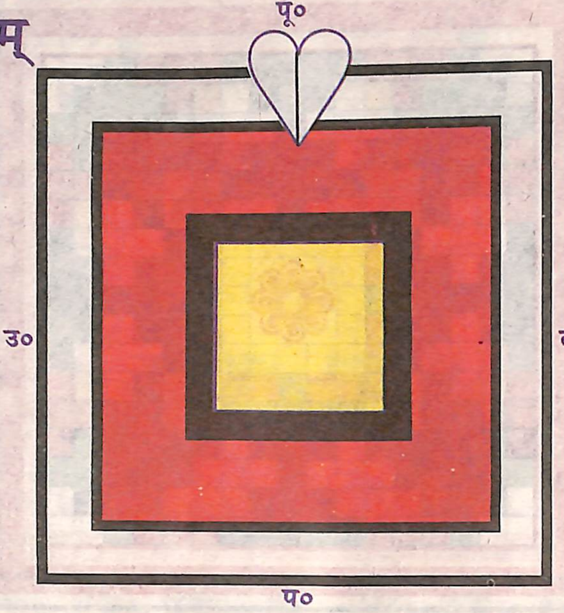
अथ चतुर्लिङ्गतोभद्रचक्रम्

रेखा त्वष्टादश प्रोक्ताश्चतुलिंङ्गसमुद्भवे।
कोणेन्दुस्त्रिपदः श्वेतस्त्रिपदैः कृष्णशृङ्खला ।।१।।
वल्ली सप्तपदा नीला भद्रं रक्तं चतुष्पदम् ।
भद्रपार्श्वे महारुद्रं कृष्णमष्टादशैः पदैः ।।२।।
शिवस्य पार्श्वतो वापीं कुर्यात् पञ्चपदां सिताम्।
पदमेकं तथा पीतं भद्रवाप्योस्तु मध्यतः ।।३।।
शिरसि शृङ्खलायाश्च कुर्यात् पीतं पदत्रयम् ।
लिङ्गानां स्कन्धतः कोष्ठा विंशती रक्तवर्णका ।।४।।
परिधिः पीतवर्णैस्तु पदैः षोडशभिः स्मृता।
पदैस्तु नवभिः पश्चाद् रक्तं पद्मं सकर्णिकम् ।।५।।



अथ कुण्डस्वरूपम्

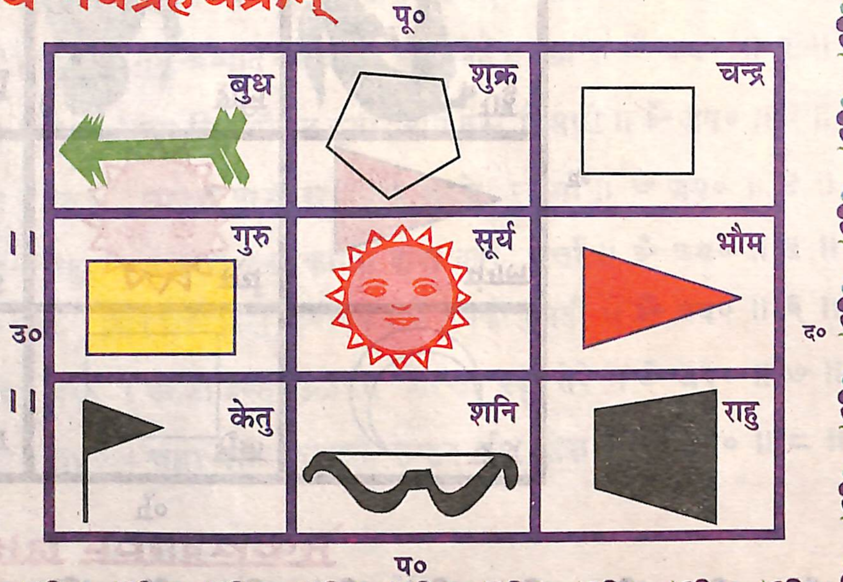
योनि १२ अँगुल ऊँची
१२ अँगुल लम्बी
८ अँगुल चौड़ी रक्तवर्ण
सफेद ऊपर की सीढ़ी
४ अँगुल चौड़ी
४ अँगुल ऊँची १
लाल उसके नीचे की
३ अँगुल चौड़ी
३ अँगुल ऊँची २
काली उसके नीचे की
२ अँगुल चौड़ी
२ अँगुल ऊँची ३



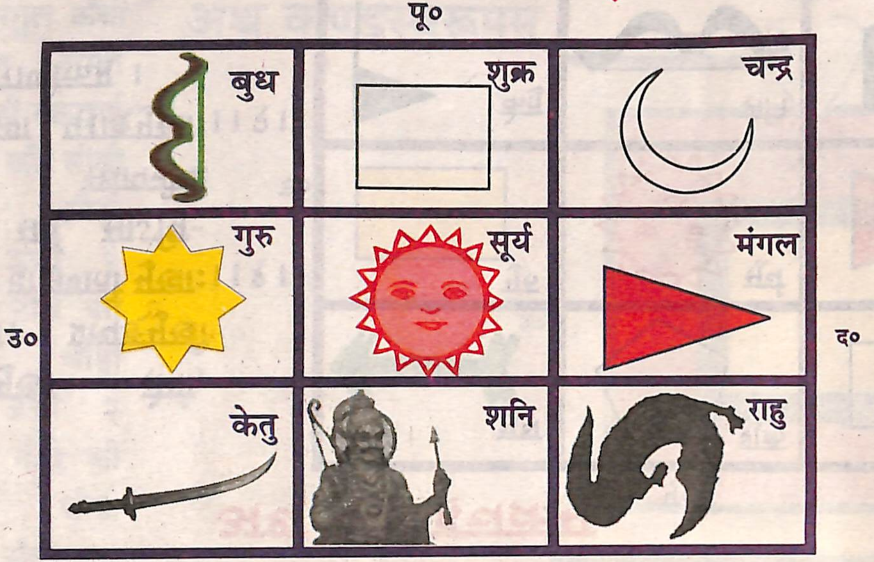
अथ नवग्रहचक्रम्

शुक्रार्कौ प्राङ्मुखौ ज्ञेयौ, गुरुसौम्यावुदङ्मुखौ। प्रत्यङ्मुखौ शनिः सोमः, शेषाः दक्षिणतो मुखाः।।१।।
आदित्याऽभिमुखाः सर्वे, साऽधि-प्रत्यधिदेवताः। स्थापनीया मुनिश्रेष्ठाः, नाऽन्तरेण पराङ्मुखाः।।२।।

—इति स्कन्दपुराणोक्तम् ।



अथ नवग्रहचक्रम्



भगवान् श्रीजगदीश्वरकी आरती

ॐ जय जगदीश हरे, प्रभु जय जगदीश हरे । भक्त-जनों के संकट क्षण में दूर करे ॥ ॐ जय० ॥ १ ॥

जो ध्यावै फल पावै, दुख बिनस मनका । प्रभु० । सुख-सम्पति घर आवै, कष्ट मिटै तनका ॥ ॐ जय० ॥ २ ॥

मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी । प्रभु० । तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी ॥ ॐ जय० ॥ ३ ॥

तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तरयामी । प्रभु० । पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ॥ ॐ जय० ॥ ४ ॥

तुम करुणा के सागर, तुम पालनकर्त्ता । प्रभु० । मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्त्ता ॥ ॐ जय० ॥ ५ ॥

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपती । प्रभु० । किस विधि मिलूँ दयामय ! मैं तुमको कुमती ॥ ॐ जय० ॥ ६ ॥

दीनबन्धु दुखहर्त्ता, तुम रक्षक मेरे । प्रभु० । करुणा हस्त उठाओ, शरण पड़ा तेरे ॥ ॐ जय० ॥ ७ ॥

विषय-विकार मिटाओ, पाप हरो देवा । प्रभु० । श्रद्धा-भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा ॥ ॐ जय० ॥ ८ ॥

—:※:—

३६४